UNIVERSAL LIBRARY

OU_180172

UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 83 K92K Acc No. G H 2802

Author : कृष्णाराव

Title :

ANIA UNIVERSITY LIBRARY

53 Accession No. GH 2802

92K

कृष्णलाल

किन्नर और रानी

ook should be returned on or before the date
below.

कित्तूर की रानी

कर्नाटकी वीरांगना के रोमांचकारी जीवन पर
आधारित ऐतिहासिक उपन्यास

●

अ० न० कृष्णराव

पुस्तक भेंट के निमित्त है

●

१९५६

सत्साहित्य प्रकाशन

प्रकाशक,
मार्तण्ड उपाध्याय,
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली।

पहली बार : १९५६

मूल्य
दो रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली।

प्रकाशकीय

प्रस्तुत उपन्यास कन्नड़ भाषा के रानी चेन्नम्मा नामक उपन्यास का हिन्दी-रूपान्तर है। इसका मूल कथानक ऐतिहासिक है। कित्तूर की रानी चेन्नम्मा इतिहास की एक दुर्लभ पात्र थी और इस वीरांगना के रोमांचकारी जीवन का वृत्तांत झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का स्मरण दिलाता है। उनका त्याग, बलिदान तथा उत्सर्ग बताता है कि स्वतंत्रता का मूल्य प्राणों से भी बढ़कर होता है और वही जीवन धन्य होता है, जो व्यापक हित में काम आता है।

इस उपन्यास की पृष्ठभूमि दक्षिण की है। इसमें वर्णित कुछ संदर्भों की जानकारी पाठकों के लिए लाभदायक होगी।

१. इस पुस्तक में जिस रानी चेन्नम्मा की कथा है, वह लिंगायत धर्म की अनुयायिनी थीं। यह धर्म कर्नाटक में प्रचलित है। उसके मानने वाले शिवलिंग के उपासक हैं। वे वीरशैव भी कहलाते हैं और चांदी की एक डिबिया में शिवलिंग बंद करके यज्ञोपवीत की तरह धागे में बांधकर धारण करते हैं। लिंगायत-धर्म के अनुसार सब लोग शिवलिंग धारण कर सकते हैं और उनमें जात-पांत का कोई भेद-भाव नहीं माना जाता; किन्तु भारत के बौद्ध, जैन, आर्यसमाजी, सिख आदि की भांति वे भी एक अलग जाति बन गये हैं। शैव धर्म में उनका प्रमुख स्थान है और काठमांडू (नैपाल) के प्रसिद्ध पशपतिनाथ के मंदिर का प्रमुख पुजारी कर्नाटक का लिंगायत ही होता है।

२. दक्षिण भारत में स्त्रियों के नाम के बाद 'अम्मा' जोड़ने का रिवाज है। वहां स्त्रियों और लड़कियों को भी आदरार्थ 'अम्मा' कहकर पुकारते हैं। उत्तर कर्नाटक में अम्मा का एक रूप 'अव्वा' भी पाया जाता है।

३. दक्षिण में 'साहब' या 'साब' मुसलमानों के नाम के आगे जोड़ते हैं, यहांतक कि वहां 'साब' शब्द मुसलमान-वाचक हो गया है। प्रस्तुत कथा में इसी प्रकार सैदनसाहब प्रयुक्त हुआ है।

४. दक्षिण प्रदेश में 'देसाई' अथवा 'देशमुख' देशाधिपति—राजा, शासक—के अर्थ में और उनकी उपाधि के रूप में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार कित्तूराधिपति देसाई कहलाते थे।

५. दक्षिण में व्यक्ति के नाम के आगे उपनाम जोड़ने की प्रथा है। ये उपनाम प्रायः उनके कुल के मूल ग्राम के नाम पर होते है।

हमारी उपन्यास-माला का यह तीसरा उपन्यास है। इस माला में हम भारत की सभी प्रमुख भाषाओं के चुने हुए एक-एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करेंगे। बंगला, गुजराती, मलयाली आदि भाषाओं के उपन्यासों के अनुवाद हो रहे हैं और वे शीघ्र ही पाठकों के हाथों में पहुंचेंगे।

हिन्दी में इस प्रकार का विधिवत् प्रयत्न शायद पहली बार हो रहा है। आशा है, भारतीय साहित्य की इन अमूल्य निधियों को पाठकों का स्नेह और आदर प्राप्त होगा और वे इनके प्रसार में योग देंगे।

इसका अनुवाद श्री सिद्धगोपालजी ने किया है।

—मंत्री

दो शब्द

कन्नड़ साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों का बड़ा अभाव है। स्व० खड्गनाथ तथा बी० वेंकटाचार्य ने इस दिशा में कुछ कार्य किया है। उसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। ज्यों-ज्यों ऐतिहासिक उपन्यासों का विकास होगा, उनकी कला के नये-नये पहलू सामने आवेंगे।

ऐतिहासिक उपन्यास और इतिहास में क्या संबंध है, इस विषय में मतभेद है। कुछ लोगों का मानना है कि उपन्यास की कथा-वस्तु का विकास इतिहास के घटना-क्रम का अविकल रूप से अनुसरण करते हुए होना चाहिए। इसके विरुद्ध कुछ लोगों का कहना है कि इतिहास शास्त्र है और उपन्यास कला-कृति है। शास्त्र पर कला का कुन्दन करते समय कलाकार को कुछ आज़ादी से चलने का अधिकार है। हां, उसको कथावस्तु के मूल ध्येय के विरुद्ध अपनी कल्पना का विकास नहीं करना चाहिए। इन दोनों मतों पर विद्वानों को विस्तार से चर्चा करनी चाहिए।

कित्तूर की रानी के विषय में जब मैं यह उपन्यास लिखने बैठा तो मेरे सामने अनेक कठिनाइयां आईं। भारत के इतिहास की प्राचीनता को दृष्टि में रखते हुए रानी चेन्नम्मा का काल बहुत पुराना नहीं है, फिर भी उनके विषय में बहुत कम ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। कित्तूर का पतन होने के बाद अंग्रेज राजमहलों को लूटकर वहां का रुपया-पैसा और जवाहरात इंग्लैण्ड ले गये और रानी चेन्नम्मा के संबंध के कागज-पत्र, सनदें, इतिहास-कथा आदि भी सब वहीं पहुंच गये। इनमें से कुछ कागज ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित हैं। अंग्रेजों के ले जाये हुए इन कागज-पत्रों में से कुछ, जिनमें अंग्रेजों की अनीति का उल्लेख था, नष्ट कर दिये गए। ब्रिटिश म्यूजियम में विद्यमान साहित्य भी उपयोग के लिए सुलभ नहीं है। बैलहोंगल नगर के एक व्यापारी श्री मूगि भावेप्पाजी के पास इस

संबंध के कुछ कागज-पत्र हैं । बैलहोंगल में स्थापित 'कित्तूर चेन्नम्मा रानी ऐतिहासिक मंडल' नामक संस्था ने कुछ कागज-पत्र, उस समय के अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र संग्रह करके रक्खे हैं। इस सबकी छान-बीन करने पर भी मेरी समस्याओं का समाधान नहीं हो सका । उदाहरणार्थ कित्तूर का किला अंग्रेजों के हाथ में आने के बाद जब रानी चेन्नम्मा गुप्तद्वार से भागने का प्रयत्न कर रही थी तो वह पकड़ी गई। उसके विषय में कुछ लोगों का कहना है कि उसने मलापछारी नदी में कूदकर प्राण त्याग दिये। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि वह बैलहोंगल में अंग्रेजों की कैद में रही और रायण्णा के बलिदान के बाद स्वर्गवासिनी हुई। इन मतों में तुलना करने पर मुझे जो अधिक संगत प्रतीत हुआ उसीका मैंने उल्लेख किया है। ऐतिहासिक घटनाओं का संबंध जोड़ने के लिए मैंने कुछ पात्रों की कल्पना भी की है। चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा, मल्लसर्ज, शिवलिंग-रुद्रसर्ज, रुद्रव्वा, वीरव्वा, शिवलिंगव्वा, महान्तव्वा, बालासाहब, मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय, थैकरे, मनरो, चैपलिन, स्टीवेंसन, इलियट, जेम्सन स्पिलर, पामर, मैकलियड, वाकर, ट्रू मैन, शिवबसप्पा, रायण्णा, बालण्णा, बिच्चुगत्ती, गजवीर, आदि ऐतिहासिक. पात्र हैं। उनके साथ-ही-साथ चिदम्बर दीक्षित, सदाशिव शास्त्री, नागरकट्टी, शिवकुमार, कैप्टन हैरिस, तुलजम्मा, पद्मावती, कलावती, बालप्पा पण्डित इत्यादि पात्रों की मैंने अपनी कल्पना से सृष्टि की है। इतिहास की घटनाओं का विस्तार करके उनके ही आधार पर मैंने शेष बातों को स्पष्ट किया है। अतः यह उपन्यास एक ओर इतिहास की घटना को लेकर चला है, तो दूसरी ओर कला की दृष्टि भी गौण नहीं हो पाई है।

कित्तूर की आजादी की लड़ाई किसी जाति अथवा सम्प्रदाय विशेष की लड़ाई नहीं थी। सम्पूर्ण कित्तूर ने संगठित होकर उसमें भाग लिया था। जाति और धर्म की भावनाओं से परे होकर, केवल राष्ट्रकल्याण को लक्ष्य बनाकर मैंने कित्तूर के स्वातंत्र्य-संग्राम के रूप, लक्षण, भावना-वेश और त्यान-वृत्ति को चित्रित किया है। भारत के स्वतंत्र होने के

बाद भारतीयों की राष्ट्रीयता विकसित होकर प्रौढ़ता को प्राप्त होने से पहले ही अनेक विदेशी राजनैतिक विचार-धाराएं भारत के जन-मानस पर अपना प्रभाव डाल रही है। इस संक्रांति-काल में भारतवासियों का मन राष्ट्र तथा उसके कल्याण की ओर आकर्षित करने के लिए कित्तूर की रानी के अमर जीवनादर्श से बढ़कर और क्या वस्तु हो सकती है !

तीन वर्ष हुए मेरा 'कित्तूर की रानी चेन्नम्मा' नामक रेडियो नाटक हिन्दी में अनुवादित होकर आकाशवाणी से प्रसारित हुआ था। वही नाटक मूल कन्नड़ में भी प्रसारित हुआ। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि कित्तूर की उस वीरांगना का दिव्य चरित विस्तार से लिखने की मेरी आकांक्षा तीन वर्ष बाद अब पूर्ण हुई। यदि यह कृति पाठकों का ध्यान भारत के प्राचीन गौरव की ओर थोड़ा भी आकर्षित कर सकी तो मै अपने प्रयत्न को सफल समझूंगा।

'अन्नपूर्णा'
विश्वेश्वरपुर,
बंगलौर

—अ० न० कृष्णराव

कित्तूर की रानी

: १ :

एक कन्धे पर झोली और दूसरे पर वीणा रक्खे चिलचिलाती धूप में एक ब्राह्मण चला जा रहा था। धूप में पैदल चलने से वह थक गया था। उसका चेहरा मरझा गया था। सिर से पैरतक उसका सारा शरीर धूल से भरा था। वह भूत-सा दिखाई देता था। उसकी उम्र साठ से ऊपर मालूम होती थी। सिर के बाल प्रायः उड़ गये थे। सिर्फ बीच में एक चोटी थी।

ब्राह्मण की पसलियां स्पष्ट दिखाई दे रही थीं, फिर भी उसके शरीर में तांबे की सी चमक थी। उसकी धोती, चादर और यज्ञोपवीत सब पर धूल की परत जम गई थी।

ब्राह्मण ग्राम से आकर पीपल के वृक्ष के नीचे बने चबूतरे के निकट पहुंचा और अपने कन्धों से भार उतारकर सुस्ताने लगा। चबूतरे पर चार-पांच निठल्ले लोग बैठे थे। उनमें से एक ने कुतूहल-वश उससे पूछा, "आप कहांके रहने वाले हैं?"

"श्रीरंगपट्टण का।"

"टीपू सुलतान की राजधानी श्रीरंगपट्टण के?"

"जी हां, वहींका।"

"अब कहां जा रहे हैं?"

"येल्लव्वा की पहाड़ी।"

"क्या इतनी दूर पैदल ही जायंगे?"

"हां, पैदल ही आया हूं, पैदल ही जाऊंगा।"

"कहांसे आना हुआ?"

"कोल्हापुर से।"

प्रश्नकर्ता के मुख पर विस्मय की रेखा उभर आई। वह चबूतरे से उतरकर कहीं चला गया। उसके साथी से ब्राह्मण ने पूछा, "पास में कोई तालाब है क्या, भाई? मुझे स्नान करना है।"

"उधर देखिये। वह जो पेड़ों की कतार दिखाई देती है, उसके पीछे एक पोखरा है।...भोजन के लिए क्या करेंगे?"

"मेरी झोली में चिउड़ा और गुड़ है। पूजा-पाठ करने के लिए कोई साफ-सुथरी जगह चाहिए, भैया।"

"पोखर के ऊपर की ओर पुराना टूटा मठ है। उसके दालान में आप पूजा कर सकते हैं।"

"जरा तालाब दिखा दोगे? बड़ा पुण्य होगा, भैया।"

"आइये।"

यह कहकर वह ब्राह्मण को अपने साथ ले गया और तालाब तथा मठ दिखला दिये। ब्राह्मण पोखरे का स्वच्छ जल देखकर बहुत खुश हुआ और बोला, "तुमने बहुत कष्ट उठाया। तुम्हारा नाम?"

"मुझ बालण्णा कहते हैं। मैं दूध और केला लाकर दूं तो आप ले लेंगे न?"

"ले तो लूंगा, पर तुमको बेकार क्यों हैरान किया जाय?"

"आप भोजन करना चाहें तो यहां ब्राह्मणों के घर हैं। मैं उनके यहां सब ठीक कर दूंगा।"

"नहीं भैया, मुझे भोजन नहीं चाहिए। तुम बड़े दयालु हो। क्षमा करो।

ब्राह्मण ने झोली और वीणा उतारकर कंधे के कपड़े से उनकी तथा अपने शरीर की धूल झाड़ी। फिर झोली से लोटा निकालकर तालाब से पानी लाया। जमीन पर पानी छिड़ककर उस शुद्ध की हुई जगह पर पूजा का सामान रखकर बोला, "मैं नहाकर आता हूं। तबतक तुम जरा इन चीजों पर निगाह रखना।"

"क्यों, महाराज ?"

"मेरी इन चीजों को कोई..."

"नहीं, यहां ऐसा कोई डर नहीं है, महाराज। आप हीरे भी राह पर छोड़कर चले जायं तो भी कोई नहीं छुएगा।"

ब्राह्मण को उसके उत्तर से तसल्ली हुई। फिर धुले हुए वस्त्र हाथ में लेकर वह पोखरे की ओर बढ गया। बालण्णा ब्राह्मण के सामान की रखवाली करता रहा।

दस मिनट बीते होंगे कि बालण्णा ने देखा कि दो आदमी उसी ओर चले आ रहे हैं। उसने नीचे उतरकर, सूरज की चकाचौंध से बचने के लिए अपनी आंखों के आगे हाथ करके देखा तो वे रायण्णा और दीक्षितजी थे। बालण्णा गम्भीरता से खड़ा हो गया। दीक्षितजी ने बालण्णा के पास जाकर पूछा, "आनगांव से आये हुए ब्राह्मण कहां हैं ?"

बालण्णा ने बड़े आदर से कहा, "स्नान के लिए गए हैं।"

दीक्षितजी ने रायण्णा से कहा, "रायण्णा, उनको यहीं बुला लाओ।" इतना कहकर वे धूप में ही खड़े हो गये।

गीली धोती कंधे पर डाले, हाथ में लोटा लिये ब्राह्मण रायण्णा के साथ आया और लम्बी बांहों वाले दीक्षितजी को ध्यान से देखने लगा। दीक्षितजी ने ब्राह्मण के चरणों में झुककर कहा, "मेरा नाम चिदम्बर दीक्षित है। रायण्णा ने मुझसे कहा कि आप आये है। आप कृपा करके हमारे घर पधारिये और प्रसाद स्वीकार कीजिये।"

आश्चर्य-चकित होकर ब्राह्मण बोला, "आपकी मुझसे जान-पहचान नहीं है; वैसे भी अब दोपहर हो गया है। इस समय आपके घर की स्त्रियों को भोजन पकाने के लिए कष्ट देना ठीक नहीं। मैं अपने साथ चिउड़ा और गुड़ लाया हूं। पूजा करके यहीं प्रसाद पा लूंगा।"

यह सुनकर दीक्षित के दिल को चोट लगी। मनोव्यथा के चिह्न उनके मुखपर दिखाई देने लगे। माथे पर पसीना आगया, कुंकुम भीग गया। वह हाथ जोड़कर बोले, "महाराज, मैं पूजा करके अपनी ड्योढ़ी पर

मेहमानों की राह देखता खड़ा था। आज मेरे दुर्भाग्य से कोई भी मेहमान इस ओर से नहीं निकला। मैं यही सोच रहा था कि आज देवी क्यों मुझसे नाराज है? तभी हमारा रायण्णा दौड़ा आया और आपके आने का समाचार सुनाया। मैंने समझ लिया कि स्वयं देवी ही आपका रूप धर कर यहां आई है, और मैं इधर चला आया। मुझे निराश मत कीजिये। आप नहीं पधारेंगे तो मैं भोजन नही करूंगा। जिस दिन अतिथि नहीं होते, उस दिन मै भोजन छूता भी नहीं।"

ब्राह्मण कुछ देर सोचकर बोला, "दीक्षितजी, मुझे आश्चर्य हो रहा है कि कलिकाल के आ जाने पर भी आज धर्मनिष्ठावाले लोग मौजूद है! मैं अवश्य चलूंगा, महाराज। जब देवी के भक्त आकर बुलायें तो इन्कार कैसे किया जा सकता है?"

ब्राह्मण ने झोली उठाई। रायण्णा वीणा उठाने के लिए आगे बढ़ा तो ब्राह्मण बोला, "भैया, ज़रा होशियारी से उठाना। यही मेरा सर्वस्व है, यही मेरा भाग्य है।"

ब्राह्मण दीक्षित के साथ चला। उनके पीछे वीणा उठाये हुए रायण्णा चला और उसके साथ बालण्णा।

दीक्षितजी बोले, "आप कोल्हापुर से आ रहे हैं?"

"जी हां।"

"पैदल ही यात्रा कर रहे हैं?"

"जी हां। सवारी में बैठकर कहीं तीर्थयात्रा होती है? मैंने आपको अपना परिचय नहीं दिया। मेरा नाम सदाशिव शास्त्री है। मैं श्रीरंगपट्टण का रहनेवाला हूं।"

बातचीत में घर आगया। घर देखकर सदाशिव शास्त्री की सांस-सी रुक गई। विशाल आंगन और उसके तीन ओर कमरों की पंक्तियां। जगह-जगह कांच के ग्लोब। सारी हवेली पवित्रता, सात्विकता और वैभव से दमक रही थी।

रायण्णा ने वीणा दालान में रख दी और शास्त्रीजी ने भी अपना झोला

वहीं रख दिया। दीक्षितजी अन्दर गए और लौटकर बोले "महाराज, स्नान के लिए गरम पानी तैयार है।"

'गरम पानी की ज़रूरत नहीं। ठंडे पानी से काम चल जायगा।"

"अन्दर आइये।"

शास्त्रीजी अपने कपड़े हाथों में उठाकर बोले, "मेरे स्नान और पूजा में कुछ समय लगता है। आप मेरे लिए न ठहरें और भोजन कर लें तो मुझे बड़ा आनन्द होगा। मैं अच्छी तरह से नहाकर पूजा करके भोजन करूंगा।"

दीक्षितजी ने विनम्रता से कहा, "ऐसा भी कहीं हो सकता है! आप मेरे कारण जल्दी न करें। भगवान की पूजा से बढ़कर और क्या हो सकता है? आप आनन्द से पूजा कीजिये। आपकी पूजा का फल हमारे कित्तूर के अधीश्वर को भी मिले।"

शास्त्रीजी स्नान समाप्त करके आये तो दीक्षितजी के पूजा-घर में पूजा के लिए सब सामान तैयार पाया। शास्त्रीजी वीणा के ऊपर से खोली उतारकर उसे लेकर पूजा-घर में गए। चांदी के सिंहासन पर महिषासुर-मर्दिनी देवी विराजमान थी। तरह-तरह के फूल सजे थे। उनके बीच देवी मुस्करा रही थी। लाल-लाल फूलों से ऐसा प्रतीत होता था, मानो देवी के चारों ओर लाल कान्ति फैली हुई हो। छोटे-छोटे दीपकों के प्रकाश में देवी के रत्नजटित आभूषण चमक रहे थे। देवी के सामने आरती के दीपक पंक्तिबद्ध प्रकाशमान हो रहे थे।

शास्त्रीजी ने वीणा देवी के सामने रखकर साष्टांग प्रणाम किया। अपने लिए रक्खे हुए आसन पर बैठकर आचमन किया, गायत्री मंत्र का जाप किया, फिर हाथ में वीणा उठाई।

दीक्षितजी पूजा-घर के एक ओर हाथ जोड़े खड़े थे। उनसे कुछ दूर पर द्वार के पास दीक्षितजी की पत्नी तुलजाबाई भक्ति-पूर्वक खड़ी थी।

शास्त्रीजी ने वीणा के सुर ठीक करके, उसे तीन बार आंखों से लगाया और बजना आरम्भ किया। मध्याह्न-काल के अनुकूल मध्यमावती

राग में दानव-संहारणी, धर्म-संवर्द्धिनी देवी का भजन गाया।

भजन सुनकर दीक्षितजी के नेत्रों से आनन्द के आंसुओं की धारा बहने लगी। ध्यान में मग्न होकर वह चित्रलिखित से खड़े थे।

भजन-कीर्तन समाप्त होने पर शास्त्रीजी ने वीणा के ऊपर से हाथ हटाकर एक बार दीक्षितजी की ओर देखा तो उनको बाह्य संसार के ज्ञान से शून्य, ध्यानावस्थित पाया। तब उन्होंने हंसानन्दी राग में 'पाहि जगज्जननि' भजन गाया।

भजन पूरा होने में काफी देर लग गई। तब शास्त्रीजी ने दीक्षितजी की ओर मुंह करके पूछा, "मंगल आरती गाऊं ?"

यह सुनकर दीक्षितजी होश में आये, बोले—"जैसी आपकी इच्छा।"

शास्त्रीजी ने मंगल-आरती समाप्त करके वीणा को आंखों से लगाकर नीचे रख दिया। दीक्षितजी और उनकी पत्नी ने शास्त्रीजी को साष्टांग नमस्कार करके कहा, "आप धन्य हैं। आपने देवी को हमारी आंखों के सामने साक्षात् लाकर खड़ा कर दिया।"

शास्त्रीजी झट से उठकर दीक्षितजी और तुलजाबाई को प्रणाम करके विनीत स्वर में बोले, "आप दम्पति शिव-पार्वती के समान हैं। मुझे आशीर्वाद दीजिए। मुझमें आपसे नमस्कार कराने की पात्रता कहां।"

तुलजाबाई वहां से हट गईं। उन्होंने रसोई में चांदी की थालियों में भोजन परोसा। दीक्षितजी और शास्त्रीजी भोजन करने बैठे। तुलजाबाई ने गुझिया खीर, पूरणपोळी आदि व्यंजन शास्त्रीजी के सामने अच्छी तरह से परोसकर उनपर खूब घी डाला। दीक्षितजी के भोजन की मात्रा देखकर शास्त्रीजी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने तो युवकों को भी मात कर दिया था। शास्त्रीजी ने पूछा,

"आज कौन-सा पर्व है, दीक्षितजी ?"

"मैं ललिता सहस्रनाम का पारायण कर रहा हूं। हर शुक्रवार को मीठा भोजन बनाकर देवी को नैवेद्य अर्पण किया करता हूं। आज मेरा पारायण सफल हो गया।"

घर में बाल-गोपालों की चहल-पहल न देखकर शास्त्रीजी ने धीरे-से पूछा—"दीक्षितजी, आपके कितने बच्चे हैं ?"

"एक लड़की है। उसका विवाह धारवाड़ में हुआ है। मेरे जामाता वहांके संस्कृत विद्यालय में पढ़ाते हैं।"

अन्त में तुलजाबाई ने दूध और दही परोसा। हाथ धोकर, कुल्ला करके दोनों दालान में आकर बैठे तो तुलजाबाई ने पान लाकर दिये। शास्त्रीजी ने पान नहीं खाया, एक लौंग उठा ली। दीक्षितजी ने कपूर, बादाम, लौंग, इलायची और सुपारी डालकर बीड़ा बनाया और उसे चबाते हुए बोले, "शास्त्रीजी, आप जैसे ऊंचे विद्वान् राजसभा में ही शोभा देते हैं। आपको कन्धे पर वीणा रखकर गांव-गांव घूमते देखकर मुझे अचम्भा होता है।"

ये शब्द सुनकर शास्त्रीजी को पिछले दिनों की याद आ गई। उनका मुख पीला पड़ गया। वे गद्गद कण्ठ से बोले, "आपने मुझे मेरी राम-कहानी याद दिला दी।"

"रामकहानी !"

"जी हां, वह बहुत बड़ी है।" इतना कहकर शास्त्रीजी चुप हो गए।

उन्हें चुप होते देखकर दीक्षितजी ने कहा, "आपके मन को दुःख न हो तो वह कहानी सुना दीजिये।"

शास्त्रीजी ने सुनाना प्रारम्भ किया—"हमारा घराना संगीत के लिए प्रसिद्ध है। मैसूर का राज-दरबार सैकड़ों वर्षों से हमारी कला का आदर करता आ रहा है। बड़े सुलतान हैदरअली के समय में भी मुझे दरबार की विद्वन्मंडली में स्थान प्राप्त था। सन् १७८२ में बड़े सुलतान का स्वर्गवास हो जाने पर उनके पुत्र टीपू सुलतान मैसूर की गद्दी पर बैठे। टीपू सुलतान मुझे अपने प्राणों की तरह प्यार करते थे। युद्ध-भूमि में भी मुझे अपने साथ ले जाते थे। भगवान् ही जानता है कि वह पुण्यात्मा आराम किस समय करता था। कभी-कभी रात को मेरे कमरे में आकर

कहते, शास्त्रीजी, जरा सहाना राग तो गाकर सुनाइए।' जो-जो राग उन्हें पसन्द थे, उन्हें सुनते। सुलतान के अंग्रेजों से युद्ध होने की बात आप जानते ही हैं। उन तीनों लड़ाइयों में मैं उनके साथ था। सुलतान हमेशा कहा करते, 'हमारे मुल्क पर हममें से कोई भी राज करे तो परवाह नहीं लेकिन इन लल-मुंहों को पास नहीं फटकने देना चाहिए।' मैंने एक दिन कहा, 'ललमुंहों को पास नहीं फटकने देना चाहिए, यह कहनेवाले आप ही ने तो फ्रांसीसी लोगों से मदद ली थी ?' इसके उत्तर में उन्होंने कहा, 'कांटे से ही कांटा निकाला जाता है। अंग्रेजों का जोर खत्म होने के बाद में फ्रांसीसियों को भी धता बताऊंगा।' मैसूर का यह दुर्भाग्य था कि सन् १७९९ में चौथे मैसूर-युद्ध में मैसूर की सेना हार गई और टीपू सुलतान ने रणक्षेत्र में वीरगति पाई। उस समय अंग्रेजों ने अनगिनत अत्याचार किये। राजमहल की गौओं को वे मारकर खा गये, घर-घर में घुसकर लूट मचा दी। राज-महल को भूमिसात करके जिस मसजिद में सुलतान इबादत करते थे, उसको अपवित्र कर दिया। सुलतान के सब सहायकों को बेरहमी से मार दिया। श्रीरंगपट्टण की गलियों में रक्त की नदियां बहने लगी। यह सब भयानक दृश्य देखकर मुझको जीवन से विरक्ति हो गई। त्रस्त नगरी को देखकर मेरा हृदय फटा जाता था। मैं उसे छोड़कर जाने की सोच ही रहा था कि वहां मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर का आदेश आया कि 'नगर छोड़कर मत जाना। राजदरबार में वीणाचार्य बख्शी बनकर रहो। मैसूर दरबार का नाम दूर-दूर तक फैलाओ।' मैंने बारह बरस तक महाराज की सेवा की थी; पर राजमहल का वातावरण दिन-पर-दिन बिगड़ता जा रहा था। महाराज को स्वार्थियों ने घेर रखा था। मैंने इन बातों की ओर महाराज का ध्यान खींचना चाहा, किन्तु उनके हित के लिए कही गई बातें मेरे विनाश का कारण बन गईं। अनेक बार राजमहल में मेरे अपमान के अवसर आये। इसलिए मेरा मन राज-दरबार से खट्टा हो गया और मैं सबकुछ छोड़-छाड़कर कंधे पर झोली लेकर देशाटन के लिए चल पड़ा।

ाशी, केदार, मथुरा, नासिक, आदि तीर्थों का दर्शन करके कोल्हापुर ाया। वहां येल्लव्वा क्षेत्र की महिमा सुनकर येल्लवा देवी के दर्शन के ए इधर आ गया। आपसे परिचय पाकर बड़ा आनन्द हुआ।

दीक्षितजी ने पूछा, "शास्त्रीजी, आपने अपने घरबार के बारे में छ नहीं बतलाया!"

शास्त्रीजी कुछ देर मौन रहे। फिर बोले, "मैसूर की तीसरी लड़ाई समय मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई। मेरा इकलौता लड़का था। वह स्कृत का अच्छा पंडित था। सुलतान ने उसको राज-दरबार में धर्माधकारी का पद दिया था। चौथे मैसूर-युद्ध में वह सुलतान के साथ ड़ाई के मैदान में गया, सो वहांसे वापस नहीं आया। सुलतान की ओर ाती हुई गोली के सामने उसने अपनी छाती तान दी और अपने प्राणों ो होम दिया। दीक्षितजी, मेरे वीर पुत्र ने अपने देश के लिए अपने ाणों की बलि दे दी। इसलिए मैं उसके लिए आंसू नहीं बहाता। मुझे ःख इस बात का है कि भगवान ने ऐसे दस पुत्र मुझे नहीं दिये।.... कुछ रुक कर) आपकी अनुमति हो तो शाम को यहांसे चला जाऊं?"

दीक्षितजी ने स्नेह-भाव से कहा, "शास्त्रीजी, आप मेरे अतिथि हैं। बतक मैं बिदा न करूं, आप इस बैलहोंगल[1] से नहीं जा सकते।"

शास्त्रीजी ने मुस्कराकर पूछा, "मुझे यहां कितने दिन रहना ोगा?"

दीक्षितजी ने उत्तर दिया, "दो दिन विश्राम कीजिए। मुझे आपसे ुछ बातें करनी हैं। उन्हें सुनकर आप जैसा चाहें, कीजिए। और हां, ापको हमारा मारुति-मंदिर भी तो देखना है।"

"अवश्य देखूंगा। जिसमें आपको आनन्द मिले, वही करूंगा।" शास्त्रीजी वहीं ठहर गये।

---

१. गांव का नाम

: २ :

सदाशिव शास्त्री को देरतक सोने की आदत नहीं थी। हालांकि उन्होंने राजमहल में आराम का जीवन बिताया था, फिर भी वह सबेरे चार बजे उठकर स्नान करके श्रीमद्भगवद्गीता और रामायण का पाठ किया करते थे। अगले दिन जब दीक्षितजी उठकर आए तो शास्त्री-जी नित्यकर्म से निवृत्त होकर पाठ कर रहे थे। दीक्षितजी ने विस्मय से कहा, "अरे, आप तो मुझसे पहले ही उठ गए! रात को नींद तो अच्छी तरह से आई न?"

"हां, दीक्षितजी, खूब सोया।"

"चलिए, मारुति मंदिर चलें।"

"चलिए।"

दीक्षितजी शास्त्रीजी को गांव से थोड़ी दूर पर बने मारुति-मंदिर में ले गए। मंदिर के द्वार पर रायण्णा और बालण्णा ने उन दोनों का स्वागत किया। मंदिर के तीन हाथ ऊंचे द्वार की ओर संकेत करते हुए दीक्षितजी बोले, "ज़रा झुक कर चलिए, शास्त्रीजी, कहीं सिर न टकरा जाय।"

शास्त्री ने अन्दर जाकर चारों ओर देखा। मारुति-मन्दिर क्या था, वह तो एक अखाड़ा था। बोले, "क्या यही है, आपका मारुति-मन्दिर?"

"जी हां। नागरकट्टी इस मन्दिर का पुजारी है और रायण्णा, बालण्णा, गजवीर तथा चन्नबसप्पा भक्त हैं।

नागरकट्टी ने आगे बढ़कर धरती छूकर दीक्षितजी को प्रणाम किया।

"शास्त्रीजी, नागरकट्टी बड़ा पहलवान है। एक बार इसने पंजाब के सब पहलवानों को बात-की-बात में पछाड़ डाला था। अब उम्र ढल जाने पर उसने अखाड़े में उतरना छोड़ दिया है। अपने चेलों को तैयार करता है।"

तभी नागरकट्टी ने दीक्षितजी से पूछा, "बालण्णा और गजवीर की

जोड़ी अखाड़े में भेजूं, या आप अखाड़े में उतरेंगे ?"

दीक्षितजी ने कहा, "नागरकट्टी, पहले अपने शिष्यों की बानगी शास्त्रीजी को दिखाओ।"

बालण्णा और गजवीर दोनों एक ही उम्र के थे। यों देखने में गजवीर का शरीर बाहर से कुछ स्थूल-सा मालूम पड़ता था, किन्तु उसमें असाधारण कस था। बालण्णा का शरीर किसी शिल्पी की अच्छी तरह घड़ी हुई मूर्ति के समान था। अनायास देखने पर यह नहीं जान पड़ता था कि उस सौम्य शरीर में भीम का-सा बल है।

बालण्णा और गजवीर अखाड़े में उतरकर सिंह-किशोरों की तरह लड़ने लगे। दांव-पेंच चलने लगे। गजवीर की बन्दर-मुष्टि ऐसी मालूम पड़ती थी कि उसमें से बालण्णा किसी तरह भी नहीं निकल सकेगा, पर बालण्णा उसमें से फिसलकर गिलहरी की तरह निकल जाता था। शास्त्रीजी बुद्धि और बल की इस अद्‌भुत लड़ाई को निर्निमेष नेत्रों से देखते रहे और आश्चर्य-चकित हो गये।

दोनों पहलवानों के शरीर से पसीना चूने लगा। जब वे दोनों इस तरह नागपाश में उलझे हुए थे तो उनको अलग करके नागरकट्टी ने पूछा, "आज्ञा हो तो अब रायण्णा और चन्नबसप्पा की जोड़ी छोड़ूं।"

दीक्षितजी ने कहा, "नहीं।" और अपनी धोती उतारकर यज्ञोपवीत कमर में लपेटा और स्वयं अखाड़े में कूद पड़े।

नागरकट्टी ने शरीर पर मिट्टी मलकर दीक्षितजी की चरणधूलि सिर पर धारण करके पुकारा, "जय गुरुदेव।"

दीक्षितजी ने भी जांघों पर हाथ मारकर सिंहनाद किया, "जय हनुमान।"

शास्त्रीजी को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। वह देख रहे थे कि उच्च ब्राह्मण-कुल-सम्भूत दीक्षितजी इस ढलती उम्र में मल्ल-युद्ध जैसी राजसी क्रीड़ा में इतनी रुचि कैसे दिखला रहे हैं। उनके लिए यह सब पहेली-जैसा था।

नागरकट्टी और दीक्षितजी मस्त हाथियों की तरह जूझ रहे थे। एक बार नागरकट्टी को नीचे पटककर दीक्षितजी उसकी पीठ पर चढ़ बैठे। फिर जरा देर बाद नागरकट्टी ने उसी तरह दीक्षितजी को नीचे पटक दिया और स्वयं उनकी पीठ पर बैठ गया। दीक्षितजी ने उसको धूलि की तरह झाड़ कर ऊपर उठकर भुजाएं फटकारी और ताल ठोंकी।

घंटे की गूंज के समान दीक्षितजी के वीर घोष से लोगों की छाती कांप उठी। किन्तु नागरकट्टी भी कितनी ही लड़ाइयों में शौर्य दिखला चुका था, वह प्रतिशोध करके दीक्षितजी के ऊपर चढ़ बैठा।

बालण्णा, गजवीर, रायण्णा और चन्नबसप्पा चारों ओर खड़े होकर दोनों को बढ़ावा दे रहे थे। शास्त्रीजी को भी जोश आ गया और वह भी उनके स्वर-में-स्वर मिलाने लगे।

दीक्षितजी आंधी की तरह नागरकट्टी की जांघों के बीच घुस गए और उसको उठाकर पीठ के बल नीचे पटक दिया।

बालण्णा, गजवीर, चन्नबसप्पा और रायण्णा ने हर्षनाद किया, "जय गुरुदेव, जय गुरुदेव।"

कुश्ती समाप्त हुई। दीक्षितजी ने यज्ञोपवीत ठीक करके धोती पहनकर कहा, "चन्नवसप्पा, शाम को हवेली आ जाना। तुम्हारे हाथ की सफ़ाई जरा हमारे शास्त्रीजी भी तो देखें।"

"जो आज्ञा, महाराज!"

जब दीक्षितजी चलने को हुए तो नागरकट्टी और उसके शिष्यों ने झुककर उनके चरणों में प्रणाम किया।

घर लौटने पर शास्त्रीजी गूंगे के समान मौन बैठे रहे। दीक्षितजी ने उनकी ओर एकटक निहारते हुए कहा, "शास्त्रीजी, क्या मेरी चाल-ढाल से आपको आश्चर्य हो रहा है?"

"जी हां।"

इसकी कहानी रात को सुनाऊँगा। अब आपको स्नान करके पूजा

करनी है न ?"

शास्त्रीजी कुछ उत्तर न देकर स्नान करने चल दिये।

शाम को दीक्षितजी के आंगन में बड़ी भीड़ इकट्ठी थी। संगोल्ली गांव का पटेल भरभण्णा गांव के दो विरोधी दलों को समझौते के लिए बुलाकर लाया था। एक पक्षवालों के पुआल के ढेर में कुछ बदमाशों ने आग लगा दी थी। यह सोचकर कि उनके जन्मजात बैरी दूसरे पक्षवालों ने आग लगाई है, वे उनके पुआल के ेर में आग लगाने की तैयारी में थे। पटेल भरभण्णा को आशंका थी कि दोनों पक्षों के कलह में सारा गांव ही भस्म हो जायगा। सो दोनों पक्षवालों को मनाकर दीक्षितजी के पास समझौते के लिए वह ले आया था।

दीक्षितजी की बात टालने का साहस किसीमें नहीं था। उन्होंने दोनों पक्षवालों को समझाकर कहा, "तुम लोगों के लिए अपनी मर्दानगी दिखलाने का मौका आ रहा है। उसके लिए तैयार रहो। घर की कलह से सारे गांव को बरबाद करके राज्य को ही मिट्टी में मत मिलाओ।"

दोनों पक्षों के मुखियों ने दीक्षितजी के चरण छूकर शपथ खाई और स्नेह-सौहार्द से रहने का आश्वासन दिया।

सभा-विसर्जित होने के बाद दीक्षितजी ने रायण्णा से फाटक बन्द करने को कहा। रायण्णा के फाटक बन्द करने के बाद ीक्षितजी चन्नबसप्पा से बोले, "बिच्चुगत्ती[1], तैयार हो न ?"

चन्नबसप्पा ने उत्तर दिया. "जी हां, तैयार हूं, महाराज।"

रायण्णा और बालण्णा ने भीतर से चमकती हुई कुछ तलवारें लाकर दीक्षितजी के सामने रख दीं। दीक्षितजी ने चन्नबसप्पा से कहा, "पहले तुम चुन लो।"

चन्नबसप्पा ने एक तलवार चुनकर अपने सिर के बालों को उससे काट कर उसकी धार को परखा। दीक्षितजी ने भी काछनी बांधी और हाथ में

---

[1] 'बिच्चुगत्ती' का अर्थ है नंगी तलवार। चन्नबसप्पा का यह उपनाम था।

एक तलवार उठाकर आंगन में उतर आए।

घर के भीतरी द्वार में खड़ी होकर तुलजाबाई (जो तुलजम्मा भी कहलाती थीं) देख रही थी।

चन्नबसप्पा तलवार आड़ी पकड़कर दीक्षितजी को प्रणाम करके तुलजम्मा के पास गया और उनको भी प्रणाम किया।

दीक्षित और चन्नबसप्पा की तलवारें खनखनाहट के साथ टकराईं। कभी दीक्षित का हाथ ऊपर रहता, कभी चन्नवप्पा का। चन्नबसप्पा की देह धनुष की तरह झुक जाती थी। खड़े होकर, बैठकर, दाईं ओर को झुककर, बाईं ओर को मुड़कर, वह अपनी कला दिखा रहा था। दीक्षितजी की समझ में नहीं आता था कि वह कौन-सा पैंतरा बदलेगा। जब वह बाईं एड़ी के बल बैठकर लड़ रहा था तो भरभण्णा पास बैठे गजवीर से बोला, "तुम्हारा साथी आज गुरुजी को हरा देगा।"

गुरुभक्त गजवीर को भरभण्णा की बात सहन नहीं हुई। वह बोला, "भरमदादा, गुरुजी को हराना कोई हँसी-खेल नहीं है। उसके लिए बिच्चुगत्ती को अभी बहुत दिनों हाथ घिसने होंगे।"

"अच्छा, देखना, गजवीर। यह पेंच बिच्चुगत्ती का अपना है। इसका भेद अभी गुरुजी की समझ में नहीं आया।"

भरभण्णा जब यह कह ही रहा था कि दीक्षितजी की तलवार खट की आवाज के साथ बीस गज की दूरी पर जा गिरी।

भरभण्णा उद्वेग के साथ बोल उठा, "देख ली मेरी बात, गजवीर।"

दीक्षितजी ने चन्नबसप्पा को दोनों बांहों में भरकर आलिंगन करके कहा, "शिष्यादिच्छेत्पराजयम्[1]—मुझे गुरु-दक्षिणा मिल गई।"

चन्नबसप्पा ने अपनी तलवार भक्ति-पूर्वक गुरु के चरणों में रखकर वंदना की।

दीक्षितजी के शिष्य तलवारें भंडार-घर में रखकर उनकी अनुमति

---

[1] 'शिष्य से पराजय की इच्छा करे।'

लेकर चले गए। दीक्षितजी भी अंदर चले गये और थोड़ी देर में मुंह धोकर, कपड़े बदलकर, माथे पर तिलक लगाकर शास्त्रीजी के पास गये।

शास्त्रीजी बोले,"दीक्षितजी, आपने तो आज परशुराम-अवतार में मेरा विश्वास करा दिया। मैंने सतोगुण और रजोगुण का अद्‌भुत मेल देख लिया।

"शास्त्रीजी, क्षात्रधर्म की घाटी पर पहुँचे बिना ब्राह्मणत्व की सिद्धि नहीं होती।"

शास्त्रीजी बोले, "दीक्षितजी, आप पहले मेरे कौतूहल को शांत कीजिये।"

"बहुत अच्छा।" कहकर दीक्षितजी अपनी कथा कहने लगे—

"मैं कित्तूर राज्यका एक दीवान था। एक दूसरे दीवान मल्लप्पाशेट्टी से मतभेद होने के कारण मैंने अपना पद छोड़ दिया, रियासत के महाराज मल्लर्ज को मुझसे जो प्रेम था, उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। हम दोनों में राजा और प्रजा का भेद न था। शास्त्रीजी, आप हमारे महाराज को एकबार स्वयं देखिए। मुझसे कोई चार अंगुल लम्बे हैं। नीलवर्ण, चमकता मुख-मंडल। मैं उनके वीरता भरे कामों का बखान करने लगूं तो सवेरा हो जाय। महाराज नहीं चाहते थे कि मैं राजधानी छोड़ कर जाऊं। वह बोले, 'दीवान का काम न करें तो कोई बात नहीं। योंही राजधानी में बने रहिए।' मैंने कहा, 'महाराज, मेरा राजधानी में रहना बेकार है। मैं बैलहोंगल में रहकर ही सिंहासन की सेवा करता रहूंगा।' महाराज ने पूछा, 'यहां तुम्हारे स्थान पर कौन आयगा?' मैंने कहा, 'मल्लप्पाशेट्टी बड़े बुद्धिमान हैं। वह ही सारे काम की देख-भाल कर लेंगे।' इसपर महाराजा बोले, 'आप किसी तरह यहां रहना स्वीकार न करें तो एक ऐसे आदमी को देकर जाइए, जिसपर आपका भरोसा हो।' मैं अपने बहनोई वेंकटराय का नाम दीवान-पद के लिए देकर इधर आ गया। शास्त्रीजी, मैं कित्तूर को भुला दूं तो सुख के साथ जीवन बिता सकता हूं। भगवती की कृपा से मुझे किसी बात की कमी नहीं है। लेकिन कित्तूर की अवस्था का विचार करके मेरी शान्ति भंग हो जाती है।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "क्यों, कित्तूर पर कोई संकट आया है क्या ?"

दीक्षितजी बोले, "मुझे संक्षेप में कित्तूर के इतिहास का परिचय आपको कराना पड़ेगा।"

शास्त्रीजी ने गद्‌गद् होकर कहा, "वीर जनों का इतिहास पुराणों की पवित्र कथाओं के समान ही पवित्र होता है।"

दीक्षितजी ने बताया, "कित्तूर का इतिहास सोलहवीं शताब्दी से आरम्भ होता है। हिरेमल्लशेट्टी और चिक्कमल्लशेट्टी नामक दो भाई कलबुर्गी में सराफे का काम करते थे। आगे चलकर वे दोनों बीजापुर के सुलतान की सेना में भरती हो गये। हिरेमल्लशेट्टी ने अपना शौर्य दिखलाकर बादशाह से 'शमशेरजंग बहादुर' की उपाधि तथा हुबली की सरदेशमुखी (जागीर) प्राप्त की। महाराज मल्लसर्ज उन्हींकी ग्यारहवीं पीढ़ी में हैं। महाराज ने चार विवाह किये। उनमें से तीसरी रानी नीलम्मा छोटी आयु में ही मर गई। बड़ी रानी रुद्रव्वा सन् १७८५ में जब टीपू सुलतान ने कित्तूर पर घेरा डाला, तब उनसे लड़ीं, किन्तु हमारी जीत नहीं हुई। दो वर्ष बाद पेशवा के दो सरदारों ने उन सब भागों को अपने अधीन कर लिया, जिनपर टीपू सुलतान ने आक्रमण किया था। कित्तूर राज्य पेशवा के अधीन हो गया। उसी वर्ष टीपू सुलतान के वीर सरदार बदरुल ज़ेमान ने कित्तूर राज्य को पुनः जीतकर महाराज को क़ैद कर लिया। महाराज मौका पाकर क़ैद से भाग निकले और पेशवा की शरण में चले गए। सन् १७८७ में हुई श्रीरंगपट्टण की सन्धि के अनुसार कित्तूर पेशवा के राज्य में मिला लिया गया। महाराज को आश्रय देनेवाले परशुराम भाऊ सन् १७८८ में पट्टणकुडी के युद्ध में खेत रहे और तब महाराज निराश्रित हो गए।

"कित्तूर के राज्य में घूंडोजी बाघ नामक एक मराठे डाकू ने बड़ा उपद्रव मचा रक्खा था। उसको कुचलने के लिए महाराज ने अंग्रेजों को सौ घुड़सवार, सौ पैदल और संगोल्ली का किला दिया। मैं पहले ही बता चुका हूं कि महाराज के चार पत्नियां थीं। इनमें बड़ी रानी रुद्रव्वा के दो

लड़के थे, शिवलिंग रुद्रसर्ज और वीररुद्रसर्ज। वीररुद्रसर्ज का २० वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। अब शिवलिंग रुद्रसर्ज गद्दी के उत्तराधिकारी हैं। शेष रानियों के कोई सन्तान नहीं है।"

इतना सुनने पर शास्त्रीजी ने कहा, "कित्तूर के भविष्य के बारे में आपके इतनी चिन्ता करने का तो कोई कारण दिखाई नहीं देता।"

"कारण है, शास्त्रीजी। पूना का पेशवा-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होता जा रहा है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि कुटिल स्वभाव अंग्रेज उसको शीघ्र ही निगल जायेंगे। टीपू सुलतान के विरुद्ध खड़े होने वाले पेशवा की शक्ति अंग्रेज अच्छी तरह जानते हैं। इन लोगों ने मैसूर के शेर को मिट्टी में मिला दिया। पेशवा का अन्त करना इनके लिए कौन बड़ी बात है! पेशवा का पतन होते ही कित्तूर अंग्रेजों के हाथ में आ जायगा।

"कालाय तस्मै नमः। जब हममें एकता नहीं, अनुशासन नहीं, तो हम दूसरों के दास रहें, इसमें आश्चर्य ही क्या? यदि पेशवा टीपू के विरुद्ध अंग्रेजों की सहायता न करता तो उनको दक्षिण भारत में क इंच भूमि भी नहीं मिलती।

"जिन टीपू सुलतान ने भारत की स्वतंत्रता के लिए वीरता दिखलाकर रण-क्षेत्र में अपने प्राण दे दिए, उनका हमें तर्पण करना चाहिए।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "कैसे?"

"अंग्रेजों के रक्त से।"

शास्त्रीजी सहज भाव से बोले, "दीक्षितजी, मैंने बहुत दिनों से राजनीति में भाग लेना छोड़ दिया है।"

दीक्षितजी का चेहरा आरक्त हो उठा। उनकी मूंछों के बाल कांटों की तरह खड़े हो गए और आंखों से चिनगारियां झड़ने लगीं।

"आप राजनीति से दूर रह सकते हैं; किन्तु स्वामी-ऋण से, देश-ऋण से, धर्म-ऋण से मुक्त नहीं हो सकते। क्या हम अपनी पवित्र आर्यावर्त भूमि को हजारों मील दूर से समुद्र पार करके आये हुए कुछ फिरंगी व्यापारियों की दासता की जंजीर में कस जाने दें? हमारे सनातन धर्म

को मिट्टी में मिलाकर उसके भग्नावशेष के ऊपर ईसाई-धर्म का झंडा फहराने दें ? आप और मैं यह सब देखते हुए मौन साध लें ?"

"मैं विद्यारण्य[1] नहीं हूं, दीक्षितजी, एक मामूली कलाकार हूँ।"

"शास्त्रीजी, सरस्वती की वीणा की झंकार से सब प्राणियों में ज्ञान का उदय होता है। इसी तरह आपकी वीणा की झंकार सब भारतवासियों के हृदय में देश-प्रेम की भावना पैदा करे। इस देश के क्षात्र-धर्म और आत्माभिमान को जागृत करने के लिए हम सब अपनी पूरी शक्ति, ज्ञान और तप को अर्पण कर दें।"

"दीक्षितजी, इस बुढ़ापे में मैं क्या कर सकता हूं ?"

"मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे ?"

"कहिये।"

"कित्तूर में महाराज के पास कोई योग्य व्यक्ति नहीं है। दीवान मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय महास्वार्थी हैं। बड़े दीवान गुरुसिद्दप्पा सच्चे स्वामिभक्त हैं, किन्तु वे बहुत बूढ़े हो गये हैं। उनमें इतनी सामर्थ्य नहीं रही कि वे मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के षड्यन्त्रों का सामना कर सकें। आप महाराज के शुभ-चिन्तक बनकर राजधानी में रहें; इतना ही काफी है। बाकी सब काम कित्तूर के वीर लोग सम्भाल लेंगे।"

"पक्षी की तरह स्वतंत्र विचरनेवाले व्यक्ति को आप फिर पिंजरे में डाल देना चाहते हैं ?"

"जी हां, जिससे अंग्रेज उस पिंजरे में बंद करके आर्यावर्त को न ले जा सकें।"

शास्त्रीजी कुछ देर विचारमग्न रहे। दीक्षितजी ने कहा, "शास्त्रीजी, आप और मैं अब थोड़े ही दिन के मेहमान हैं। अपनी मातृभूमि को

---

[1] वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार महाविद्वान सायण की उपाधि। उन्होंने विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली थी।

गुलामी की जंजीरों में जकड़े जाने का दृश्य अपनी आंखों से न देखें।"

भाव-विह्वल होकर शास्त्रीजी ने कहा, "जैसा आप कहें, दीक्षित-जी। मैं आपकी इच्छा के अनुसार चलने को तैयार हूं।"

शास्त्रीजी के ये शब्द सुनकर दीक्षितजी ने गद्‌गद् होकर उनको हृदय से लगा लिया।

: ३ :

भोजन के बाद दीक्षितजी ने कहा, "यात्रा के लिए कल का दिन शुभ है। रायण्णा आपके साथ जाकर सब प्रबंध कर आवेगा।"

"कित्तूर में मैं रहूं कहां ?"

"मेरे बहनोई वेंकटराय के घर।"

"आपने तो कहा था कि उनपर और मल्लप्पाशेट्टी पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

"हां, इसीलिए मैं चाहता हूं कि आप उनके ही घर में रहें। इससे आपको मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय की कुटिल चालों को जानने में आसानी होगी। यहां से कोई-न-कोई आकर आपसे मिलता रहेगा। आप उनके द्वारा राजधानी के सब समाचार मुझे भेजते रहें। रायण्णा, बालण्णा, गजवीर, चन्नबसप्पा और नागरकट्टी ये पांचों मेरे पंच-प्राण हैं। इनसे आपको अपनी कोई भी बात गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं।"

"बहुत अच्छा।"

"राजधानी में पहुंचते ही आप वेंकटराय के द्वारा बड़े दीवान गुरु-सिद्दप्पा से परिचय कर लीजिए। मैं उनके पास अलग से भी समाचार भेजे देता हूं। गुरुसिद्दप्पा महाराज और रानी से आपका परिचय करा देंगे।"

"मुझे रानी से परिचय करने की क्या आवश्यकता है ?"

"उसका एक बहुत ही महत्वपूर्ण अभिप्राय है। बड़े महाराज की राज-काज में विशेष रुचि नहीं है। फिर वे बूढ़े भी हो गए हैं। उनके उत्तरा-धिकारी शिवलिंग रुद्रसर्ज में राजकाज को समझने की कुशलता नहीं है। मुझे भरोसा नहीं कि कित्तूर पर संकट आये तो छोटे देसाई उसकी रक्षा कर सकेंगे। रुद्रव्वा रानी और शिवलिंगव्वा रानी विरक्त स्वभाव की हैं। उन्होंने शिव और साधुसंतों की पूजा-आराधना में रत रहकर दुनिया को भला रक्खा है। किन्तु रानी चेन्नम्मा तेजस्वी स्वभाव की हैं। उनमें क्षात्र-

तेज छलका पड़ता है। जिस तरह चंड और मुंड दैत्यों के उपद्रव से चामुंडेश्वरी काली ने रक्षा की थी, उसी तरह अंग्रेजों के उपद्रव से कित्तूर को चेन्नम्मा ही बचायगी। कित्तूर के भविष्य की सब आशाएं उन्हींपर अवलम्बित हैं। जो-कुछ समाचार मैं भेजूं, आप उसे रानी चेन्नम्मा तक पहुंचाते रहें।"

"बहुत अच्छा। आपकी आज्ञा सिर आंखों पर।"

× × ×

अगले दिन त्रयोदशी गुरुवार को रात्रि के समय सदाशिव शास्त्री गाड़ी में बैठकर कित्तूर को चल दिए। रायण्णा बैलों को हांक रहा था। बालण्णा भी उसके साथ था।

अगले दिन सूर्योदय से पहले ही गाड़ी कित्तूर पहुंच गई। चारों ओर फैली हरियाली आंखों को आनन्दित कर रही थी। पक्षी कलरव कर रहे थे। कुछ पक्षी पंख फड़फड़ा कर आहार की खोज में जाने की तैयारी में थे। चारों ओर के गांवों से अनाज की गाड़ियां कित्तूर की मंडी में आ रही थीं। स्त्रियां घरों के आगे लीपकर सुन्दरता से रंगवल्ली[1] बना रही थीं। हृष्ट-पुष्ट हलवाहे कंधे पर हल लिये बैलों को हांकते खेतों को चले जा रहे थे। धनधान्य से समृद्ध कित्तूर को उषाकाल के मंद प्रकाश में देखकर सदाशिव शास्त्री को सहसा श्रीरंगपट्टण[2] के वैभव की याद आगई।

---

१. दक्षिण भारत में प्रतिदिन घर के आगे आटे या अन्य किसी सफेद चूर्ण से चौक पूरने का रिवाज है। उसे 'रंगवल्ली' कहते हैं। लड़कियों को शुरू से ही उसमें नाना प्रकार के चित्र बनाना सिखाया जाता है।

२. मैसूर नगर से बीस मील पर कावेरी नदी की दो शाखाएं हो जाने से बीच में बने एक द्वीप में नदी तट पर श्रीरंगनाथस्वामी का मंदिर है। यहीं श्रीरंगपट्टण नामक नगर को किलेबन्द करके टीपू सुलतान ने अपनी राजधानी बनाई थी। कावेरी नदी के तीन द्वीपों में श्रीरंगस्वामी के तीन मंदिर हैं, जिनमें प्रथम यह है और तृतीय तमिल देश में श्रीरंगम के नाम से प्रसिद्ध नगर है। द्वितीय इतना प्रसिद्ध नहीं है।

कित्तूर के किले की तरफ गाड़ी को मोड़ते हुए रायण्णा गर्व के साथ बोला, "वही है सामने कित्तूर का राजमहल।"

उसके साथ ही शास्त्रीजी के मुंह से निकला, "वही सुलतान का राजमहल है।"

शास्त्रीजी को यह सोचकर बड़ा दुःख हुआ कि श्रीरंगपट्टण के ऊपर आती हुई जो विपदा मैंने देखी थी, वही क्या कित्तूर के ऊपर भी देखनी पड़ेगी?

रायण्णा ने गाड़ी किले के भीतर वेंकटराय की हवेली के सामने ले जाकर खड़ी कर दी। बालण्णा ने शास्त्रीजी की वीणा पहले नीचे उतारी, फिर शास्त्रीजी को हाथ का सहारा देकर उतारा।

रायण्णा बैलों को गाड़ी से खोलकर पास के एक वृक्ष से बांधकर वेंकटराय की हवेली के अन्दर गया। शास्त्रीजी और बालण्णा भी उसके पीछे गए।

वेंकटराय के द्वारपाल ने जाकर ज्योंही वेंकटराय को खबर दी, वह ड्योढ़ी पर आकर रायण्णा को देखकर बोले, "क्यों रायण्णा, तुम आये हो?"

रायण्णा ने दीवानजी को प्रणाम करके कहा, "जी हां! मालिक ने आपके लिए यह पत्र दिया है।"

वेंकटराय ने पत्र ले लिया और उसे पढ़कर बोले, "आइये, अन्दर पधारिए।" इतना कहकर वह शास्त्रीजी को अन्दर ले गये और बोले, "आपका कित्तूर मे रहने का विचार है?"

शास्त्रीजी ने उत्तर दिया, "लता, वनिता और कला, इनकी शोभा आश्रित होने में ही है। आप जैसे महानुभावों का आश्रय मिले तो मै कित्तूर में रहना सौभाग्य समझूंगा।"

दीवानजी ने कहा, "मेरे साथ के दूसरे दीवान मल्लप्पाशेट्टी यहीं रहते हैं। आप स्नान करके तैयार रहिए। उनसे भी आपका परिचय करा ूंगा। हम तीनों मिलकर विचार करेंगे और फिर जैसा ठीक होगा, करेंगे।"

तत्पश्चात् उन्होंने रायण्णा से पूछा, "गांव का क्या समाचार है,

रायण्णा ? दीक्षितजी तो अच्छी तरह हैं न ?"

"जी हां, अच्छी तरह है।" रायण्णा ने विनम्रता से उत्तर दिया।

वेंकटराय की बातचीत का ढंग देखकर शास्त्रीजी ऊब गए। वेंकटराय का शरीर बांस की भांति सूखा हुआ था, उसमें रक्त-मांस के होने में भी सन्देह होता था। तोते की-सी उनकी नाक और मली के बीज-जैसी अन्दर धंसी हुई आंखें उनकी निष्कपटता की द्योतक नहीं थीं। उनको दांत बजाकर बोलने की आदत थी। शास्त्रीजी ने साफ समझ लिया कि इस मनुष्य के मुंह से निकली हुई बात और उसके मन के विचार में कोई तारतम्य नहीं है।

इतने में वेंकटराय की पत्नी पद्मावती बाहर आई। रायण्णा को देखकर बोलीं, "रायण्णा, भैया अच्छी तरह है ? भाभी ठीक हैं ?"

रायण्णा ने आदर-पूर्वक खड़े होकर कहा, "माईजी, सब अच्छी तरह हैं। बड़े भाई के घर कब आवेंगी ?"

"यहां से छुटकारा ही कहां होता है, रायण्णा ! भाभी से कहना कि न हो तो, दो-चार दिन के लिए वही यहां हो जावें। मैंने तय कर लिया है कि भाई और भाभी नहीं आवेंगे तो मैं त्योहार नहीं मनाऊंगी।"

फिर शास्त्रीजी की ओर मुड़कर बोलीं, "शास्त्रीजी, इस घर को अपना ही घर समझिए। किसी तरह का संकोच न कीजिए। जो मेरे भाई के अपने हैं, वे हमारे भी अपने ही हैं।"

"जैसी आपकी आज्ञा, माताजी।" शास्त्रीजी ने कह दिया।

वह समझ गए कि चमेली की लता पर ऐसा-वैसा फल नहीं लग सकता।

शास्त्रीजी के अन्दर चले जाने पर बालण्णा और रायण्णा चुपचाप वहां से चले गए।

वेंकटराय ने स्नान-पूजा आदि से निवृत्त होकर चोगा पहना और सिर पर पगड़ी लपेटकर तैयार हो गए। शास्त्रीजी ने स्नान तो कर लिया, लेकिन पूजा का काम मध्यान्ह के लिए छोड़ दिया।

"मेरे साले ने लिखा है कि आप वीणा-वादन के आचार्य हैं।" वेंकटराय ने पूछा।

"आप सबका अनुग्रह है ।"

"आपके यहां संगीत को जितना प्रोत्साहन मिलता है, उतना यहां नहीं । यहां के लोगों के मन में यह भावना घर कर गई है कि संगीत वेश्याओं की सम्पत्ति है ।"

"शिव-शिव ! यह कैसी बात है ? क्या भगवती, सरस्वती, महर्षि नारद, भगवान श्रीकृष्ण आदि संगीत के उपासक नही थे ? मैंने सुना है कि कित्तूर के अधीश्वर ललित कलाओं के प्रेमी है । राज्य में गाने-बजाने वाले होने ही चाहिएं ।"

"कुछ दिनों तक बीजापुर के हबीबखां नाम के एक गायक हमारे राज्य में रहे थे ।"

"अब वह नहीं है ?"

"नही । अब वे उत्तरप्रदेश में, रामपुर राज्य में, चले गए है ।"

इतने में मल्लप्पाशेट्टी आ गये । उनके आने पर वेंकटराय ने उठकर उनका स्वागत किया और शास्त्रीजी से परिचय कराया । सुनकर मल्लप्पा-शेट्टीने कहा, "जब यह दीक्षितजी का पत्र लाये है तो इनको खाली हाथ कैसे लौटाया जा सकता है, वेंकटरायजी ?"

"शास्त्रीजी की क्या सहायता करें, आप ही बताइये ।" वेंकटराय ने उत्सुकता से पूछा ।

"इनको बड़े दीवानजी के पास ले चलें । वह महाराज से प्रार्थना करके महल में शास्त्रीजी की संगीत-गोष्ठी कराएं । आगे शास्त्रीजी का जैसा भाग्य होगा, वैसा होगा ।"

"आपकी सलाह बिल्कुल ठीक है ।"

वेंकटराय ने उनकी बात स्वीकार कर ली ।

बड़े दीवान गुरुसिद्दप्पा की आयु पचहत्तर को पार कर गई थी । फिर भी विश्राम लेना उनके लिए संभव न था । कित्तूर राज्य का सारा भार उनके कंधों पर था । राज्य में शांति-रक्षा की जिम्मेदारी के साथ-साथ मराठों के आक्रमण और अंग्रेजों के कुचक्रों का सामना भी उन्हींको करना पड़ता था ।

राज-काज में व्यस्त गुरुसिद्दप्पा ने वेंकटराय, मल्लप्पाशेट्टी और शास्त्रीजी का स्वागत करते हुए कहा, "दोनों दीवान एक साथ आए हैं, तो कोई बड़ा महत्व का ही काम होगा !"

वेंकटराय ने शास्त्रीजी के कित्तूर आने का प्रयोजन बताया, तो गुरुसिद्दप्पा बोले, "श्रीरंगपट्टण के संगीताचार्य का उन जैसा सम्मान करने की सामर्थ्य हमारे गरीब कित्तूर राज्य में नहीं है। फिर भी शास्त्रीजी यहीं रहें। हम उनके लिए आवश्यक सुविधाओं का प्रबन्ध कर देंगे।"

"राजमहल में शास्त्रीजी की संगीत-गोष्ठी का प्रबन्ध कर दें तो कैसा रहेगा ?" मल्लप्पाशेट्टी ने कहा।

"ठीक है। मैं अवसर देखकर महाराज से प्रार्थना करूंगा। आज शाम को या कल आपको खबर भिजवाऊंगा।"

वेंकटराय ने उठते-उठते कहा, "अब आज्ञा दीजिए। हमें दरबार जाना है। शास्त्रीजी को आप हमारे घर भिजवा दीजियेगा।"

"बहुत अच्छा। शास्त्रीजी आप ही के यहां ठहरे हैं क्या ?"

"जी हां।"

शास्त्रीजी ने कहा, आपके सामने बहुत काम हैं। आप किसीको मेरे साथ कर दें तो मैं बस्ती घूम आऊं।"

"शास्त्रीजी, दीवानजी सब प्रबन्ध कर देंगे।"

इतना कहकर गुरुसिद्दप्पा से आज्ञा लेकर वेंकटराय और मल्लप्पाशेट्टी चले गये।

उनके चले जाने पर पेशकार ने कागज-पत्रों पर दीवानजी के हस्ताक्षर कराए। इसमें कोई आधा घंटा लग गया। उसके चले जाने के बाद बड़े दीवानजी शास्त्रीजी को अपने घर ले गए।

दीवान गुरुसिद्दप्पा का घर खूब सजा हुआ था। कीमती कालीन बिछे थे, जिनपर मसनद लगे थे। एक ओर चांदी का पानदान रक्खा था। जगह-जगह कांच के झाड़-फानस लटक रहे थे। दीवारों पर हाथ के बनाए कई चित्र

टंगे थे। दीवानजी की गद्दी के पास की दीवार पर मल्लसर्ज देसाई का रंगीन चित्र था।

शास्त्रीजी ने चित्र को ध्यान से देखकर पूछा, "यही कित्तूर के महाराज मालूम पड़ते हैं।"

"जी हां, यही हमारे स्वामी, हमारे महाराज और हमारे आराध्य हैं।"

यह कहते हुए उनकी आंखें चमक उठीं। वृद्ध दीवान की असीम स्वामि-भक्ति देखकर शास्त्रीजी को अपार आनन्द हुआ।

दीवानजी और शास्त्रीजी गद्दी के पास जाकर बैठे ही थे कि रायण्णा और बालण्णा आकर थोड़ी दूर पर भूमि पर बैठ गए। दीवानजी ने गम्भीरता, साथ ही सरलता से कहा, "शास्त्रीजी, आपके आने का उद्देश्य अभी रायण्णा ने मुझे बतलाया है। कित्तूर की राज्यलक्ष्मी ही आपको यहां बुलाकर लाई है।"

शास्त्रीजी ने कहा, "आपके विषय में चिदम्बर दीक्षित की बड़ी ऊंची भावना है। आपपर उनका बहुत ही भरोसा है।"

दीवानजी बोले, "यह मैं जानता हूं। मैं उनकी भावना और विश्वास को कायम रखने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करूंगा। आप मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय का विश्वास प्राप्त कीजिए और उनकी गति-विधि का समाचार हमको समय-समय पर देते रहिए।"

शास्त्रीजी ने पूछा, "दीक्षितजी का विचार है कि इन दीवानों से कित्तूर को खतरा है। क्या आपका भी यही विचार है?"

"जबतक सबल कारण न हो, शास्त्रीजी, तबतक दीक्षितजी कोई मत प्रकट नहीं करते। पहले राज-दरबार में आपकी संगीत-गोष्ठी हो जाय, उसके बाद आपको सबकुछ स्वयं ही मालूम हो जायगा।"

तभी दीवानजी के प्रीतिपात्र सेवक शिवकुमार ने सबके लिए दूध और केले लाकर रख दिये। दीवानजी ने शास्त्रीजी से कहा, "लीजिए। दूध पीकर आशीर्वाद दीजिए कि कित्तूर में दूध की नदी बहे।"

शास्त्रीजी जलपान करके शिवकुमार के साथ नगर की सैर करने के लिए चल पड़े।

: ४ :

कित्तूर के राजमहल मे आज बडी चहल-पहल है। वहा संगीत-गोष्ठी का आयोजन हो रहा है। राजमहल के निवासियों तथा नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों को श्रीरंगपट्टण के संगीताचार्य के विषय मे बड़ा कौतूहल है। जिन्हें संगीत का कुछ भी ज्ञान नहीं है, वे भी ऐसा प्रकट कर रहे हैं, मानो वे संगीत के पूरे पारखी हों। श्रीरंगपट्टण के संगीताचार्य दीवान वेंकटराय के अतिथि हैं और बड़े दीवान गुरुसिद्दप्पा की कृपा उनको प्राप्त है, इससे वह और भी सब लोगों को कौतूहल के पात्र बन गए।

राजमहल का सभामंडप खूब सजाया गया। बड़े दीवान, अन्य दोनों दीवानों और राजगुरु के लिए उच्चासनों तथा नगर के संभ्रान्त व्यक्तियों के लिए उनकी स्थिति के अनुकूल बैठने की व्यवस्था की गई।

सभा-भवन के बीचोंबीच महाराज तथा युवराज के बैठने के लिए ऊचे आसन बनाये गए। महाराज के दाईं ओर परदे के पीछे रनवास की महिलाओं तथा नगर की संभ्रान्त स्त्रियों के बैठने की व्यवस्था की गई।

महाराज के सामने संगीताचार्य के बैठने के लिए स्थान रक्खा गया था। संगीताचार्य के पास ही राज-दरबार के कवियों तथा अन्य विद्वानों के बैठने के स्थान थे। निमंत्रित व्यक्ति कार्यारम्भ होने से आध घंटा पहले ही आकर अपने-अपने स्थान पर बैठ गए थे।

महाराज के पधारने के पहले बड़े दीवान गुरुसिद्दप्पा सभा-भवन मे आये, सारे प्रबन्ध का निरीक्षण किया और उपस्थित व्यक्तियों से उनकी कुशल-क्षेम पूछी।

इसके बाद निश्चित समय पर जय-घोषों द्वारा महाराज के आगमन की सूचना दी गई। महाराज ने ज्योंही सभा-भवन में पदार्पण किया, सब लोगों ने उठकर उनका स्वागत किया। महाराज के साथ युवराज भी पधारे।

सभा के शांत हो जाने पर बड़े दीवानजी ने शास्त्रीजी से आरंभ

करने के लिए आंखों से सकेत किया। शास्त्रीजी ने वीणा उठाकर आंखें से लगाकर 'शंकराभरण' राग गाकर सुनाया।

महाराज ध्यान लगाकर सुन रहे थे, पर सभा में उत्साह का तनिक भी चिन्ह दिखाई नही दिया। वेंकटराय की कही हुई बातें तत्काल शास्त्रीजी को याद आगई। उन्होंने 'सुरुटि' राग में राग और तान बजाए, किन्तु सभासदों का मनोभाव नही बदला, नही बदला।

शास्त्रीजी ने देखा कि गुरुसिद्दप्पा का चेहरा भी चिन्ता-ग्रस्त है। वह सोचने लगे, "आज यह कैसी परीक्षा है। आज की यह संगीत-गोष्ठी किसी हालत में भी निष्फल नही होनी चाहिए। चिदम्बर दीक्षित और गुरुसिद्दप्पा मुझपर जो आशा लगाए बैठे है, वह झूठी सिद्ध नही होनी चाहिए। मेरी आज की इस संगीत-सभा पर कित्तूर का भविष्य निर्भर है।"

यह सोचकर शास्त्रीजी ने 'हिंदोल' राग बजाना प्रारम्भ किया। वहां के कुछ लोग भारतीय संगीत से परिचित थे। यह राग सुनकर वे सिर हिलाने लगे। राजा के मुख पर भी प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। गुरुसिद्दप्पा के चेहरे पर चिन्ता की जो रेखाएं उभर आई थी, वे धीरे-धीरे दब गई।

और जब शास्त्रीजी ने 'श्रीरंजनी' राग बजाना आरम्भ किया, तो सभासदों के मुखों पर मुस्कराहट खेलने लगी। विलम्ब काल में शास्त्रीजी ने राग बजाकर द्रुतकाल में तान बजाई। सभासद मंत्रमुग्ध हो गए।

शास्त्रीजी ने सोचा कि शायद महाराज को देर हो रही है। उन्होंने गुरुसिद्दप्पा के मुख की ओर देखा, मानो वे जानना चाहते हों कि क्या वह जारी रक्खे। गुरुसिद्दप्पा महाराज के मुख की ओर उसी मुद्रा से निहारने लगे। पर महाराज ने रुकने का आदेश न दिया।

तब राजगुरु ने महाराज के मुख की ओर देखा। उनके संकेत का अर्थ समझकर गुरुसिद्दप्पा ने आखों-ही-आंखों में शास्त्रीजी को सूचना दे दी। उन्होंने मंगल-आरती गाकर वीणा को आंखों से लगाकर नीचे रख दिया।

सभा-विसर्जन से पहले राजमहल के एक सेवक ने एक थाल लाकर गुरुसिद्दप्पा के हाथों में दिया। गुरुसिद्दप्पा ने थाल महाराज के हाथ से छुआकर

रख दिया, अनन्तर संगीताचार्य के गले में पुष्पमाला डालकर उनको सलमे-सितारे के काम से चमकता हुआ शाल ओढ़ाया और उनके हाथों में रुपयों की थैली सौंप दी। भाटों ने महाराज की प्रशस्ति गाई और सभासद उठकर खड़े हो गए। महाराज युवराज के साथ अन्तःपुर में चले गए।

महाराज के चले जाने पर सभा में उपस्थित व्यक्तियों ने उत्साह से शास्त्रीजी को घेरकर उनका अभिनन्दन किया। शास्त्रीजी ने लोगों के, विशेषकर मल्लप्पाशेट्टी तथा वेंकटराय के अभिनन्दन को स्वीकार करते हुए विनय-भाव से कहा, "यह सब आपका अनुग्रह है।"

महाराज को विदा करके गुरुसिद्दप्पा संगीताचार्य के पास आये और बोले, "टीपू सुलतान तलवार हाथ में न लेकर वीणा लेकर आये होते तो कित्तूर आसानी से उनके अधीन हो जाता।"

शास्त्रीजी उनकी इस बात से गद्‌गद् हो उठे। थोड़ी देर रुककर उन्होंने पूछा, "कित्तूर में आनेवालों को आप वापस नहीं भेजते, दीवानजी ?"

वह बोले, "कित्तूर की मिट्टी में बड़ी चिपक है, शास्त्रीजी।"

"उससे भी अधिक चिपक यहां के लोगों के हृदय में है, दीवानजी !"

निमंत्रित व्यक्तियों के चले जाने पर गुरुसिद्दप्पा ने धीरे-से शास्त्रीजी के कान में कहा, "कल महाराज से भेंट के लिए बुलावा आवेगा। तैयार रहियेगा।"

संगीताचार्य को राज-दरबार में जो सम्मान प्राप्त हुआ, उसे देखकर वेंकटराय की पत्नी पद्मावती को बहुत आनन्द हुआ। वह बोलीं, "शास्त्रीजी, आपकी गोष्ठी में जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त नही हुआ।"

"अच्छा !" विस्मय से शास्त्रीजी ने कहा, फिर बोले, "जब आपकी सुनने की इच्छा होगी तभी मैं वीणा बजाकर सुना दूंगा। कहें तो अभी बजाऊं ?"

"नहीं, इस समय नही। आप थके हुए है। कल पूजा के समय जितनी देर चाहें, सुनाइयेगा।"

अगले दिन शास्त्रीजी ने पूजा शीघ्र ही प्रारम्भ करके देर तक वीणा

बजाई और पद्मावती की इच्छा पूरी की।

दोपहर के समय वेंकटराय ने घर आकर उत्साहपूर्वक कहा, "शास्त्रीजी, हमारे महाराज आपके संगीत पर मुग्ध हो गए हैं।"

शास्त्रीजी ने प्रसन्न होकर कहा, "सब मां सरस्वती की कृपा है। इस वीणा के तारों पर मेरी उंगलियां चलती हैं, किन्तु श्रोताओं की हृत्तन्त्री के तारों को वही बजाती है।"

"तीसरे पहर चार बजे आपको महाराज के दर्शन के लिए जाना है।"

"आप भी तो चलेंगे न ?"

"नहीं, जब महाराज किसीको दर्शन देते हैं तब हममें से कोई भी वहां नहीं रहता। क्यों, क्या अकेले जाते आपको डर मालूम होता है ?"

"नहीं, डर की तो कोई बात नहीं है। यहां के राज-दरबार के नियम-कायदे मैं नहीं जानता। जानकारी के अभाव में कहीं मुझसे कोई अशिष्टता न हो जाय।"

आप तो श्रीरंगपट्टण के राज-दरबार में रहे हैं। राज-दरबार के नियमों को अच्छी तरह से जानते होंगे। आपको भला क्या बताना है!"

"यह तो आपका अनुग्रह है। माता पद्मावती के हाथ के भोजन का प्रभाव है।"

"नहीं शास्त्रीजी, यह सब आपकी विद्या का प्रभाव है।"

"विद्या के कंचन होने पर भी उसके लिए माता के आशीर्वाद की पुट चाहिए।"

तभी पद्मावती बोली, "शास्त्रीजी, मैं तो आपकी पुत्री हूं।"

"हां, माताजी, जैसे मां बच्चों को अक्षर सिखलाती है वैसे ही सरस्वती ने मुझे संगीत का प्रारम्भिक पाठ पढ़ाया। अब वही मेरी गोद में बच्चे की तरह बैठकर संगीत के स्वरों को मेरी वीणा से प्रस्फुटित कराती है।"

वेंकटराय ने चार बजे से कुछ पहले ही अपने एक सिपाही के साथ शास्त्रीजी को राजमहल में भेज दिया। राजमहल के सेवक शास्त्रीजी को अपने साथ अन्तःपुर के अन्दर ले गए।

भीतर के कक्ष में शास्त्रीजी थोड़ी ही देर बैठे थे कि महाराज गुरुसिद्दप्पा के साथ आये ।

महाराज ने दूर खड़े हुए शास्त्रीजी को बुलाकर पास बैठाया । उनके बैठते ही गुरुसिद्दप्पा चलने को तैयार हो गए । महाराज ने कहा, "आप जाइए नही, यही रहिए ।" फिर शास्त्रीजी से बोले, "शास्त्रीजी, आपकी वीणा सुनकर हमको बहुत आनन्द हुआ । उसे स्वयं ही आपसे कहने के लिए हमने आपको बुलवाया है ।"

"मैं कृतार्थ हुआ, महाराज ।" शास्त्रीजी ने विनय के साथ कहा ।

"हमारी इच्छा है कि आप कित्तूर में ही रहे । कृपया स्वीकार करें ।"

"आपकी आज्ञा शिरोधार्य करना मेरा अहोभाग्य होगा ।"

महाराज ने थोड़ी देर मौन रहने के बाद पूछा, "दीक्षितजी कैसे है ?

"अच्छी तरह है ।"

"कित्तूर कब आने का विचार है ?"

"इस बारे मे उन्होंने मुझसे कुछ नही कहा ।"

"शास्त्रीजी, दीक्षितजी राज्य के सेवक होने के साथ ही मेरे अन्तरंग मित्र भी रहे है ।"

"महाराज, दीक्षितजी आपकी मैत्री की सदा प्रशंसा करते है ।"

महाराज का ध्यान एकदम पीछे चला गया । बोले, "शास्त्रीजी, दीक्षितजी के ऊंच-नीच ज्ञान के बारे में एक घटना सुनाता हूं । एक दिन हम दोनों ने मनोरंजन के लिए तलवार से लड़ना प्रारम्भ किया । दीक्षितजी के मुकाबले का तलवार के हाथ जाननेवाला हमारे राज्य मे ही नहीं, सारे भारत में भी शायद ही मिले । लड़ाई में हम दोनों बराबर छूटने वाले थे कि अकस्मात् दीक्षितजी के हाथ से तलवार फिसलकर गिर पड़ी । दीक्षितजी ने अपनी हार मान ली, किन्तु हमको विश्वास नही हुआ । हमने कहा, 'इस तरह की जीत को हम नहीं मानते, दीक्षितजी । तलवार हाथ में लीजिए ।' दीक्षितजी बोले, 'महाराज, प्रजा से राजा की हार नहीं होनी चाहिए ।' हमने कहा, 'इस समय हम राजा और प्रजा के भाव से नही लड़ रहे है, समान बल के शूरों

के रूप में लड़ रहे हैं। यदि आप तलवार हाथ में नहीं पकड़ेंगे तो हमारी मैत्री का अपमान होगा।' पर वह नही माने। उनकी युद्ध-कला की प्रशंसा किन शब्दों में करूं। दांव-पेंच और आत्मरक्षा के लिए उनकी होशियारी देखते ही बनती थी।"

"लेकिन अब दीक्षितजी में वह कस नही रहा।" शास्त्रीजी ने कहा।

"उनको चिन्ता जो लगी है।"

"जी हां, उनको राज्य की ओर से बड़ी चिन्ता है। सदा सोचते रहते हैं कि मराठे और अंग्रेज न जाने कब राज्य को निगल जायं ?"

"मराठों का उपद्रव समाप्त होने लगा है। अंग्रेजों के साथ सन्धि हो जाने की सम्भावना है। हमारी बड़ी इच्छा है कि युवराज को गद्दी सौंपें तबतक कित्तूर राज्य पर कोई आंच न आने पावे।"

"दीक्षितजी का मानना है कि अंग्रेजों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"आपकी क्या राय है ?"

"टीपू सुलतान के साथ अंग्रेजों ने जो अमानुषिक व्यवहार किया, उसे मै कभी नहीं भूल सकता। जैसा दीक्षितजी कहते है, हमारी कुशल इसीमें है कि हम किसी भी विदेशी के पैर अपने देश में न जमने दें।"

"आप ठीक कहते है। जिन अंग्रेजों ने आधा भारतवर्ष निगल लिया, उनके सामने हमारा राज्य कहाँ तक टिका रह सकता है ?"

"बचा हुआ तो आधा हमारे हाथ में ही है न ?"

"होने से क्या हुआ ? हममें एकता नहीं। टीपू सुलतान को मराठे तंग न करते तो अंग्रेजों को दक्षिण में जगह मिलती ?"

शास्त्रीजी ने गंभीर होकर कहां, "हमें एकता पैदा करनी चाहिए, लोगों में जागृति फैलानी चाहिए। भारत के सिंहद्वार पर अंग्रेजों के झंडे को फहराने का किसी भी हालत में अवसर नहीं आने देना चाहिए।"

"शास्त्रीजी, आपका ज्वलंत देश-प्रेम अनुकरणीय है।"

इसका शास्त्रीजी क्या उत्तर देते । चुप रहे ।

विषय बदलते हुए महाराज ने कहा, "शास्त्रीजी, आपकी वीणा हमारी रानियों को बहुत पसन्द आई ।"

"मैं अनुगृहीत हुआ, महाराज ।"

"हमारी रानी चेन्नम्मा और पुत्रवधू वीरव्वा की आपसे वीणा सीखने की बड़ी इच्छा है ।"

"महाराज, वीणा स्त्रियों के ही बजाने का वाद्य है । उनका कोमल वादन मां सरस्वती को आनन्दित करता है ।"

"क्या मैं छोटी रानी से कह दूं कि आप उनको शिष्या बनाना स्वीकार करेंगे ?"

"जैसी महाराज की इच्छा । सिखाने के लिए दो वीणाएं चाहिए । एक शिष्य के लिए और एक गुरु के लिए ।"

"कहां मिलेगी ?"

"मैसूर के गिरियप्पा की वीणाएँ संसार में प्रसिद्ध हैं ।"

वीणाओं के खरीदने की आज्ञा देते हुए महाराज ने कहा, "दीवानजी, कल ही आदमी मैसूर भेजकर दो वीणा मँगा दीजिये (कुछ रुक कर) शास्त्रीजी के निवास और भोजन का ठीक प्रबन्ध कर दीजिए । इनकी सेवा के लिए चार भरोसे के आदमी रख दीजिये । हमारे दरबार के विद्वानों को जो प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, वह इनको भी मिले । द्वारपाल से कह दीजिए कि जब-कभी ये महल मे पधारें, इनको न रोकें । विद्वानों के सम्मान में कित्तूर किसीसे पीछे न रहे ।"

शास्त्रीजी समझ नही पा रहे थे कि महाराज के दिए सम्मान के लिए किन शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करें । उनकी वाणी अवरुद्ध हो गई ।

इसके बाद महाराज अन्तःपुर चले गए । शास्त्रीजी को अपने मौन पर बड़ा दुःख हुआ । वे दीवानजी से बोले, "दीवानजी, मुझे बड़ा खेद है कि महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता भी प्रकट नही कर पाया ।"

दीवानजी ने सांत्वना देते हुए कहा, "शास्त्रीजी, महाराज ने आपके

मन को अच्छी तरह समझ लिया है, आप दुख न मानें।"

× × ×

शास्त्रीजी के वीणा-वादन पर नटी कलावती भी सिर हिलाने लगी थी। जबसे उसने महल में शास्त्रीजी का संगीत सुना था, तब से वह पागल-सी हो गई थी। उसने मल्लप्पाशेट्टी से हठ की कि मैं भी शास्त्रीजी से संगीत सीखूंगी। वह मल्लप्पाशेट्टी की रखैली थी। मल्लप्पाशेट्टी ने जब यह बात शास्त्रीजी से कही तो उनको स्वीकार करना पड़ा। उन्होंने सोचा कि यहां मल्लप्पाशेट्टी का बड़ा अधिकार है। उसको अप्रसन्न करके काम नहीं चलेगा। उन्होंने यह भी सोचा कि मल्लप्पाशेट्टी से निकट संबंध रखने के लिए संगीता-ध्यापन द्वारा अच्छा अवसर मिलेगा।

: ५ :

राजधानी के सब समाचार चिदम्बर दीक्षित को समय पर पहुँचते रहते थे। दीक्षितजी के गुप्तचर कित्तूर के राजमहल तथा बड़े अधिकारियों के घरों में भी लगे हुए थे। बड़े ीवान गुरुसिद्दप्पा भी समय-समय पर दीक्षितजी को राजधानी के समाचार भेजते रहते थे।

उस दिन मदाशिव शास्त्री के पत्र को ीक्षितजी ने तीन चार बार पढ़ा। फिर तुलजम्मा को बुलाकर बोले, "शास्त्रीजी का पत्र आया है।"

"पद्मावती के बारे में कुछ लिखा है?"

"हां!"

यह कहकर दीक्षितजी पत्र सुनाने लगे, "सौभाग्यवती रानी चेन्नम्मा और उनकी पुत्रवधू वीरम्मा का संगीतपाठ भली प्रकार हो रहा है। रानीजी के बारे में आपकी जो राय थी, उसमे तनिक भी अतिशयोक्ति नही है। इसमें कोई सन्देह नही कि वह कित्तूर की राज्यलक्ष्मी है। राज्य के प्रत्येक काम में महाराज उनकी सलाह लेते हैं। बड़ी रानी सौभाग्यवती रुद्रव्वा की माता नीलम्मा चेनम्मा रानी से ईर्ष्या करती हैं। मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय नीलव्वा के महल में आते-जाते रहते ै। यहां का किलेदार शिवबसप्पा भी मल्लप्पाशेट्टी के साथ बड़ी घनिष्टता रखता है। चेन्नम्मा रानी ने आठ महीने में ही संगीत मे जो प्रगति की है, उससे मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। वह अबतक बाईस कीर्तन सीख चुकी है। कभी-कभी वह मुझसे राज्य की हानि-लाभ के विषय में चर्चा करती रहती है। अमटूर का सैदनसाहब कित्तूर की मस्जिद के जीर्णोद्धार के लिए आज्ञा मांग रहा था। उसकी प्रार्थना को मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय ने अस्वीकार कर दिया था। बड़े ीवान गुरुसिद्दप्पा ने भी मस्जिद के जीर्णोद्धार के विषय में उत्साह नही दिखलाया। सैदनसाहब रानी चेन्नम्मा से मिला। उन्होंने अपनी जेब से दस हजार रुपये उसे देकर कहा, "जिस प्रकार हिन्दू तथा जैनमंदिर भगवान के पूजा-स्थान हैं

उसी प्रकार भगवान की पूजा मस्जिद में भी होती है। किसी भी नाम से पुकारें एक वही भगवान उत्तर देता है।' रानी के इस उदार दृष्टिकोण से मुसलमानी प्रजा को बड़ा संतोष हुआ है। केवल नीलव्वा क्रोध में भरकर चिल्ला उठी, 'इस वंश के ११वें देसाई मल्लसर्ज (महाराज) ने मुसलमानों को खुशी करनेवाली को अपनी रखैली बनाकर धर्म का सत्यानाश कर दिया। रानी चेन्नम्मा मस्जिदों का जीर्णोद्धार कराकर हिन्दू धर्म की जड़ पर कुठाराघात कर रही है।'

"आप और माता तुलजम्मा त्यौहार पर नही आए, इसलिए आपकी बहन को बड़ा दुख हुआ। कम-से-कम माताजी को ही आप दो-चार दिन के लिए इधर भेज दें तो आपकी बहन के मन को शांति मिलेगी।"

पत्र पूरा होने पर दीक्षितजी ने पत्नी की ओर देखकर कहा, "सुना ?"

"हां, सुना।"

"कित्तूर कब जाओगी ?"

"जब आप चलेंगे।"

"मुझपर भरोसा कैसे करोगी ?"

तुलजम्मा ने उत्तर दिया, "आपपर नहीं तो और किसपर भरोसा कर सकती हूँ। कित्तूर राज्य ही आपके भरोसे पर है।"

"रानी चेन्नम्मा भी तो मल्लसर्ज देसाई से कहा करती थी, 'कित्तूर राज्य आप ही के भरोसे है।'"

× × ×

उस दिन जब महाराज ने अन्तःपुर में प्रवेश किया तो उनका मुख मलिन था। उनको आता देखकर चेन्नम्मा ने वीणा नीचे रख दी।

"वीणा बजाना क्यो बन्द कर दिया, चेन्ना ? राजनीति के इस झंझट में तुम्हारी वीणा ही मुझे शांति प्रदान करती है।" महाराज ने कहा। चेन्नम्मा ने वीणा उठाकर सहाना राग बजाया और उसके समाप्त होने पर फिर वीणा नीचे रख दी। राजा ने धीरे-धीरे से पंचम के तार पर उंगली फेरी।

"महाराज, आज आप इतने खिन्न क्यों है ?"

"क्या बताऊं। इधर कुआं है, उधर खाई।"

"क्यों, क्या मंत्रिमंडल में कुछ वाद-विवाद हो गया ?"

महाराज ने दुखित स्वर में कहा "पेशवा बाजीराव ने सोंडूर के कार्तिकस्वामी के मंदिर का दर्शन करके गोडूर, कम्पली, होसपेट, बागलकोट और गोर्ल होसूर होते हुए अब कृष्णा नदी के तट पर पड़ाव डाल रखा है। कित्तूर के आस-पास के जागीरदारों और मेरे आजन्म वैरी शंगुणिसी के पाटील अल्लप्पागौडा ने मेरे विरुद्ध शिकायत करके पेशवा के कान भर दिये हैं। मंत्रिमंडल की राय है कि मै तुरन्त पेशवा से मिलूं और वास्तविक स्थिति उन्हें बताऊं।"

"दीवानजी की क्या राय है ?"

"उनकी राय है कि पेशवा के पूना पहुंच जाने के बाद मै वहां जाकर उनसे मिलूं तो अच्छा होगा।"

"आखिर तय क्या हुआ ?"

"मैंने मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय और शिवबसप्पा, इन सबके विरुद्ध जाना ठीक नही समझा और निश्चय किया कि तत्काल जाकर भेंट करूं ?"

"सारा परिवार भी आपके साथ चलने को तैयार रहे ?"

"मंत्रिमंडल की राय है कि थोड़े ही साथियों को लेकर मेरा पेशवा से मिलना श्रेयस्कर होगा। मद में डूबे हुए पेशवा को क्रोध का अवसर देना उचित नही।"

यह सुनकर चेन्नम्मा का चेहरा मुरझा गया। राजा के एकदम निकट आकर बोली, "क्या मुझे भी नही जाना चाहिए ?"

"चेन्ना, तुमको तो मालूम ही है कि सैदन की मस्जिद के मामले को लेकर कितना विरोध है। तुम और मैं, दोनों राजधानी से चले जायंगे तो मस्जिद का काम अधूरा रह जायगा। नीलव्वा इसी समय अपना धर्म-द्वेष प्रकट करेगी।"

"आप जल्दी लौट आवेंगे न ?"

"हां एक सप्ताह में आ जाऊंगा।"

चेन्नम्मा के मन में बड़ा तूफान मचा हुआ था, पर यह सोचकर कि राजा के अशांत मन को और अधिक दुखी नही करना चाहिए, उसने अपनी मौन स्वीकृति दे दी।

अगले दिन प्रातःकाल महाराज ने थोड़े-से सलाहकारों को साथ लेकर पेशवा बाजीराव से भेंट करने के लिए येडूर की ओर प्रस्थान किया। इधर राजा की सफलता के लिए रानी चेन्नम्मा के आदेश पर राज-मंदिर के घंटे-घड़ियाल एक साथ बज उठे।

: ६ :

महाराजा को गए एक सप्ताह बीत गया, पर उनकी कोई खबर न आई तो कित्तूर की प्रजा अपने महाराज के कुशल समाचार जानने के लिए आतुर हो उठी। मंत्रालय के सामने लोगो की भीड़ लगी रहती और वह राजा के समाचार पूछती।

उधर रानियों के आंसू नही थमते थे। रानी रुद्रव्वा ने तो अनशन प्रारम्भ कर दिया।

इस प्रकार दस दिन बीत गए। कोई खबर न आई। रानी चेन्नम्मा ने गुरुसिद्दप्पा को बुलाकर कहा, "दीवानजी, आप स्वयं जाइये और महाराजा का समाचार लाइए। मुझे डर है कि वह कहीं किसी षड्यंत्र के शिकार न हो गए हों।"

"जैसी आज्ञा।"

गुरुसिद्दप्पा अगले दिन प्रातःकाल येडूर को रवाना हो गए। उनके जाने के चौथे दिन एक घुड़सवार ने आकर रानी चेन्नम्मा को एक पत्र दिया। पत्र पढ़ते-पढते रानी के पैरों के नीचे से धरती खिसकने लगी। पर उन्होंने अपनेको संभाला और तुरन्त युवराज शिवलिंग रुद्रसर्ज, मंत्रिमंडल तथा बड़ी रानी को बुलाकर वह पत्र उनके सामने रख दिया। वह दीवानजी का पत्र था।

मल्लप्पाशेट्टी ने उसे हाथ में लेकर सबको सुनाया। लिखा था—"जब मैं येडूर पहुंचा तो पेशवा और महाराज वहां से प्रस्थान कर चुके थे। पूछने पर मालूम हुआ कि पेशवा महाराज को अपने साथ पूना ले गए। उसी समय मैं पूना को चल पड़ा। वहां जाकर मालूम हुआ कि महाराज को पेशवा ने मधोलकर की हवेली में कैद कर दिया है। लोगों ने महाराज के विरुद्ध पेशवा को भड़काकर उसके मन में यह बात बैठा दी थी कि हमारे महाराज धर्म-विरोधी हैं। मैं पेशवा से मिला और जब मैंने उन्हें असली

बात बताई तो पेशवा ने अपनी भूल स्वीकार की। मैंने पेशवा से प्रार्थ की कि महाराज को तुरन्त मुक्त कर दें। उन्होंने कहा कि हम लोग संधि शर्तें तय कर लें। जो शर्तें उन्होंने हमारे सामने रखी, वे बिल्कुल अपमान-ज थी। उनकी मुख्य शर्त यह थी कि हमारी रक्षा के लिए पेशवा कित्तूर मराठा सेना रखेंगे और उसका सारा खर्च हमें उठाना पड़ेगा। मैंने शर्त्त स्वीकार नही की। पर अन्त में कोई चारा न देखकर यह बात म ली कि हम प्रतिवर्ष एक लाख पचहत्तर हजार रुपये पेशवा को दें। होने से महाराज के स्वास्थ्य को भी खतरा पहुंचने का डर था। इ मानने पर महाराज को छोड़ दिया गया।

"जब हम पूना से चले तो महाराज बीमार पड़ गए। पेशवा की दी ह डोली में महाराज लेटे ए थे। जैसे-तैसे हम लोग येडूर पहुँचे। वहां जाव महाराज ने वीरभद्रस्वामी की पूजा करके जंगमदासोह नामक व्रत किया इस समय हम दुरदुंडी में हैं। अच्छा होगा कि अन्तःपुर के सब लोगों के सा मंत्रिमंडल यहाँ आ जाय।

"महाराज की हालत चिन्ताजनक है। किन्तु निराश होने की को बात नही। मैं चाहता हूँ कि भगवान की कृपा से वह जल्दीही नीरोग ह जायं।"

पत्र सुनकर सबने निश्चय किया कि तुरन्त चल पड़ें।

× × ×

राजमहल के लोग जब दुरदुंडी पहुँचे तबतक महाराज की दशा और भ बिगड़ गई थी। उन्होंने मुस्कराते हुए सबका स्वागत किया और डबडबा आंखों से कहा, "जो पैदा आ है, वह एक दिन मरेगा भी। इसके लि दुख क्यों? आप लोगों ने भी हमारी ही तरह कित्तूर के गौरव की रक्षा व बीड़ा उठाया है। युवराज अब बड़े हो गए हैं। उनको उत्तराधिकारी बन इए। गुरुसिद्दप्पाजी, युवराज अभी नासमझ हैं। उनको उचित सलाह देक आदर्श राजा बनाने की जिम्मेदारी आपपर है। युवराज, अपनी माताओं व दुख दूर करना तुम्हारा फर्ज है।"

महाराज के ये शब्द सुन कर सबके हृदय उमड़ आये।

महाराज को डोली में लिटा कर सब लोग बेलवड़ी पहुँचे। वहां राजा ने वीरभद्रस्वामी की पूजा करके जगमदासोह करने की इच्छा की।

महाराज तथा उनके परिवार का पड़ाव बेलवड़ी में पड़ा था, तभी दीक्षित-जी भी आ गए। महाराज ने सबको बाहर भेजकर दीक्षितजी और गुरु-सिद्दप्पा को बुलाकर पास बैठाया। महाराज की दशा देखकर दीक्षितजी की आखें भर आईं।

महाराज हँसकर बोले, "क्यों, मेरे परशुरामजी अधीर हो उठे?"

इतना कहकर महाराज क्षणभर को चुप हो गए। फिर बोले, "मुझे बड़ा दुख था कि आप नहीं मिले। अब मैं निश्चिन्त होकर शिवसान्निध्य[1] प्राप्त कर सकता हूँ।"

दीक्षितजी ने अवरुद्ध कंठ से कहा, "हमको अनाथ करके मत छोड़ जाइए, महाराज।"

"दीक्षितजी, कित्तूर, युवराज, रानियां और प्यारी प्रजा, सबको आप और गुरुसिद्दप्पा के हाथों में सौंपता हूँ। हमारे आदमियों में स्वार्थी लोग भरे हुए हैं। आप इस बात को देखते रहें कि कित्तूर उनके हाथों में फँसकर संसार के तिरस्कार का पात्र न बने।"

देवपूजा समाप्त होने पर महाराज स्वजन-मंडली के साथ कित्तूर के लिए चल पड़े। कित्तूर पहुँचने पर दुर्ग की बुर्जियों से ३४ तोपों की सलामी हुई। महाराज ने शिवलिंग रुद्रसर्ज से पूछा, "ये तोपें क्यों छूट रही हैं?"

"महाराज के आगमन की खुशी में प्रजा के आनन्द का ठिकाना नहीं है। आपके राज्य के ३४ वर्षों की सूचक ३४ तोपें दागी गई हैं।"

अगले दिन महाराज ने चौकीमठ में जाकर सौ गायें जंगमों[2] को दान की।

---

१. लिंगायतों में शिवसान्निध्य स्वर्गवास या मृत्यु को कहते हैं।

२. लिंगायत संन्यासी।

उसी रात को महाराज की दशा शोचनीय हो गई। राजमहल में चारों ओर विषाद की छाया छा गई। महाराज की शैय्या के चारों ओर रानियां, युवराज, गुरुसिद्दप्पा, दीक्षितजी और सभासद खड़े थे। राजमल में से बाहर सारा कित्तूर ही उमड़ पड़ा था।

रविवार के प्रातःकाल महाराज की अवस्था और बिगड़ गई। राज-गुरु जोर से शिव पंचाक्षरी (नमः शिवाय) का जप कर रहे थे।

सूर्योदय के समय महाराज की जीवन-लीला समाप्त हो गई।

दुर्ग की बुर्जियों से स्वर्गवासी नरेश को श्रद्धांजलि के रूप में पचास तोपें छोड़ी गईं।

राजा का शव अलंकृत करके राजसभा-मंदिर में लाकर रखा गया। अन्तिम दर्शन के लिए कित्तूर के प्रजा-जनों की अपार भीड़ लग गई। रानी चेन्नम्मा ने अपने पति पर मोतियों की आरती उतारी। सात खंड की अर्थी बनाई गई। उसके भीतर चांदी की मूर्त्तियां रखी गई। उसमें राजा का शव रख कर सारे नगर में घुमाया गया। अनन्तर उसे कल्मठ[1] में ले गये। वहां समाधि खोद कर उसकी दीवारों पर कस्तूरी और मार्जारकस्तूरी का लेप करके महाराज को उसमें सदा के लिए सुला दिया।

मिट्टी की काया मिट्टी में मिल गई। किन्तु महाराज का महान् प्रताप, निर्मल अन्त.करण और विद्वत्प्रेम अजर-अमर हो गया।

---

१. लिंगायत लोगों में शव को दफनाने का रिवाज है और उनके समाधि-स्थल को 'कल्मठ' कहते हैं।

: ७ :

कित्तूर-सूर्य के अस्त होते ही वहां अन्धकार घनीभूत हो गया। लोगों के चेहरों पर उदासी की घटाएं दिखाई देती थी। व्यापार बन्द हो गया। किसान खेती का काम भूल गए। पुरवासी राजमहल के सामने बैठे, अनाथ बालकों की तरह बिलखते थे। रानी रुद्रव्वा ने अपना सिर फोड़कर प्राण देने का निश्चय कर लिया। भूमि पर पटक-पटक कर उन्होंने माथा रक्त-रंजित कर लिया।

महल की छोटी खिड़की के पास खड़ी होकर रानी चेन्नम्मा ने जनता की ओर निहारा। उनके हृदय से दुख का सागर उमड़ा पड़ता था, किन्तु उसे दबाकर उन्होंने बड़ी रानी को सांत्वना देते हुए कहा, "बहन, आप राजमाता हैं। आप ही यों अधीर हो जायंगी, तो आपके हजारों बच्चे किसकी शरण में जायंगे?"

"चेन्नाबहन, मुझे मत रोको। मैं स्वामी के बिना एक घड़ी भी नहीं जी सकती।"

चेन्नम्मा ने कहा, "अपना कर्त्तव्य याद कीजिए। कित्तूर की गद्दी सूनी नही रहनी चाहिए। तुरन्त युवराज के राज्याभिषेक की तैयारी होनी चाहिए। राजमाता को स्वयं खड़ी होकर यह शुभकार्य कराना चाहिए।"

"नही चेन्ना, मुझसे कुछ भी नही होगा। मुझे मरने के लिए छोड़ दो।"

राजमहल में किसीमें भी इतना धीरज नही था कि रुद्रव्वारानी के साथ रह सके। चेन्नम्मा को बड़ी चिन्ता थी। वे सोचने लगी कि महाराज तो गए ही, अब क्या बड़ी बहन को भी खोना पड़ेगा? यही चिन्ता उन्हें खाये जाती थी। ऐसी संकट की घड़ी में उन्होंने चिदम्बर दीक्षित को बुलवाया।

दीक्षितजी का शरीर सिंह की भांति था। वह किसीके भी दुख से विचलित होना नहीं जानता था, न किसी भी चोट के आगे झुकना। पर

वही आज बड़ी रानी की दुःख-ज्वाला से संतप्त हो उठा। रानी को देखते ही दीक्षितजी की वेदना उमड़ पड़ी। लेकिन उन्होंने तत्काल अपनेको सुस्थिर किया और दुःख के वेग को दबाकर बोले, "माता!"

रुद्रव्वा ने दुर्बल बच्चे के समान अपने संतप्त नेत्र उठाकर दीक्षितजी की ओर देखा।

दीक्षितजी ने आगे कहा, "माता, हमारे महाराज के जाने, हमारे देश के कीर्तिचन्द्र के अस्त हो जाने के बाद अब किस आशा के सहारे हम जीयें? किस सुख के लिए इन प्राणों को रखें? जीवन के जो दिन बचे हैं, उनमें क्या सुख हम देख सकेंगे? क्या शांति पा सकेंगे? किन्तु फिर भी हमें जीना ही चाहिए। आपको, मुझे और कित्तूर की सारी प्रजा को जीना ही चाहिए। कैलास में शिव के समीप महाराज की आत्मा को शांति पहुचाना हमारा कर्त्तव्य है। इस बड़े काम का बोझ महाराज हमारे कंधों पर डाल गए हैं। युवराज के राज्याभिषेक में अब देर नहीं होनी चाहिए। प्रमाद का अर्थ होगा कित्तूर के शत्रुओं को बुलावा देना। कित्तूराधीश स्वर्गवासी हो गए। आओ हम सब मिलकर ऐसा जयघोष करें कि शत्रुओं छाती दहल उठे। माताजी, यह समय दुख मानने का नहीं है। उठिए, युवराज को आशीर्वाद देकर कित्तूर के बच्चों की रक्षा कीजिए।"

शोक-विह्वल होकर बड़ी रानी ने कहा, "बड़े भैया, मुझपर दया कीजिए।"

"नहीं माताजी, हमें तकदीर से लड़ना है। कर्त्तव्य का जुआ कंधे पर रखकर मरना वीरों का काम है। दुख का शिकार बनकर तो कायर मरते हैं। क्या हमें इस बात का गर्व नहीं होना चाहिए कि मल्लसर्ज महाराज की इस वीरभूमि में कायर नहीं है?"

"भैया, मुझे भूल जाइए।"

"हमारी जिस राज्यलक्ष्मी ने टीपू सुलतान जैसे वीर का मजबूती से सामना किया था, उसे हम कैसे भूल सकते हैं। ऐसा ही था तो आपने अपना दूध पिला कर हमें शूर क्यों बनाया था? अमृत के बदले विषपान क्यों नहीं

कराया था ? शूर बनाने के बदले कायर क्यों नहीं बनाया था। रुद्रव्वा, एक बार अपने कित्तूर पर निगाह डालते, उसपर मडराते गिद्धों की टोली की ओर देखिए। आशा-भरी आखों से आपकी ओर ताकते अपने बच्चों की ओर निहारिए। कित्तूर, आज नहीं तो कल, बलि-वेदी बन जायगा। उसपर हमें अपना सर्वोत्तम देन देनी है।"

कहते-कहते दीक्षितजी का चेहरा तेज से दीप्त हो उठा। आखें चमक उठी। रानी रुद्रव्वा ने गर्दन उठाकर दीक्षितजी के प्रभायुक्त मुख-मंडल को देखा। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो उस वृद्ध ब्राह्मण के रोम-रोम से शौर्य की किरणें फूट रही हों। रानी रुद्रव्वा का शरीर काप उठा। वह दीक्षितजी की ओर देखकर बोली, "दीक्षितजी, आप विश्वास रखें; कित्तूर की रानी कभी कर्त्तव्य के रास्ते से नहीं हटेगी।"

रानी चेन्नम्मा बडी बहन के इस आश्वासन से रोमाचित हो आईं। उन्होंने तत्काल उन्हें आलिंगन में भर लिया!

इसके बाद राज्याभिषेक की विधि में देर नहीं की गई। चिदम्बर दीक्षित ने गुरुलिङ्गप्पा को सलाह दी, "उत्सव की विधियां यदि कुछ जल्दी ही हो जाय तो ठीक है। युवराज को तुरन्त सिंहासन पर बैठा देना चाहिए।" रानी चेन्नम्मा ने भी उनकी इस सलाह का समर्थन किया।

कित्तूर राज्य के सब ग्रामों में राजदूतों द्वारा राज्याभिषेक का शुभ समाचार भेजा गया। नगर में ढिंढोरा पिटवा कर पुरवासियों को तोरणों द्वारा घरों को सजाने की सूचना दी गई।

लोगों को यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि कित्तूर पर छाये काले बादलों के दूर होने का समय आ गया। नगर के सभी मार्ग लोगों ने दिल खोलकर सजाए, प्रत्येक घर को सफेदी से पोतकर गेरू से भाति-भाति के चित्र अंकित किये; चौराहों पर मंडपों का निर्माण किया और बाजारों में सुन्दर द्वार बनाये गए। नगर के धनिकों ने महोत्सव के लिए बाहर से आये हुए अतिथियों के भोजनादि की व्यवस्था की।

राज्याभिषेक के दिन प्रातःकाल युवराज शिवलिंगरुद्रसर्ज ने स्नान

किया, माताओं, राजगु , वृद्ध गुरुसिद्दप्पा और चिदम्बर दीक्षित को प्रणाम किया, सैनिकों की सलामी ली और समस्त पुरवासियों के सम्मुख सिंहासन पर आसीन हुए। नगर के प्रमुख व्यक्तियों ने आकर अपने नए महाराज को भेंटें दीं ।

राजा के सामने भांति-भांति के प्रदर्शन हुए। कुश्ती, तलवारों और भालों की लड़ाई, गाना-बजाना, सबकुछ हुआ। सदाशिव शास्त्री ने वीणा बजाई। कलावती ने नृत्य किया। राजा ने नगर के विशिष्ट व्यक्तियों, युद्ध-कला-प्रवीणो, राज-दरबार के पंडितों और कवियों को यथायोग्य उपहार देकर गौरवान्वित किया ।

सायंकाल को नए महाराज का मान-मर्यादा-पूर्वक घोड़े पर चढ़कर जुलूस निकला। स्त्रियों ने आरती उतारी । धनिकों ने चांदी के सिक्कों की बखेर की। शंख, तुरही, ढोल, शहनाई, दमामा, आदि बाजों के नाद से आकाश गूज उठा ।

उस रात पुरवासियों ने जागरण किया। जहां देखो, वहीं उल्लास दीख पड़ता था । कहीं लावनी गाई जा रही थीं, कही नाटक दिखाया जा रहा था, कहीं नट का तमाशा हो रहा था ।

जब सारा नगर हर्ष से सुधबुध खोकर उत्सव में मग्न था. और रानी चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा और चिदम्बर दीक्षित कित्तूर के भविष्य के बारे में विचार कर रहे थे।

मल्लसर्ज देसाई के निधन से खाली हुए राजसिंहासन पर उत्तराधिकारी शिवलिंगरुद्रसर्ज के आसीन हो जाने पर भी जनता का हृदयसिंहासन खाली रहा । दिवंगत राजा का शौर्य, कला-प्रेम, रसिकता और प्रजा-प्रेम पुत्र में नहीं थे ।

H83|K92K

शिवलिंगरुद्रसर्ज भरसक इस बात का प्रयत्न करते थे कि शासन में कोई त्रुटि न होने पाये, किन्तु उनको अनुभव नहीं था । वे चीजों को उनके हर पहलू से नहीं देख पाते थे । उनके पूर्वापर संबंध से अनभिज्ञ थे । अतः वे मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय पर बहुत भरोसा करते थे । वैसे बड़े दीवान के पद पर गुरुसिद्दप्पा ही थे, किन्तु राजा के मंत्रिमंडल में मल्लप्पाशेट्टी की ही चलती थी ।

GH2802

बाहर की तरह महल के भीतर का वातावरण भी धीरे-धीरे बिगड़ने लगा । राजमाता रुद्रम्मा तो ध्यान-पूजा में लगी रहती थीं । वह संसार से एकदम विरक्त हो गई थीं और लौकिक बातों में उन्हें कोई रस न था । रुद्रव्वा की माता नीलव्वा अन्तःपुर की सर्वेसर्वा थी । उनकी कमर झुकी थी और वह हर काम में टांग अड़ाकर अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने का यत्न करती थीं । राजमहल की पाकशाला की अध्यक्षा महान्तव्वा पर उनका बड़ा विश्वास था ।

यह सब देखकर गुरुसिद्दप्पा को बड़ा क्षोभ हुआ । उनके लिए यह बात भी कम दुःख की नहीं थी कि नीलव्वा सैनिकों के दैनिक भत्ते और दीन-अनाथों की सहायता में भी किफायत कर रही थी ।

गुरुसिद्दप्पा ने प्रयत्न किया कि वह दीवान-पद से अवकाश ग्रहण कर लें, किन्तु चिदम्बर दीक्षित ने पत्र लिखकर उनको ऐसा करने से रोका । रानी चेन्नम्मा ने भी उनके इस विचार पर अपनी असहमति प्रकट की और उनसे वचन ले लिया कि किसी भी स्थिति में वह अपने पद से निवृत्त नहीं होंगे ।

× × ×

दो वर्ष बीत गए। सन् १८१८ में पेशवा और अंग्रेजों में युद्ध हुआ। पेशवा ने कित्तूर से सहायता मांगी।

रानी चेन्नम्मा ने शिवलिंगरुद्रसर्ज को बुलाकर कहा, "बेटा, यह अच्छा है कि इस समय हम पेशवा की सहायता करें। अंग्रेज हम दोनों के ही शत्रु हैं। पेशवा का पतन होने पर हमारा पतन अवश्यम्भावी है।"

शिवलिंगरुद्रसर्ज ने तत्काल उत्तर दिया, "माताजी, पूना के पेशवा हमारे आजन्म वैरी हैं। इस समय उनकी सहायता करने से हमारी गुलामी की शृंखला कभी ढीली न पड़ेगी।"

रानी चेन्नम्मा ने गंभीर होकर कहा, "बेटा, बेड़ियों के लिए हाथ फैलाना कौन-सी बुद्धिमानी है? हम पेशवा की विजय के लिए सहायता करें तो युद्ध के बाद गौरवपूर्ण संधि करके समानता का दावा कर सकते हैं।"

शिवलिंगरुद्रसर्ज पीछा छुड़ाना चाहता था। बोला, "माताजी, मैं मंत्रिमंडल के निश्चय के अनुसार आचरण करूंगा।"

मंत्रिमंडल की बैठक हुई। उसमें गुरुसिद्दप्पा ने रानी चेन्नम्मा की बात का समर्थन किया। पर मल्लप्पाशेट्टी ने उनका प्रबल विरोध करते हुए कहा, "मराठों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इस समय उन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है, इसलिए वे हमारी शर्तें स्वीकार कर लेंगे। पर संकट दूर होने पर वे हमें पहले की तरह सतायेंगे। पेशवा-साम्राज्य के मिट्टी में मिले बिना कित्तूर सिर नहीं उठा सकता। उनका नामोनिशां मिटा देने के लिए अंग्रेजों की सहायता करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर है।"

वेंकटराय ने भी मल्लपाशेट्टी के स्वर-में-स्वर मिलाया।

गुरुसिद्दप्पा बोले, "इस विषय में जल्दबाजी उचित नहीं। राज्य के परमहितैषी सेवक चिदम्बर दीक्षित और रामलिंगप्पा की भी राय जान लीजिए।"

राजा का मन बड़े दीवान की ओर झुकता देखकर मल्लप्पाशेट्टी बोले, "दीवानजी, क्या आप भूल गए कि पेशवा ने हमारे महाराज को धोखे

से पूना ले जाकर कैद में डाल दिया था और कित्तूर के मुंह पर कालिख पोत दी थी ? महाराज जब कित्तूर से गए तो भले-चंगे थे । पूना पहुंचते ही उन्होंने चारपाई पकड़ ली । इसीसे अनुमान होता है कि पेशवा ने उनके भोजन में विष मिलवा दिया था । हमारे महाराज की अकाल मृत्यु से हम सबको दुख के अपार सागर में डूबोने वाले पेशवा को बचाना कहांतक व्यवहार-संगत है ? पेशवा-साम्राज्य मिट्टी में मिलना ही चाहिए ।"

बड़े महाराज के अपमान की याद आते ही शिवलिंगरुद्रसर्ज का मन व्यग्र हो गया । वह क्रोध में भरकर बोले, "मल्लप्पाशेट्टी जो कुछ कहते हैं, वह ठीक है । पेशवा-साम्राज्य मिट्टी में मिलना ही चाहिए ।"

गुरुसिद्दप्पा ने निराशा से सिर झुका लिया । बेबसी की कड़ुवी घूट पीकर रह गये ।

अंग्रेजों ने बेलगांव के किले पर घेरा डाल दिया । जनरल मनरो के सेनापतित्व में अंग्रेजी सेना और पेशवा की मराठा सेना में प्रचंड युद्ध हुआ । मल्लप्पाशेट्टी के इशारे पर शिवलिंगरुद्रसर्ज ने अंग्रेजों की सेना, रसद और तोड़ेदार बंदूकों से सहायता दी ।

पेशवा की लगभग संपूर्ण सेना खेत रही । अंग्रेजों ने बड़े घमंड के साथ बेलगांव के किले पर यूनियन जैक फहराया और मराठों का भगवा झंडा उतारकर फेंक दिया ।

कित्तूर से ठीक मौके पर सहायता मिली और अंग्रेजों की विजय हुई, इसके लिए अपना संतोष प्रकट करते हुए जनरल मनरो ने कित्तूर को चिट्ठी लिखकर सूचना दी कि नई संधि की शर्तें तय करने के लिए प्रतिनिधि भेजें ।

मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय कित्तूर के प्रतिनिधि बनकर बेलगांव गए और जनरल मनरो के साथ निम्नलिखित संधि की शर्तें तय कर आये ।

१. देसाई को अबतक बीजापुर और पेशवा से जो प्रदेश प्राप्त हैं, उन्हें वह अपने अधीन रखें, इसके लिए हम अपनी सहमति प्रदान करते हैं । पहले के समान ही हम आपको सब गौरव प्रदान करेंगे । आपने पेशवा के साथ

युद्ध में हमारा पक्ष लिया, इसलिए हम पेशवा को दिये जानेवाले आपके दो वर्ष के कर के धन में से एक वर्ष का कर माफ करते हैं। शेष धन पहले की तरह हमें देते रहना होगा। हम इस बात को मान्यता देते हैं कि आप भूमिपति हैं। पेशवा की तरह ही हम भी आपको प्रतिवर्ष तीन हजार नौ सौ पचास पये के मूल्य की वस्तुएं उपहाररूप में देंगे।

२. आपकी सनद में लिखे अनुसार आप चार सौ तिहत्तर घुड़सवार और एक हजार पैदल सिपाही रखकर अबतक पेशवा की सेवा करते आये हैं। अब से हम आपको इस सब दायित्व से मुक्त करते हैं। इस सेना के खर्च के लिए आपको खानापुर का जो ताल्लुका जागीर में दिया गया था वह वापस ले लिया जायगा तथा जो २५ हजार रुपये वार्षिक दिये जाते थे, वे भी आगे नहीं मिलेंगे।

संधि की शर्तें सुनकर शिवलिंगरुद्रसर्ज अत्यन्त प्रसन्न हुए और ऐसी लाभदायक शर्तें कराकर आने के लिए राज-सभा में मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय का बड़ा सम्मान किया।

गुरुसिद्दप्पा ने जब ये शर्तें रानी चेन्नम्मा को सुनाईं तो वह आगबबूला हो गई। बोली, "अंग्रेजों ने हमको मांडलिक राजा बना दिया है। खानापुर ताल्लुके पर इनका कौन-सा हक था? हमारे दीवानों ने पूना के पेशवा की दासता के बदले अंग्रेजों की दासता स्वीकार कर ली।"

गुरुसिद्दप्पा ने दुखी होकर कहा, "रानी चेन्नम्मा, नए महाराज को हमारी बात हितकर नहीं मालूम हुई। अतः यह संधि हो जाने के बाद बड़े दीवान का पद न्यायतः मल्लप्पाशेट्टी को मिलना चाहिए। मैंने इस संधि का विरोध किया था। मैं उसको कार्यान्वित करने में असमर्थ हूं।"

रानी चेन्नम्मा ने भृकुटी तानकर कहा, "दीवानजी इस संधि को नहीं चलने देना चाहिए।"

"सो कैसे? क्या विद्रोह करें?"

"यदि अनिवार्य हो जाय तो जरूर वैसा करें।"

"रानीजी, बिना सोचे-समझे कुछ नहीं करना चाहिए। चिदम्बर

दीक्षित हमारे मान्य हैं, समझदार हैं। मैंने उनके पास सब समाचार कहला भेजा है। उनकी राय मिलने के बाद ही हम आगे की अपनी रीति-नीति निर्धारित करेंगे।"

"लेकिन इस बीच मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के ऊपर पूरी निगरानी रखनी चाहिए। उनकी प्रत्येक गतिविधि हमें मालूम होती रहनी चाहिए।"

"इसकी व्यवस्था मैंने कर दी है। वेंकटराय के घर में जो कुछ होता है, वह मुझे सदाशिव शास्त्री से मालूम होता रहता है। मल्लप्पाशेट्टी के घर में होनेवाले षड्यंत्रों की सूचना उनकी रखेली कलावती से मिलती रहती है।"

"शास्त्रीजी के विषय में मुझे कुछ भी संदेह नही है; किन्तु कलावती वेश्या है। उसपर भरोसा कैसे किया जा सकता है?"

"वेश्या होने पर भी वह कलाकार है। कित्तूर की गौरवरक्षा के विषय में वह किसीसे पीछे नहीं है। मनरो और मल्लप्पाशेट्टी में गुप्त पत्र-व्यवहार होने की खबर उसीने मुझे दी थी।"

"गुरुसिद्दप्पाजी, यह तो सांप को दूध पिलाने जैसी बात हुई।"

"लोभ बुरी चीज है, रानीजी। वह बड़े-बड़े बुद्धिमानों को भी बुद्धि-भ्रष्ट कर देता है।"

"राजा क्यों इस तरह से धोखा खा रहे हैं।" कहते-कहते रानी चेन्नम्मा की आंखें डबडबा आईं।

: ९ :

जबसे मल्लप्पाशेट्टी मनरो के पास से नई शर्तें तय करके लौटे, तबसे उनपर शिवलिंगरुद्रसर्ज का विश्वास बहुत बढ़ गया। वह प्रतिदिन कुछ घंटे शेट्टी के घर में बिताने लगे।

धीरे-धीरे राजा के मन में यह विचार भी उठा कि वयोवृद्ध गुरुसिद्दप्पा को पेंशन देकर उनके स्थान पर मल्लप्पाशेट्टी को दीवान पद दें, लेकिन यह देखकर कि जनता के मन में गुरुसिद्दप्पा के लिए बड़ा आदर है और रानियां उनको पितृभक्ति की दृष्टि से देखती हैं, वह इस विचार को कार्यान्वित करते डरते थे। उधर बड़े दीवान की गद्दी पर बैठने का मल्लप्पाशेट्टी में साहस नहीं था। वह डरता था कि गुरुसिद्दप्पा को पदच्युत करने से जनता क्रोध से पागल हो जायगी और भड़क उठेगी।

इसी समय अकस्मात् राजा बीमार हो गए। उन्होंने शय्या पकड़ ली।

राजवैद्य बालप्पा पंडित चिकित्सा कर रहे थे। पर उनका आयुर्वेद विद्या का अपार ज्ञान और अनुभव निष्फल सिद्ध हुआ। रोग ने भयंकर रूप धारण करना प्रारंभ किया। वैद्यजी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए।

राजा के बीमार पड़ने के आठवें दिन उनकी शय्या के पास ही मंत्रिमंडल की बैठक हुई। शिवलिंगरुद्रसर्ज निराशाभरी दृष्टि डालकर बोले, "मेरा अन्त निकट आ गया दीखता है। क्या कित्तूर के राजवंश का मेरे बाद अन्त हो जायगा।"

गुरुसिद्दप्पा ने सांत्वना देते हुए कहा, "नहीं महाराज, आप शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करेंगे। बालप्पा पंडित आपकी रक्षा के लिए यमराज से भी लड़ने को तत्पर हैं।"

पंडितजी चुप रहे।

"नहीं दीवानजी, ब्रह्मा की दी हुई आयु को पंडितजी नहीं बढ़ा सकते।

हमारा जो होगा, हो जायगा, पर यह बताइये कि आगे कित्तूर का क्या होगा ?"

गुरुसिद्दप्पा ने दुख के साथ कहा, "पुत्र गोद लेने के सिवा और कोई उपाय मुझे नहीं दिखाई देता।"

इतने में मल्लप्पाशेट्टी बोले, "पुत्र गोद लेने के लिए धारवाड़ के कलक्टर मिस्टर थैकरे की अनुमति लेनी होगी ?"

उनका इतना कहना था कि रानी चेन्नम्मा की त्यौरी चढ़ गईं। बोली, "हमारे घरेलू मामलों में थैकरे हस्तक्षेप करनेवाले कौन होते हैं ?"

"अब वह ही हमारे स्वामी हैं। पेशवा की जगह राज्य करनेवाले अंग्रेज लोग ही हमारे मालिक हैं।"

चेन्नम्मा ने उसी उत्तेजित स्वर में कहा, "झूठ, बिल्कुल झूठ! कित्तूर अंग्रेजों को अपना स्वामी कभी स्वीकार नहीं करता।"

"अंग्रेजों का विरोध करने की शक्ति कित्तूर में नहीं है, रानीजी।"

"कैसे नहीं है ? हम देखेंगे। अंग्रेज कित्तूर की परीक्षा लेना चाहते हों तो लेकर देख लें। बेलगांव के किले के घेरे के समय आपने उनकी सहायता न की होती तो एक भी अंग्रेज बच्चा इस देश में ढूंढे न मिलता।"

"पर ऐसा करने में राज्य का ही हित प्रमुख था।"

"मल्लप्पाशेट्टीजी, हमें अच्छी तरह मालूम हो गया है कि कित्तूर की कल्याण-कामना करनेवाले कौन हैं।"

इस अविश्वास पर मल्लप्पाशेट्टी ने तनिक तेज होकर कहा, "यह अच्छा नहीं है कि आप राज्य के मामलों में हाथ डालें।"

चेन्नम्मा ने प्रखर स्वर में कहा, "कैसे अच्छा नहीं है ! आप कित्तूर को परायों के हाथ बेच रहे हों तो क्या रानी यों ही हाथ-पर-हाथ धरे बैठी रहे ?"

इसपर मल्लप्पाशेट्टी का पारा चढ़ गया। बोले, "जबान संभालकर बोलिये, रानीजी।"

गुरुसिद्दप्पा अबतक चुप बैठे थे। मल्लप्पाशेट्टी के इस वाक्य पर उन्होंने उबल कर कहा, "आप ही जबान संभालकर बोलें, मल्लप्पाशेट्टीजी।

आपने कित्तूर के महाराज के सामने राजमाता का अपमान करने का साहस कैसे किया ? अब आगे आपने एक भी शब्द मुंह से निकाला तो मेरी तलवार आपका सिर धड़ से अलग कर देगी।"

अपमान से भुनते हुए मल्लप्पाशेट्टी की आंखों से चिनगारियां झड़ रही थीं, बोले, "मैं देखूंगा कि आप पुत्र कैसे गोद लेते हैं।"

इतना कहकर वह बाहर चले गए। गुरुसिद्दप्पा की आंखों के इशारे को समझकर रामलिंगय्या उनके पीछे-पीछे गया।

इसके बाद गुरुसिद्दप्पा ने शाम होने से पहले ही मास्त मरडीगौडा के पुत्र को बुलवाया और उसी दिन गोधूलि वेला में शिवलिंगरुद्रसर्ज ने उस बालक को दत्तक-पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया। उसका नाम 'गुरु-लिंगमल्लसर्ज' रखा गया।

उधर घर पहुंचते ही मल्लप्पाशेट्टी ने एक पत्र में पुत्र गोद लेने की बात लिखकर उसे हरकारे के द्वारा थैकरे साहब के पास भेज दिया।

पर न तो पत्र ही थैकरे साहब के हाथों में पहुंचा और न पत्र ले जाने वाला हरकारा ही वापस आया।

नौवें दिन शिवलिंगरुद्रसर्ज की हालत और भी बिगड़ गई। दोपहर को वह बेहोश हो गए। रुद्रव्वा रानी, चेन्नम्मा रानी दोनों राजा की शैया के पास से नहीं हटीं। राजमहिषी वीरव्वा असहाय होकर अश्रुपात कर रही थीं।

सूर्यास्त के समय राजा को चेत हुआ। उन्होंने दत्तक-पुत्र और वीरव्वा को निकट बुलाकर उनके हाथ रानी चेन्नम्मा के हाथों में थमाकर कहा, "छोटे देसाई के सयाने होनेतक आप ही राज्य चलावें। इनकी रक्षा करने का भार आपपर ही है। मुझे अब आशीर्वाद देकर विदा करें।"

इसके बाद राजा की आंखें सदा के लिए मुंद गईं।

: १० :

राजा की अन्त्येष्टि समाप्त होते ही थैकरे साहब के प्रतिनिधि बनकर आये हुए धारवाड़ के सिविल सर्जन को लेकर मल्लप्पाशेट्टी आये। गुरुसिद्दप्पा ने सिविल सर्जन को दत्तक-पुत्र का परिचय कराया। सिविल सर्जन ने पूछा, "महाराज ने इन्हें कब गोद लिया ?"

"कई दिन हो गए।"

"कलक्टर की अनुमति के बिना आपको पुत्र गोद लेने का अधिकार कहां है ?"

गुरुसिद्दप्पा ने व्यंग से कहा, "कित्तूर की गद्दी पर आपके कलक्टर साहब बैठे हों तो यह प्रश्न पूछा जा सकता है।"

"आपके दत्तक-पुत्र को कलक्टरसाहब मान्यता नहीं देंगे।"

"कोई परवाह नहीं। कित्तूर की प्रजा ने इन्हें मान लिया है।"

"इस विषय में मल्लप्पाशेट्टी ने आपको चेतावनी दे दी थी। फिर भी आपने उनकी बात की उपेक्षा की ?"

"आपके इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने की अपेक्षा कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण काम कित्तूर के प्रधान दीवान को है।"

इतना कहकर गुरुसिद्दप्पा वहां नहीं ठहरे, बाहर चले गए। मल्लप्पाशेट्टी ने धीरे-से कहा, "यह सब षड्यंत्र इसी बुड्ढे और स्वर्गीय महाराज की दूसरी रानी चेन्नम्मा का है।"

सिविल सर्जन की दी हुई रिपोर्ट को ही आधार बनाकर कलक्टर थैकरे ने कम्पनी सरकार को यों लिखकर भेजा —

"सिविल सर्जन के कित्तूर पहुंचने से पहले ही देसाई शिवलिंगरुद्रसर्ज मर गए और उनकी अन्त्येष्टि भी हो चुकी थी। दीवान गुरुसिद्दप्पा ने बताया कि मास्त मरजीगौडा के पुत्र को राजा ने मृत्यु से पूर्व ही गोद ले लिया था। हमारे विश्वास पात्र मल्लप्पाशट्टी से मालूम हुआ है कि यह गोद लेने की बात

निराधार है। राजा के जीवित रहते गोद लेने का संस्कार संपन्न नहीं हुआ था।"

कम्पनी सरकार से थैकरेसाहब को आज्ञा मिली, "हम दत्तक-पुत्र को नहीं मानते। मास्त मरजीगौडा का पुत्र देसाई-वंश का है कि नहीं, यह पूछकर हमको बतलाना चाहिए।"

थैकरेसाहब ने निम्नलिखित रिपोर्ट भेजी—

"देसाई जब जीवित थे तब उन्होंने दत्तक-पुत्र की इच्छा हमपर प्रकट नहीं की। उन्होंने बीमार पड़ने के बाद भी यह बात नहीं उठाई। यह अनुमान किया जा सकता है कि दीवान गुरुसिद्दप्पा, स्वर्गीय शिवलिंगरुद्रसर्ज की माता रुद्रम्मा और उनकी सौतेली मां चेन्नम्मा ने षड्यन्त्र करक देसाई के स्वर्गवास के बाद गोद लेने की विधि की होगी। मेरा विचार है कि देसाई के हस्ताक्षर-सहित पत्र भी पीछे तैयार किया गया है और उस पर देसाई के जाली हस्ताक्षर बना लिये गए है। मैं रीजेंट रानी चेन्नम्मा को आज्ञा देता हूं कि मल्लप्पाशेट्टी को प्रधान दीवान बनाकर सब अधिकार-सूत्र उनके हाथ सौंप दें।"

थैकरे साहब का आदेश-पत्र हाथ में लेकर मल्लप्पाशेट्टी महल में आये और रानी चेन्नम्मा से मिलने की इच्छा प्रकट की।

रानी ने गुरुसिद्दप्पाजी को बुलवाया और भेंट करने के भवन में जा बैठी। मल्लप्पाशेट्टी ने कृत्रिम विनय दिखलाते हुए कहा, "रानीजी, मुझे खेद है कि मैं आज बड़ा ही अप्रिय संवाद लेकर आया हूं।"

"आपको जो कुछ कहना है, वह शीघ्र कह डालिए।"

"स्वर्गीय महाराज के गोद लेने की बात कम्पनी सरकार ने स्वीकार नहीं की।"

"हमें उनकी स्वीकृति की कोई आवश्यकता भी नहीं। आप कभी यह न भूलिए कि कित्तूर स्वतंत्र राज्य है। कम्पनी सरकार का नाम लेकर आप हमें भय दिलाने आए हैं?"

"नहीं, धारवाड़ के कलक्टर साहब का पत्र आया है।"

मल्लप्पाशेट्टी का दिया हुआ पत्र गुरुसिद्दप्पा ने पढ़कर रानी को

सुनाया। सुनकर चेन्नम्मा क्रोध से तमतमा उठीं। उनकी आंखों से चिनगारियां निकलने लगीं। गुरुसिद्दप्पा के हाथों से पत्र लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिये और गरज कर बोली, "कित्तूर को तुम्हारे हाथों में सौंपना ? क्या तुमने समझा है कि कित्तूर का राजवंश समाप्त हो गया ? कित्तूर की वीर प्रजा मर गई ? कित्तूर को भले ही मुझे अपने ही हाथ से आग लगाकर भस्मीभूत करना पड़े, पर इस बात का कभी स्वप्न में भी खयाल न करना कि मैं उसे तुम्हारे या तुम्हारे स्वामी के हाथों में सौंपूंगी। जबतक चेन्नम्मा की देह में एक बूंद भी रक्त शेष है, कित्तूर किसीके सामने मस्तक नहीं झुकाएगा।"

"आपके इस रंगढंग से तो युद्ध अनिवार्य हो जायगा।"

"अनिवार्य हो तो हो, हम तैयार हैं। मृत्यु तो हमारे लिए खिलवाड़ है। हम आत्म-समर्पण के लिए कदापि सहमत नहीं हो सकते। आपके थैकरे-साहब को हमारा यही दो टूक उत्तर है।"

मल्लप्पाशेट्टी ने धारवाड़ में थैकरेसाहब को लिखा—

"रानी चेन्नम्मा मानवी नहीं, दानवी है। उसका खात्मा किये बिना अंग्रेजों का प्रभुत्व चिरस्थायी नहीं हो सकता।"

× × ×

कित्तूर पर आई विपदा को देखकर रानी चेन्नम्मा को अपार दुःख हुआ। किन्तु अब दुःख के सामने सिर झुकाकर आंसू बहाने का समय भी तो नहीं था। वह भली प्रकार समझती थी कि मल्लप्पाशेट्टी की सूचना मिलते ही थैकरे सेना लेकर कित्तूर पर चढ़ाई किये बिना न रहेगा।

रानी ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि कित्तूर की प्रजा शस्त्रों से सुसज्जित होकर थैकरे के आक्रमण का सामना करने को तत्पर रहे और थैकरे की सेना के किसी भी आदमी को जल और भोजन-सामग्री न दे। वे जिस दिन आवें, उस दिन नगर भर के लोग अपने द्वार बन्द करके अपना असंतोष प्रकट करें।

रानी के दूत राज्य भर के गांवों में जाकर रानी का संदेश दे आये। सबने अपनी-अपनी बंदूकें और तलवारें तैयार करनी आरम्भ कर दीं। नगर

के बाहर की चेलुवादी गली की गंगव्वा ने लड़कियों को इकट्ठा करके रानी का संदेश दिया। एक लड़की ने पूछा, "हमें भी युद्ध करना है क्या, गंगव्वा ?"

"क्यों नहीं ? जब रानी युद्ध के लिए आगे बढ़ रही हैं तो क्या हम चुप बैठी रह सकती हैं ?"

"गंगव्वा, हमको युद्ध का अभ्यास नहीं है।"

"गोरों को देखते ही जो हाथ पड़े, ले लो। उसके लिए अभ्यास की क्या जरूरत है ?"

× × ×

नगर के पश्चिमी भाग में सैदनसाहब की जीर्णोद्धार कराई हुई मसजिद थी। मसजिद के समीप ही मुसलमानों की बस्ती थी। सैदन वहां एक झोंपड़ी में रहता था।

सैदन का सोलह वर्ष का लड़का बाला अपने समवयस्क लड़कों का दल बनाकर उनको कवायद सिखाता था। लड़के का खेल देखकर सैदन ने पूछा, "कवायद सिखलाकर क्या करेगा, बाला ?"

"हम युद्ध करेंगे।"

"किससे ?"

"फिरंगियों से ?"

"बाला, तुम जैसे छोटे लड़के क्या लड़ सकते हैं ?"

"देखते रहो दादा, रऊफ मुझको तलवार चलाना सिखला रहा है। हम फिरंगियों के ऊपर टूट पड़ेंगे और उनकी तोपें छीन लेंगे।"

"बाला, मौलवी साहब नाराज हैं कि तुम लोग मदरसा नहीं जा रहे हो।"

"दादा, मुझे मदरसा-वदरसा कुछ नहीं चाहिए। जब फिरंगी सरकार हमारे कित्तूर को निगलने आ रही है तो क्या हम मदरसे में बैठे ऊंघते रहें ?"

"बाला, तुम्हारा पागलपन देखकर रानी गुस्सा होंगी।"

"नहीं दादा, सवेरे रऊफ हमको तलवार के हाथ सिखा रहा था।

कासिम ने दौड़े-दौड़े आकर कहा, 'रानीजी घोड़े पर जा रही हैं।' हम सब उसके पीछे दौड़े। रानी सैनिकों की सलामी ले रही थीं। जब रानी चलने को हुई तो मैंने उनको मुजरा करके कहा, रानीजी, हमारी सलामी भी मंजूर कीजिए।"

"तू बड़ा शरारती है, बाला," सैदन ने कहा। "फिर आगे क्या हुआ?"

"रानी ने हँसकर कहा, 'अच्छा, मैं तुम लोगों की सलामी जरूर लूंगी।' और तब हमने उन्हें सलामी दी। कवायद और तलवार की लड़ाई दिखाई।"

"रानी ने तेरी पीठ नहीं थपथपाई?" सैदन ने पूछा।

"नहीं दादा, मेरे सिर पर हाथ रखकर उन्होंने पूछा, 'तू किसका लड़का है?' मैंने कहा, 'मैं अमटूर सैदनसाहब का लड़का हूं। मेरा नाम बाला है।' रानीजी ने थोड़ी देर सोचकर कहा, 'क्या मसजिद की मरम्मत करानेवाले सैदनसाहब का?'।"

"मैंने कहा, जी हां।"

वृद्ध सैदन की श्वेत दाढ़ी के ऊपर कई बूंदें मोतियों की तरह टपक पड़ीं। वह बोला, "रानी मुझे भूली नहीं!"

बाला बोला, "रानी ने दीवानसाहब से कहा, 'इन लड़कों के खान का इंतजाम कर दीजिए। इनको हमारे भंडार में ले जाकर ढाल-तलवार दीजिए।' फिर मुझसे बोलीं, 'बाला, तुझे और तेरे साथियों को चित्तूर के लिए जान देने को तैयार रहना चाहिए।' मैंने खुशी से उछलकर कहा, 'हम हमेशा तैयार हैं, रानीजी।' रानीजी ने मुस्कराते हुए कहा, 'दीवानजी इस खुशकिस्मती से बढ़कर और क्या चाहिए?'"

सैदन ने अभिमानपूर्वक कहा, "शाबाश मेरे बच्चे!" और उसे गले लगा लिया।

बाला बोला, "दादा, मैं तुम्हारे लिए भी एक तलवार लाऊंगा।"

"क्यों?"

"हमारे साथ तुम, इमाम काका, मौलवीसाहब सबको लड़ना है।"

"ठीक है बेटा, हरेक मुसलमान को कित्तूर की इज्जत को बचाने के लिए लड़ना ही चाहिए। कित्तूर जिन्दाबाद।"

बाला ने जोर से पुकारा, "रानीजी जिन्दाबाद!"

उसके साथियों ने भी उसके स्वर-में-स्वर मिलाया। उनके ऊंचे स्वर से आकाश गूंज उठा।

× × ×

बैलहोंगल के मारुति-मंदिर के बाहर का मैदान रण-सज्जा से सज्जित वीरों से भर गया।

किसान अपनी खेती छोड़कर आ गए।

मजदूरों ने अपने औजार छोड़कर हाथ में तलवार पकड़ ली।

खेती का काम करनेवाली स्त्रियां कुदाली, फावड़ा, बेलचा, सब्बल, लाठी, आदि लेकर आईं।

दीक्षितजी के आते ही लोगों ने "कित्तूर की जय।" के नारे लगाकर उनका अभिवादन किया।

नागरकट्टी, रायण्णा, चन्नबसप्पा, गजवीर, बालण्णा के दलों का निरीक्षण करके दीक्षितजी ने एक ऊंचे टीले पर खड़े होकर कहा, "कित्तूर राज्य के वीर युवको और युवतियों, हमारी रानी की आज्ञा तुम लोगों ने सुन ली है। कित्तूर पर विपदा के बादल मंडरा रहे हैं। जिन फिरंगियों ने टीपू सुलतान और पेशवा राज्य को मिट्टी में मिला दिया, वे अब कित्तूर को निगलने के लिए आ रहे हैं। फिरंगियों ने देखा कि कित्तूर के राजा बालक हैं, इसलिए उसे हड़पने का यही अनुकूल अवसर है। कम्पनी-सरकार यह नहीं जानती कि हमारे २८६ गांवों में रहनेवाले ७५,००० निवासी सारी दुनिया को हिला सकते हैं! उसको यह जतलाना हमारा कर्त्तव्य है।

"थैकरे की फौज के यहां पहुंचने से पहले ही तुम लोगों को कित्तूर पहुंचकर रानीसाहब के हाथ मजबूत करने चाहिएं। युद्ध में जान भी चली जाय तो परवा नहीं। तुम्हारी समाधियों की मिटटी के कण-कण से वीर-

महावीर उत्पन्न होकर धर्मयुद्ध को जारी रखेंगे। कोई भी शत्रु को पीठ दिखाकर न लौटे।

"हमारी रानी सामान्य स्त्री नहीं हैं। वह साक्षात् दुर्गा का अवतार है। उन माता के झंडे के नीचे खड़े होकर कित्तूर के लिए संग्राम करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मेरे वीर सिपाहियों, तुम लोगों का कर्त्तव्य है कि कोई रानीजी का बाल भी बांका न करने पाए। बोलो 'कित्तूर की जय। रानी की जय'!"

जन-समूह ने समवेत स्वर से घोष किया, "कित्तूर की जय! रानी चेन्नम्मा की जय।"

× × ×

कित्तूर के गांव-गांव में ये शब्द गूंज उठे। रानी का जयघोष दावाग्नि की तरह सब जगह फैल गया। बूढ़े लोग भी भाला, छुरा, हंसिया गंडासा, दरांती लेकर कित्तूर की ओर दौड़ पड़े।

रानी चेन्नम्मा ने नगर के आठों कोनों पर सेना का पहरा बिठा दिया और किले की निगरानी करनेवाले किलेदार शिवबसप्पा को सावधान रहने के लिए कह दिया। सब सैनिकों को और अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर आई हुई प्रजा को किले के अन्दर करके फाटक बन्द करा दिया। अमटूर सैदन का पुत्र बाला और उसके साथी भी किले के अन्दर आ गये।

: ११ :

धारवाड़ के कलक्टर और उनके राजनीतिक प्रतिनिधि थैकरेसाहब को यह अच्छी तरह मालूम हो गया कि कित्तूर किसी भी तरह उनके सामने घुटने नहीं टेकेगा । कित्तूर में होनेवाले युद्ध की तैयारी की ब्यौरेवार खबर थैकरे साहब को देते हुए मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय ने कहा, "रानी के पास ४७३ घुड़सवार और एक हजार पैदल सिपाहियों से अधिक सेना नहीं है । हाल ही में उन्होंने गांववालों को सेना में भरती किया है । वे तलवार की मूंठ भी पड़कना नहीं जानते । आप कुछ भी चिन्ता न करें । हमारी तोपों की आवाज सुनते ही वे लोग भयभीत होकर भाग निकलेंगे । कित्तूर के सैनिक भी आपकी सेना के समान कुशल नहीं है । आप गोलन्दाज सेना के साथ कित्तूर पर धावा बोल दें तो राजधानी आसानी से आपके हाथ आ जायगी ।"

थैकरेसाहब ने २० नवम्बर की प्रातःकाल कप्तान ब्लेक, कप्तान सिविल और लेफ्टिनेंट डेटन की गोलन्दाज सेना को साथ लेकर अपने सेक्रेटरी स्टीवेंसन और इलियट के साथ कित्तूर के बाहर पड़ाव डाल दिया।

नगर की हालत देखकर थैकरे के आश्चर्य का ठिकाना न रहा । आदम-न-आदमजात । चारों ओर सन्नाटा ! ऐसा प्रतीत होता था, मानो वह कोई उजड़ा हुआ नगर हो ।

थैकरे ने नाराज होकर मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय से कहा, "आप लोग तो कहते थे कि वहां युद्ध की तैयारियां हो रही हैं । रानी ने पांच हजार सेना इकट्ठी की है । कहां है वह सेना ?"

"साहब यह तूफान से पहले की शांति है ।" मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "यह बात बिल्कुल ीक है कि सेना इकट्ठी की गई है, किन्तु हमने यह नहीं देखा कि रानी ने उसे कहां छिपा कर रखा है ।"

"हमारे साथ मजाक करते हो ? तुम्हारे जासूसों का क्या हुआ ?"

"जो वहां जाते हैं, वे वापस नहीं आते।"

"तुम बिल्कुल मूर्ख हो। तुम पर भरोसा करके हमने बड़ा धोखा खाया।"

"हम आपको धोखा नहीं देते, सरकार। गुलामों पर आप गुस्सा न करें।"

"कम-से-कम किले के अन्दर की गति-विधि का तो पता लगाकर आओ।"

"रानी का हुक्म है, हमें किले के भीतर न घुसने दिया जाय।"

"इस मामले में हम तुमपर कहांतक भरोसा कर सकते हैं?"

"हजूर, आप पूरा भरोसा कर सकते हैं। हमने कित्तूर को आपके हाथों में सौंप देने का बीड़ा उठाया है।"

"तुम्हारे जासूस चालाक नहीं हैं। किले के भीतर तुम जा नहीं सकते! हमको ठीक खबर कैसे मिल सकती है?"

"राजमहल की रसोई की अध्यक्षा महान्तव्वा हमारे साथ है। किले का मुख्याधिकारी शिवबसप्पा भी अपना ही आदमी है। उनसे हमको खबरें मिलती रहती हैं।"

"नगर के गण्यमान्य लोगों और मुखियों को हमारे पास आने को कहो। हम उनकी मार्फत रानी से सुलह की बात करेंगे।"

"अच्छा, सरकार।"

मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय चले गए और थोड़ी देर बाद मुंह लटकाये लौटकर आये। बोले, "हमने बहुत कोशिश की, पर कोई आता ही नहीं है।"

"इस नगर के लोगों के दिमाग चढ़ गए हैं। कम्पनी-सरकार की बेइज्जती करने की इनकी जुर्रत देखो!"

"इस सबका कारण रानी चेन्नम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा हैं। इन दोनों का खात्मा किये बिना कित्तूर आपके हाथ नहीं आ सकता। हम आपका काम सिद्ध करने को तैयार हैं।"

"सिर्फ जबान से कहने से क्या फायदा ?"

"फायदा ! वही तो हम आपसे जानना चाहते है ।"

"आप क्या चाहते हैं ?"

कुछ देर चुप रहकर मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "कित्तूर राज्य के ो टुकड़े करके मुझको और वेंकटराय को बांट दीजिए । रानी आपको जो कर देती हैं, उससे दुगना हम आपको देते रहेंगे ।"

थैकरे ने कप्तान ब्लैक की ओर देखा । ब्लैक मल्लप्पाशेट्टी से बोला, "आपको रानी और गुरुसिद्दप्पा को कैद करके हमारे हाथों सौपना पड़ेगा । "

"अगर कैद न कर सके तो उनकी लाशें लाकर देंगे ।"

कप्तान ब्लैक की सूचना के अनुसार थैकरे ने कहा, "हमें मंजूर है ।"

इसके बाद थैकरे ने रानी चेन्नम्मा के नाम निम्नलिखित पत्र लिख कर भेजा--

"आप पर कंपनी सरकार का १,७५,००० रुपये का ऋण है । अभी तक चुकाया नहीं गया । यह रकम जल्दी ही भेजनी चाहिए । दत्तक-पुत्र तथा राज्य की पुनर्व्यवस्था के मामलों पर भी आपसे चर्चा करनी है । कुछ फुरसत निकालकर आप ौरन आवें ।"

रानी चेन्नम्मा के पास से कोई उत्तर नहीं आया ।

× × ×

उसी दिन सायंकाल अंधेरा हो जाने पर एक स्त्री घूंघट निकाले हुए मल्लप्पाशेट्टी की हवेली में आई । मल्लप्पाशेट्टी उसको अपनी अन्दर की कोठरी में ले गए और पूछा, "क्या खबर है महान्तव्वा ?"

कोई खास बात नहीं है । आपने मुझे कैसे याद किया ?"

"किले में इतना सख्त पहरा रहते तू कैसे आई ?"

"नीलव्वा से राहदारी का परवाना लेकर आई हूं । किलेदार शिवबसप्पा स्वयं मुझे छोड़ गया है ।"

"रानी क्या कहती हैं ?"

"युद्ध की तैयारी कर रही हैं।"

"हमने रानी और गुरुसिद्दप्पा को पकड़कर कम्पनी सरकार के हाथ में न सौंपा तो हमारा जीना दूभर हो जायगा। थैकरेसाहब हमारे ऊपर दांत पीस रहे हैं।"

"और सबको झुकाया जा सकता है, पर रानी चेन्नम्मा को झुकाना भगवान के लिए भी संभव नहीं है।"

"महान्तव्वा, भगवान भी जो काम नहीं कर सकते, वह तू करके दिखा सकती है।"

यह कहकर मल्लप्पाशेट्टी ने एक छोटी थैली खोलकर उसमें से सोने की मुहरें महान्तव्वा की गोद में डाल दीं।

महान्तव्वा उरा सुवर्णराशि को एकटक देखती रही।

"इतना सोना कभी तेरे हाथ में आया है, महान्तव्वा?"

"नहीं, मालिक।"

"मैंने चार सौ मुहरें तेरे लिए सुरक्षित करके अलग रख दी हैं। हमारा काम सिद्ध होते ही उन्हें तुम्हारे हाथ सौंप दूंगा।"

"मुझे क्या करना है सो बतलाइये।"

"दिल मजबूत करके करोगी?"

"हां, सरकार।"

"कम्पनी सरकार से कहकर तुझे जागीर दिला दूंगा।"

"मालिक, मुझे तो आप ही का भरोसा है। इस गरीब को चाहे दूध में रखिए, चाहे पानी में।"

"ध्यान से सुनो। रानी चेन्नम्मा को खाना कौन परोसता है?"

"मैं ही परोसती हूं, किन्तु कुछ दिनों से वह भोजन ही नहीं कर रही हैं।"

"कल खीर बनाकर रानी को खिलाओ। तुम्हारी बनाई हुई खीर का नाम सुनते ही किसके मुंह में पानी न आ जायगा।"

महान्तव्वा मौन साध गई।

मल्लप्पाशेट्टी ने उसके हाथ में एक छोटी-सी पुड़िया देकर कहा "महान्तव्वा, खीर में यह चूरन डालने से स्वाद नहीं बिगड़ेगा और हमारा काम भी बन जायगा।"

पुड़िया पकड़ते हुए महान्तव्वा का हाथ थरथर कांपने लगा।

"क्यों, अभी से डर रही हो ?"

"नहीं, सरकार !"

"तुम सफल नहीं हुई तो जानती हो, क्या होगा ?"

महान्तव्वा कांप उठी। उसके मुंह से बोल ही नहीं निकला।

मल्लप्पाशेट्टी ने कहा, "तुम्हारी ही नहीं, हम सबकी जान की खैर नहीं है। सफल हो जाओगी तो कित्तूर का राज्य हमारा है। देशनूर की जागीर तुम्हें मिलेगी।"

"काम पूरा हो जाने पर मुझे भूल मत जाना, सरकार।"

मल्लप्पाशेट्टी ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, "भगवान की कसम, मैं नहीं भूलंगा।"

महान्तव्वा अपना मुंह पूरी तरह घूंघट से ढककर चली गई।

मल्लाप्पाशेट्टी अपने नए षड्यन्त्र के लिए थैकरेसाहब से शाबाशी लेने घर से चल दिए।

इसी समय एक और स्त्री इन दोनों की बातचीत आड़ में खड़ी होकर सुन रही थी। वह भी अपना मुंह घूंघट से ढककर हवेली के पिछले द्वार से बाहर निकल गई।

: १२ :

सदाशिव शास्त्री वीणा को ठीक कर रहे थे। उसी समय उनको अपने सामने कोई छाया हिलती दिखाई दी। वह चौंक पड़े। पूछा, "कौन ?"

कोई उत्तर नहीं मिला।

उन्होंने सोचा, "हो सकता है, यह मेरा भ्रम हो।" और वह फिर वीणा को ठीक करने लगे।

छाया फिर चलती दिखाई दी।

शास्त्रीजी ने जोर से पूछा, "कौन है ?" और उठकर बाहर आए।

"धीरे-से बोलिए, गुरुजी।"

"कौन ? कलावती ?"

"हां।"

"भीतर आओ।"

"दिया मद्धिम कर दीजिए।"

शास्त्रीजी ने दीये की रोशनी कम कर दी और बाहर का द्वार बंद कर दिया। फिर बोले, "इतनी रात गए कैसे आई ? राजधानी में बहुत-से जासूस इधर-उधर घूम रहे हैं।"

"गजब हो गया, गुरुजी। रानी की जान लेने का षड्यन्त्र चल रहा है !"

"जान लेने का ? किसकी ओर से ?"

कलावती ने मल्लप्पाशेट्टी और महान्तव्वा में जो बातचीत हुई थी, वह बताते हुए कहा, "आप अभी राजमहल में जाकर रानी को सावधान कर आइए।"

"मैं अभी महल से आ रहा हूं। पर चिन्ता मत करो। मैं फिर जाता हूं।"

"जल्दी जाइए, गुरुजी। रानी के प्राण आपके हाथ में हैं।"

"और तुम्हारे प्राण ?"

"मेरी चिन्ता न कीजिए। मैं तो कुलभ्रष्टा हूं। मर भी जाऊं तो मेरे लिए कौन रोनेवाला बैठा है? पहले रानी को बचाइये।"

शास्त्रीजी कलावती की ओर देखकर बोले, "कौन कहता है तुम्हें कुलभ्रष्टा कलावती! कित्तूर की राज्यलक्ष्मी की रक्षा करने के लिए आई हुई कुलदेवी हो।"

इतना कहकर वह तेजी से बाहर चले गए।

कलावती घूंघट डालकर अपने घर लौट आई। यह देखकर कि मल्लप्पाशेट्टी अभी घर नही लौटे, उसे बड़ी शांति मिली।

× × ×

अगले दिन दोपहर को राजमहल की रसोई में महान्तव्वा बड़ी दौड़-धूप कर रही थी। वह दुंडव्वा और गौरव्वा का काम भी बड़ी खुशी से स्वयं ही कर रही थी।

उसने चांदी के चार पटड़े बिछाकर उनके सामने चार छोटे पटरों पर सोने की थालियां रक्खीं। हर पटरे के पास चांदी के लोटे में केसर डाला हुआ पानी रख दिया। फिर अपने आंचल से थालियां पोंछती हुई बोली, "बड़े महाराज की मृत्यु के बाद रानीजी ने पहली बार मीठा भोजन करना स्वीकार किया है।"

दुंडव्वा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, "महान्तव्वा, तुमने उन्हें कैसे राजी कर लिया?"

वह बोली, "मैंने आंसू गिराते हुए रानीजी से कहा, 'मेरे हाथ की खीर खाये आपको बहुत दिन हो गए। आप कल या परसों लड़ाई पर चली जायंगी। फिर खीर खिलाना मेरे भाग्य में होगा या नहीं!'" मेरे इतना कहने पर रानी पिघल गईं और बोलीं, "अरी, यह कौन-सी बड़ी बात है, महान्तव्वा। क्यों सोच करती है? कल खीर बना। मैं, रुद्रव्वा, वीरव्वा, शिवलिंगव्वा सब खायंगी।"

गौरव्वा ने अभिमान-पूर्वक कहा, "महान्तव्वा, तू तो बड़ी जादूगरनी है। कैसे-कैसों को अपने जाल में फंसा लेती है!"

रानी चेन्नम्मा बड़ी बहन, छोटी बहन और पुत्रवधू को साथ लेकर भोजन के लिए बैठ गई।

रुद्रव्वा रानी ने कहा, "महान्तव्वा, मेरे लिए तो भात ही काफी है। बाकी सब लोगों को खीर परोसो।'

महान्तव्वा ने रुद्रव्वा के लिए भात परोसा और शेष लोगों के लिए चांदी के कटोरों में खीर दी।

चेन्नमा रानी ने हाथ में खीर का कटोरा उठाकर कहा, "महान्तव्वा, अपनी बनाई हुई खीर तू नहीं चखेगी क्या ?"

"आप खाइये। मैं बाद में खाऊंगी।"

"नहीं, हमारे साथ आकर बैठ।"

"नहीं, कहीं ऐसा हो सकता है ? मैं तो आपकी दासी हूं।"

"मैं तुझे हुक्म देती हूं। क्या तू मेरा हुक्म नहीं मानेगी ?"

महान्तव्वा को थरथर कांपती हुई देखकर रुद्रव्वा रानी ने सहानुभूति-पूर्वक कहा, "रहने दो, चेन्नम्मा। उसका लजाना ठीक ही है।"

चेन्नम्मा ने गंभीर होकर कहा, "बड़ी बहन, चेन्नम्मा के साथ बैठकर भोजन करने में शरमानेवाली इस महान्तव्वा को छोटी रानी को विष मिला भोजन देते ग्लानि नहीं हुई ?"

"विष मिला भोजन !"

इतना सुनते ही सबने थालियां दूर सरका दीं।

महान्तव्वा बिना विचलित हुए बोली, "छोटी रानी मजाक कर रही हैं !"

रानी चेन्नम्मा ने खड़े होकर ताली बजाई। फौरन पहरे के दो सिपाही भीतर आ गए। रानी ने उनको आज्ञा दी,"महान्तव्वा को दीवानजी के पास ले जाओ। उनसे कह देना कि इसकी बनाई हुई खीर इसीको पिलाई जाय। इससे यह भी पूछा जाय कि ऐसा नीच काम इसने किसके कहने से किया ?"

इतना कहकर वह रुद्रव्वा और शिवलिंगव्वा के साथ बाहर चली गई।

इस घटना से चेन्नम्मा के आत्मविश्वास को बड़ा धक्का लगा। बंदी

सिंहनी की भांति अपने कमरे में टहलती हुई बोली, "मैं नहीं जानती थी कि यहां भी द्रोही मौजूद हैं और हमारे महल में विष देनेवाले भी हो सकते है ?" वह इतनी आत्मस्थ हो गई कि उन्हें पता भी न चला कि गुरुसिद्दप्पा आये हैं और म्लान मुख से पास ही खड़े हैं।

गुरुसिद्दप्पा ने कहा, "रानीजी !"

चेन्नम्मा जैसे सोते से जागी, "क्या है, दीवानजी ?"

"महान्तव्वा को हमने खीर पिला दी।"

"क्या हुआ ?"

"तड़प-तड़प कर हाथ-पैर पटकने लगी। मुंह से झाग निकलने लगे। धीरे-धीरे मुंह नीला पड़ने लगा। पागल की तरह भयानक चीत्कार करते हुए उसके प्राण निकल गए।"

"कुछ पता चला कि इस कुचक्र के पीछे कौन है ?"

"जी हां, मालूम हो गया।"

"कौन है ?"

"मल्लप्पाशेट्टी ने चालीस सोने की मुहरें देकर इस नीच कार्य के लिए महान्तव्वा को तैयार किया था।"

"मल्लप्पाशेट्टी का हमने क्या बिगाड़ा था, दीवानजी ?"

"मल्लप्पाशेट्टी और वेण्कटराय ने थैकरे के साथ मिलकर एक करार किया है !"

"हमारे दीवानों ने थैकरे के साथ करार किया है ?"

"जी हां, और करार भी ऐसा-वैसा नहीं—यह कि आपका और मेरा सिर मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय थैकरे को दे देंगे। उसके बदले में थैकरे कित्तूर राज्य आधा-आधा दोनों में बांट देंगे। परमपिता की कृपा से हम भारी संकट से बच गए। खीर में विष मिलाने की बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

"कल रात सदाशिव शास्त्री यहां से गए कि कुछ समय बाद फिर लौट आये। उन्होंने मुझे बताया कि मल्लप्पाशेट्टी ने महान्तव्वा को आज्ञा दी है कि भोजन में विष मिलाकर हमें दे दे। वे चेतावनी दे गए थे कि महान्तव्वा

की बनाई हुई कोई भी चीज हम न खायं।"

"शास्त्रीजी को यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"कलावती ने महान्तव्वा और मल्लप्पाशेट्टी की बातचीत छिपकर सुन ली थी। उसने तुरन्त शास्त्रीजी को सूचना देकर भेज दिया।"

"कलावती ने ! मल्लप्पाशेट्टी की..."

"जी हां, उसीने।"

"लेकिन दीवानजी, अगर मल्लप्पाशेट्टी को मालूम हो गया कि कलावती ने मेरी जान बचाई तो अनर्थ हो जायगा। उसकी रक्षा की ओर भी ध्यान देना चाहिए।"

"थैकरे आपके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"कर रहे होंगे, लेकिन इसमें शक नहीं कि थैकरे अब देर नहीं करेंगे। कल किले पर घेरा डालकर युद्ध आरम्भ कर देंगे।"

"युद्ध का नतीजा क्या होगा, कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"क्यों नहीं कहा जा सकता ! हम राज्य के लालच से नहीं, आत्मरक्षा के लिए युद्ध कर रहे हैं। हम कित्तर की मान-रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। इसलिए हमारी विजय निश्चित है।"

"हां रानी, जय अवश्य होगी।"

उसी रात को रानी चेन्नम्मा ने किले के भीतर सब सैनिकों की सभा बुलाई। सैन्य-व्यूह की रचना के बारे में सबको हिदायतें दीं। फिर अपने अंगरक्षक रायण्णा और बालण्णा को पास बुलाकर कहा, "मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारी पराजय कभी नहीं होगी। फिर भी हमें हरेक बात के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि हार हो तो तुम रुद्रम्मा रानी, शिवलिंगव्वा रानी और छोटे देसाई को गुप्तद्वार से ले जाकर बैलहोंगल में चिदम्बर दीक्षित की देखरेख में रख देना।"

"आपकी रक्षा कौन करेगा ?"

"मेरी रक्षा ! भवानी करेंगी।"

गुरुसिद्दप्पा ने दृढ़ता से कहा, "यह कभी नहीं हो सकता। आपकी

रक्षा के लिए ठीक व्यवस्था होनी ही चाहिए। यदि आपको कुछ हो गया तो कित्तूर की कमर ही टूट जायगी।"

मुस्कराती हुई चेन्नम्मा बोली, "मेरी रक्षा के लिए कोई रहना ही चाहिए ?"

"जी हां, यह परमावश्यक है।"

रानी चेन्नम्मा ने सैदन के बेटे बाला को पास बुलाया। बोली, "मैं अपनी अंगरक्षा का भार बाला को सौंपती हूं।"

"पर बाला तो अभी लड़का है। इसके सिवा वह....."

"बाला, सुन रहे हो, दीवानजी क्या कह रहे हैं ?"

बाला ने रानी चेन्नम्मा के सामने खड़े होकर तलवार निकाली और सिर झुकाकर दृढ़ता के साथ बोला, "रानीजी, छुटपन में ही मेरी मां मर गई। मां का प्यार कैसा होता है, मैं नहीं जानता। जिस दिन आपने हमारी कवायद देखकर हमारी सलामी ली थी, उस दिन की अपने दिल की बात मैं कह नहीं सकता। मैंने खुदा के सामने कसम खाकर कहा था, 'यही मेरी मां हैं। यही हमारे कित्तूर की माता हैं। मैं उनके लिए अपनी जान दे दूंगा।' मैं सबके सामने कसम खाकर कहता हूं कि मैं कभी नमक-हरामी नहीं करूंगा।"

रानी ने कहा, "मैं तुम्हें ही अपना अंगरक्षक बनाती हूं। उठो बाला।"

फिर अपनी सेना और एकत्र प्रजा को लक्ष्य करके बोलीं, "वीर सरदारो, शूर सैनिकों, कल कित्तूर के भविष्य का निर्णय होगा। भवतः थैकरे कल युद्ध आरम्भ कर देगा। वह युद्ध न भी आरम्भ करे तो भी हमें ही उसकी सेना पर आक्रमण करके उसे कित्तूर से बाहर खदेड़ना पड़ेगा। युद्ध अनिवार्य है। कित्तूर के स्वातंत्र्य-रक्षा के इस संग्राम में संभव है कि मेरी मृत्यु हो जाय। यह भी हो सकता है कि आप लोगों की जान पर भी आ बने। कोई भी मरे, लेकिन कित्तूर के स्वतंत्र अस्तित्व पर आंच नहीं आनी चाहिए।

"हमारा यह संग्राम केवल कित्तूर के लिए नहीं है। वह हमारी मातृ-भूमि, पुण्यभूमि भारत के लिए है। भारत की अक्षय कीर्ति के लिए है। कित्तूर

परतंत्र हुआ तो भारत भी परतंत्र हो जायगा। हमारा धर्म, साहित्य, कला, आत्म-गौरव सबकुछ मिट्टी में मिल जायगा। 'कित्तूर अमर हो! भारत अमर हो!' हमारा यह जयघोष बच्चे-बच्चे की जबान पर होना चाहिए।"

फिर छोटे देसाई को गोद में उठाकर सबको दिखलाते हुए बोलीं, "यही तुम्हारे महाराज हैं।"

जनता ने बड़े उत्साह से नारा लगाया—"कित्तूर के देसाई की जय हो! रानी चेन्नम्मा की जय हो!"

चारों दिशाएं उनके जयघोष से गूंज उठीं।

: १३ :

जब मल्लप्पाशेट्टी घर लौटे तो उनके मुख पर मुस्कराहट खेल रही थी। ऐसा मालूम होता था, मानो वह किसी अपूर्व आनंद का अनुभव कर रहे हैं।

उन्होंने बड़े आराम से अपनी गद्दी पर बैठकर मेज पर अपनी पगड़ी और तलवार सहित कमरबन्द रखकर पुकारा, "कलावती!"

कलावती प्रसन्न होकर उनका स्वागत करने के लिए शृंगार कर रही थी। शेट्टी ने फिर पुकारा, "अरे, क्या कर रही हो, कलावती?"

"अभी आई।"

थोड़ी देर में वह सामने आकर खड़ी हो गई। उसके रूप को देखकर शेट्टी उछल पड़े। बोले, "कला.....!"

"मालिक!"

"तू बड़ी सुन्दरी है।"

"आप महावीर है! बड़े साहसी!"

"इतना शृंगार क्यों किया है?"

"मेरे मालिक कल कित्तूर के राजा होने वाले हैं।"

"और तू कित्तूर की रानी होगी।"

"कित्तूर की रानी होने पर भी आपकी चरण-दासी।"

"अरे नहीं, मैं तो तेरी जंजीर में बंध गया हूं।"

"सच? मालिक, आज की क्या खबर है? मैं पूछती हूं कि अगर रानी चेन्नम्मा थैकरे की शर्तें मान लें तो?"

"नहीं, रानी ने हठ पकड़ रक्खी है। किसी मूर्ख ने रानी के मन में यह पागलपन भर दिया है कि वह अंग्रेजों के साथ लड़कर जीत सकती है।"

"ऐसी बात है तो लड़ाई जरूर होगी।"

"हां, थैकरे ने कल कित्तूर का किला तोड़ने का निश्चय कर लिया है।"

"साहब की जीत होगी क्या ?"

"इसमें संदेह क्या है ?"

"मेरे रानी बनने का स्वप्न ..... "

"वह जरूर पूरा होगा। किन्तु ....."

"किन्तु क्या ?"

"हमारे घर में जासूस घुसे हुए हैं।"

"जासूस !"

"हां, हमारी गुप्त-से-गुप्त योजना का भी सूराख रानी को लग जाता है।"

"अच्छा ? क्या ऐसा अनुमान है या सच है ?"

"वेंकटराय और मैं जब थैकरे के कैंप से लोट रहे थे तो रास्ते में दुंडव्वा मिली थी। उसने बताया कि महान्तव्वा को विष मिली खीर खिलाकर मार डाला।"

"महान्तव्वा को विष मिली खीर खिलाई ? किसने ? क्यों ? मालिक, तुम्हारी बात का कुछ भी मतलब मेरी समझ में नहीं आता।"

मल्लप्पाशेट्टी ने अपनी लाल आंखें फाड़कर कलावती की ओर इस तरह देखा, मानों उसे निगल जायंगे और बोले, "मतलब समझ में नहीं आता, कलावती ?"

उसकी आकृति देखकर कलावती को पसीना आ गया, मुंह पीला पड़ गया। डर के मारे कांपने लगी।

"घूरे पर पड़ी हुई को ऊपर उठाकर कित्तूर की रानी बनाने की सोचनेवाला मूर्ख मैं ! मेरा नमक खाकर मुझसे ही दगा करती है ?"

कलावती संभली। तनकर बोली, "कित्तूर का नमक खाकर कित्तूर और कित्तूर की रानी के साथ दगा करनेवाले कौन हैं ?"

"कलावती, तू मेरी दासी है।"

"हां, मालिक, मैं कित्तूर की प्रजा हूं। रानी चेन्नम्मा के अनगिनत बच्चों में से एक हूं।"

"तेरी रानी के सिर की गेंद बनाकर मैं उसे थैकरे के चरणों में अर्पण करूंगा।"

कलावती का खून खौल उठा। बोली, "चाण्डाल, तेरी जीभ सड़ कर गिर जाय!"

"अपनी जीभ के सड़कर गिरने से पहले ही मैं तेरी पापी देह को कुचल डालूंगा।"

"तुझ जैसे नराधम की छुई इस देह का कुचल जाना ही अच्छा है।"

यह कहकर कलावती ने मेज पर रक्खी हुई शेट्टी की तलवार हाथ में उठा ली। शेट्टी ने उसके हाथ से तलवार छीन ली। कलावती ने शेट्टी के हाथ से तलवार लेने की कोशिश की, पर सफल न हो सकी। उसके हाथ में तलवार की म्यान आगई। उसने उसीसे मल्लप्पाशेट्टी पर प्रहार किया।

इस प्रहार से शेट्टी पागल हो उठे। उन्होंने तलवार की नोक कलावती की छाती में भोंक दी। उसके हृदय से रक्त की धार फूट निकली। वह धरती पर गिर पड़ी।

शेट्टी ने भूमि पर गिरी हुई कलावती को बांये पैर से ठुकराकर कहा, "मर, पापिन, द्रोही।"

यह कहते हुए उन्होंने तलवार से उसके सारे शरीर को गोद डाला।

कलावती बराबर 'कित्तूर की जय! रानी चेन्नम्मा की जय!' पुकारती रही। उसका मुंह बंद करने के लिए मल्लप्पाशेट्टी ने लात मारकर व्यंग की हँसी हँसते हुए कहा, "ले, और जय बोल।"

कलावती के मुख पर फिर भी मुस्कराहट फूट पड़ी—परम शांति-युक्त दिव्य मुस्कराहट!

× × ×

रानी चेन्नम्मा पूजा कर रही थी। उसकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी, मानो भगवान का आंखों के जल से प्रक्षालन कर रही हो। उसका हृदय चूर-चूर हो रहा था। वह कह रही थी, "हे प्रभु, कित्तूर की रक्षा करो, कित्तूर की मर्यादा की रक्षा करो।"

तभी रानी की सखी नागव्वा ने धीरे-से आकर कहा, "रानीजी !"

रानी चेन्नम्मा ने आंसू पोंछकर कहा, "क्या है नागव्वा ?"

"दिन निकलने वाला है। दीवानजी ने कहा है कि आपसे मिलने का समय पूछकर आओ।"

"सवेरा हो गया क्या ?"

"जीहां।"

रानी उठी, स्नान करके पुरु की तरह लांग वाली साड़ी पहनी, सिर पर मुकुट रखकर पैरों में कामदार जूते पहने और मल्लसर्ज देसाई की तलवार कमर में बांध ली।

रानी के वीरवेश और उनके मुखपर खेलते हुए क्षात्र-तेज को देखकर नागव्वा चकित होकर मन-ही-मन बोली, 'यह चंडी है, चामुंडी है, काली है, दुर्गा है। निश्चय ही यह मानवी नहीं है। राक्षसों के दल का नाश करने वाली चामुंडी है।'

चेन्नम्मा ने रानी रुद्रम्मा के अन्तःपुर में जाकर उनको नमस्कार करके कहा, "बड़ी बहन, मैं युद्ध के लिए प्रस्थान कर रही हूं। मुझे आशीर्वाद दो।"

छोटा देसाई भी उठकर आगया। उसने चेन्नम्मा का आंचल पकड़-कर कहा, "मैं भी चलूंगा, अम्मा।"

चेन्नम्मा ने उसको उठाकर प्यार करते हुए कहा, "कुमार, तुम्हारे लड़ने का समय आगे आयगा। अब बहन के पास सुख से रहो।"

वीरव्वा और शिवलिंगव्वा आगईं और रानी चेन्नम्मा को आलिंगन करके रोने लगीं। चेन्नम्मा ने उनको सांत्वना देते हुए कहा, "रोओ मत। मैं विजय प्राप्त करके लौटूंगी। तुम लोगों को कभी भी फिरंगियों के हाथ नहीं पड़ने दूंगी।"

चेन्नम्मा के महल के पिछले द्वार पर उसका घोड़ा तैयार खड़ा था। उस पर चढ़कर वह वीरांगना किले के सिंह-द्वार के पास आई।

कित्तूर की सारी सेना तैयार खड़ी थी। सबसे आगे पैदल सेना, फिर गोलन्दाज पलटन, उनके पीछे भालाधारी सैनिक, फिर घुड़सवार। रानी

घुड़सवारों के आगे आकर खड़ी हो गई। उसके दांई ओर घोड़े पर सवार गुरुसिद्दप्पा थे। बांई ओर वीर बाला गगनचुम्बी कित्तूर का झंडा पकड़े खड़ा था। उसके पीछे रऊफ, कासिम, इमाम और दूसरे साथी खड़े थे।

किले के बाहर थैकरे खड़ा था। उसके साथ कप्तान ब्लेक, कप्तान सिविल, कप्तान डेटन और ५०० सैनिक थे।

रानी ने एक बार अपनी सेना पर दृष्टि डालकर कहा, "कित्तूर के वीरो, शत्रु सेना पर आंधी की तरह टूट पड़ो और उन्हें धरती पर सुला दो। जीते रहोगे तो स्वतंत्रता मिलेगी, मर गये तो स्वर्ग मिलेगा।"

रानी का इतना कहना था कि चारों ओर से स्वर उठा, "जीते रहे तो स्वतंत्रता, मर गए तो स्वर्ग ! रानी चेन्नम्मा की जय ! . . . .कित्तूर जिन्दाबाद !"

उधर थैकरे ने अपने लोगों को किले के फाटक की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। रानी चेन्नम्मा ने सेना के दो भाग करके बीच में कुछ जगह छुड़वा दी।

बाहर से थैकरे ने पुकारा, "रानी !"

चेन्नम्मा फाटक के पास जाकर खड़ी हो गई।

थैकरे ने कहा, "रानी, मेरी बात सुनिए। अजेय ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उसको क्रोध दिलाने की हिम्मत करने के लिए मैं आपकी प्रशंसा करता हूं। क्या आपने यह कहावत सुनी है कि ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता ? किले से बाहर आकर देखिए—क्या आपकी देसी तोड़ेदार बन्दूकें हमारी तोपों का सामना कर सकती हैं ? ब्रिटिश ढंग से शिक्षित हमारे बहादुरों के सामने क्या आपके अशिक्षित गंवार सैनिक ठहर सकते हैं ? हम खून-खराबी से हिचकिचाते हैं। आप आत्म-समर्पण कर दें तो हम सम्मान-पूर्ण संधि करने के लिए तैयार हैं।"

अंदर से आवाज आई, "और यदि हम आत्म-समर्पण करना स्वीकार न करें तो ?"

"तो हम तोपों से किले को चूर-चूर करके भीतर घुस जायंगे। आपकी सेना को काटकर किले को अपने हाथ में कर लेंगे और आपको तथा आपके

परिवारवालों को कैद कर लेंगे।"

अंदर से कड़कती आवाज आई, "थैकरे साहब, बढ़-बढ़कर बातें बहुत हो चुकीं। व्यापार की तराजू हाथ में पकड़कर आये हुए आप जब ऐसी शेखी बघारते हैं, तो कित्तूर के वीर लोगों की तो बात ही निराली है। जरा, इसपर विचार कीजिए। इस जन-संहार के लिए हमने निमंत्रण नहीं दिया—अंग्रेजों से हमें कोई द्वेष नहीं। हमारी आपपर अकारण क्रोध करने की इच्छा नहीं। अब भी आप अपनी भूल सुधार सकते हैं। युद्ध का विचार छोड़कर हमारे मित्र बन जाइये। हम खुशी से आपका स्वागत करेंगे। आपके साथ मित्रता करेंगे। इस विचार को अपने मन से निकाल दीजिए कि कित्तूर आपके अधीन हो जायगा। आपकी मेहरबानी के भूखे कुछ देशद्रोही मूर्खों ने कित्तूर के बारे में आपके मन में गलत धारणा बैठा दी है। यह वीर-भूमि है, कर्मभूमि है। यहां मृत्यु से न डरनेवाले वीर लोग रहते हैं। देश के लिए तन, मन, धन अर्पण करने को तैयार हुतात्माएं रहती हैं। इन लोगों को पराजित करके आप इनपर शासन नहीं कर सकते। अगर आपको अपनी जान प्यारी हो तो यहां से उल्टे पांव लौट जाइए। कहिए, आप किसे चुनेंगे, युद्ध को या मित्रता को?"

"महारानी, कुछ जोशीले और अविवेकी आदमियों की बातों में आकर आप क्यों बरबाद होती है। भलाई इसीमें है कि आप आत्म-समर्पण कर दीजिए। आपकी प्रतिष्ठा को जरा भी आंच न आयगी। हमारे अधीन सामन्त हो जाइये। कित्तूर का राजमुकुट हम स्वयं आपके सिर पर रखकर वापस चले जायंगे।"

"आपके राजमुकुट को हजार बार धिक्कार! क्या आप सोचते हैं कि मैं कित्तूर के स्वाभिमान के बदले आपकी दासता स्वीकार कर लूंगी? स्वाभिमान रखनेवाला कोई भी भारतीय आपकी शर्तों को स्वीकार नहीं सकता। कित्तूर की महारानी से ऐसी अपमान-जनक बातें कहते आपको शर्म आनी चाहिए।"

"महारानी, यह सोचकर कि आप स्त्री हैं, हम कुछ कहते नहीं। पर

जितना ही विनय से हम पेश आने की कोशिश करते हैं, उतना ही आप घमंड के मारे आसमान पर चढ़ती जाती हैं। अच्छी तरह याद रखिए कि आपकी उद्धतता ही आपको और आपके कित्तूर को ले बैठेगी।"

"थैकरे साहब, बहस से क्या लाभ ? साफ बताइए कि आप क्या चाहते हैं, युद्ध या शान्ति ?"

"कुछ नहीं, सिर्फ आत्म-समर्पण।"

"यह कदापि नहीं हो सकता।"

"मैं आपको बीस मिनट की मोहलत देता हूं। इस बीच आपने अधीनता स्वीकार न की तो मैं कित्तूर की ईंट-से-ईंट बजा दूंगा।"

चेन्नम्मा ने अपनी सेना के बीच में घुसकर कहा, "बहादुरो, तैयार हो जाओ। बालण्णा, किले का फाटक खोल दो। घुसो, आगे घुसो। हर हर महादेव।"

"हर हर महादेव !"

किले का फाटक खुलना था कि कित्तूर की वीर वाहिनी अंग्रेजी फौज पर आंधी की तरह टूट पड़ी।

कित्तूर के सैनिक अंग्रेजों की पैदल सेना से जूझ गए। उनके प्रचण्ड वेग को अंग्रेजी सेना न सह सकी और उसके बीच में दरार पड़ गई।

घोड़े पर सवार थैकरे ने बन्दूक पकड़ कर किले के भीतर घुसने का यत्न किया। बाला ने देखा कि थैकरे रानी पर निशाना साध रहा है। वह जोर से चिल्लाया, "दूर हटिए, माताजी। थैकरे आपपर बंदूक का निशाना लगा रहा है।"

और उसने अपने हाथ के झंडे को रऊफ के हाथ में देकर रानी के घोड़े की जीन पकड़कर अपनी तरफ को खींची।

थैकरे की गोली खाली गई।

बालण्णा ने थैकरे को लक्ष्य करके बन्दूक दागी। निशाना अचूक बैठा। थैकरे धड़ाम से घोड़े पर से नीचे गिर पड़ा।

कित्तूर के वीरों ने जयघोष किया, "हर हर महादेव ! .... रानी

चेन्नम्मा की जय हो।"

अंग्रेजी सेना असहाय हो गई। सेनापति के अभाव में सेना में भगदड़ मच गई। रानी चेन्नम्मा की तलवार ने अंग्रेज सैनिकों को काट-काटकर धरती को शवों से पाट दिया।

अंग्रेज सैनिक रणस्थल को छोड़कर भाग गए। कित्तूर के वीर सैनिकों में आनन्द की लहर दौड़ गई।

थैकरे के शिविर के मंत्री स्टीवेंसन्, इलियट तथा मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय बंदी बना लिये गये।

उस दिन महानवमी थी। ऐसे शुभ दिन विजय प्राप्त हुई। कित्तूर के निवासियों के आनन्द का पारावार न रहा।

रानी चेन्नम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा ने घोड़ों से उतरकर अपने घायल व्यक्तियों का उपचार करना आरम्भ किया। मृत वीरों को देखकर रानी की आंखों से अश्रुधारा बह चली। उपचार करते-करते रानी वहांपर आई, जहां सैदन, रऊफ, इमाम और कासिम खड़े रो रहे थे। बाला का शरीर निश्चेष्ट पड़ा था। रानी उस वीर बालक को देखकर विह्वल हो उठी। उसने कहा, "दीवानजी!"

"रानीजी!"

"बाला और अन्य वीरों का अन्तिम संस्कार सैनिक मर्यादा के साथ होना चाहिए।"

दीवानजी की आज्ञा के अनुसार सैनिकों ने भाले जोड़कर उनके ऊपर बाला को लिटाकर उठाया।

कित्तूर की सारी सेना आगे चली। उसके पीछे बाला का शव था। रानी चेन्नम्मा और दीवान गुरुसिद्दप्पा उसके पीछे नंगे सिर चल रहे थे। जुलस के मसजिद के पास पहुंचने पर मौलवीसाहब ने संस्कार की तैयारी की। एक मामूली सन्दूक में बाला के शव को लिटाकर उसके ऊपर लाल कपड़ा उढ़ाया गया और फूल डाले गए। कुरान शरीफ के पाठ के साथ शव कब्र में उतारा गया।

रानी चेन्नम्मा ने एक मुट्ठी मिट्टी हाथ में लेकर कहा, "हमारे प्राणों और कित्तूर के गौरव की रक्षा करनेवाले बाला को अन्तिम प्रणाम।"

गु सिद्दप्पा और दूसरे वीरों ने भी रानी का अनुसरण किया।

फिर रानी चेन्नम्मा ने सैदन के निकट जाकर कहा, "सैदन, मैं तुम्हें तसल्ली कैसे दूं!"

सैदन रानी के चरणों पर गिरकर फूट-फूटकर रोते हुए बोला "रानी, परवरदिगार!"

इसके बाद रानी चेन्नम्मा ने सब दिवंगत वीरों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भगवान् भास्कर अस्ताचलगामी हो गए थे, पर कित्तूर का कीर्तिसूर्य उदय होकर पूरी तेजी से चमक रहा था। कित्तूर के जंगलों और पहाड़ियों में रानी का जय-जयकार गूंज रहा था।

: १४ :

कित्तूर के लोगों के उत्साह और आनन्द की सीमा न थी। विजय के उत्सव की धूमधाम में लोग सुध-बुध खो बैठे थे। संगीतज्ञों ने राजा की प्रशंसा और रानी चेन्नम्मा के यशोगान में गीत रचे। चारों ओर उल्लास-ही-उल्लास दिखाई देता था। सारा नगर उन्मत्त हो रहा था।

किन्तु रानी चेन्नम्मा को उत्सव में विशेष रुचि न थी। वह जानती थी कि कित्तूर के इस युद्ध में तो हमारी जीत हो गई, लेकिन यह अन्तिम युद्ध नहीं है। अंग्रेज अपनी पराजय का बदला लेने के लिए जरूर तैयारी करेंगे।

राजमहल के सभा-भवन में मंत्रिमंडल की बैठक हुई। नाडगौडा, फौजी अफसर, नागरिकों के प्रतिनिधि, किलेदार शिवबसप्पा, सैदनसाहेब, मौलवीसाहब और सदाशिव शास्त्री भी मौजूद थे। रानी चेन्नम्मा के आसन ग्रहण करने के बाद गुरुसिद्दप्पा खड़े होकर बोले, "आज हमें युद्ध-बंदी मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के विषय में विचार करना है।"

रानी ने कहा, "स्टीवेन्सन, इलियट और अन्य कैदियों के लिए उचित प्रबन्ध कीजिए। वे बन्दी होने पर भी हमारे अतिथि हैं, यह हमें नहीं भूलना चाहिए।"

"आपकी आज्ञा का पालन किया जायगा। पर मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के बारे में क्या आज्ञा है?"

"इसका निर्णय मैं सभा पर छोड़ती हूँ। सभा की जो सम्मति हो, वही मेरी सम्मति है।"

सैदन खड़ा होकर गद्‌गद् स्वर से बोला, "रानी, इन दोनों का कसूर बड़ा भयंकर है। उनको मुआफी दी गई तो लोग बहुत बिगड़ेंगे। इसका मतलब यह होगा कि हमने कित्तूर के लिए अपनी जानों की होम देने वाले वीरों के साथ गैरइन्साफी की।"

नाडगौडा ने कहा, "इन लोगों ने कित्तूर को अंग्रेजों के हाथ बेचने की

तैयारी की थी। इनको मृत्युदंड मिलना चाहिए।"

शिवबसप्पा बोले, "महारानी, नाडगौडा बिना आधार के अपराध का आरोप करते हैं।"

नाडगौडा क्रुद्ध होकर बोले, "निराधार आरोप !"

"जी हां !"

"मैं पूछता हूँ, किसने थैकरे को लिखा था कि सेना के साथ आकर कित्तूर पर अधिकार कर लें।"

"इन दीवानों के शत्रुओं ने।"

"थैकरे के कित्तूर पहुँचते ही इन दीवानों ने जाकर उनका स्वागत क्यों किया ?"

"अंग्रेजों और हमारे बीच संधि कराकर रक्तपात न होने देने के लिए। अंग्रेजों की गोलन्दाज सेना का शिकार बनकर कित्तूर बरबाद न हो, सके लिए प्रयत्न करना भी क्या अपराध है ?"

"अच्छा, हम मान भी लें कि उन्होंने समझौते का प्रयत्न किया, पर यह बताइए कि वे अंग्रेजों की छावनी में जाकर क्यों रहे ?"

"क्योंकि महारानी ने आज्ञा जारी कर दी थी कि वे किले के भीतर पैर न रखने पावें।"

"यदि कित्तूर के किले के भीतर उनका प्रवेश निषिद्ध था, तो उन्हें घर में चुपचाप बैठना चाहिए था। शत्रु की छावनी में जाकर आश्रय लेने की क्या आवश्यकता थी ?"

"थैकरेसाहब को खुश करके उनके साथ आत्मसम्मानयुक्त संधि का प्रयत्न भी तो करना था।

"आप इनकी चाल का दूसरा ही अर्थ कर रहे हैं।"

"मैं शिव की सौगंध खाकर कहता हूँ कि मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय बेकसूर हैं।"

गुरुसिद्दप्पा गुस्से से कांपने लगे। वे झट से उठकर बोले, "शिवबसप्पाजी, क्या आपको मालूम है कि इन दोनों ने रानीजी को विष देने का कुचक्र

रचा था ?"

इसपर सभा में बिजली-सी दौड़ गई। सब लोग चकित हो गए। शिवबसप्पा ने बिना घबराए पूछा, "इसका आधार क्या है, दीवानजी ?"

"पाकशाला की मुख्याधिकारिणी महान्तव्वा ने खुद स्वीकार किया है।"

"महान्तव्वा को बुलाइये। उसके मुंह से ही हम सच्ची बात जान सकते हैं।"

"रानी के लिए पकाई हुई विष मिली खीर खाकर वह मर गई।"

"महान्तव्वा रानी को विष देने वाली है, यह बात आपको कैसे मालूम हुई ?"

"मल्लप्पाशेट्टी की रखेली कलावती से।"

"कलावती को बुलवाइए।"

सदाशिव शास्त्री ने खड़े होकर कहा, "शिवबसप्पाजी, कलावती स्वर्ग चली गई।"

उन्होंने बतलाया कि किस तरह कलावती उनके पास आकर सब षड़यंत्र का हाल बता गई थी और उन्होंने जाकर रानी चेन्नम्मा को सावधान किया था।

शिवबसप्पा शास्त्री के बयान से संतुष्ट नहीं हुआ। बोला, "शास्त्रीजी सच बोल रहे हैं, क्या इसके लिए रानी गवाही दे सकती है ?"

सभा शिवबसप्पा की इस उद्धतता पर बड़ी नाराज हुई कि वह रानी को ही गवाही देने के लिए चुनौती दे रहे ह।

मौलवीसाहेब ने क्रुद्ध होकर पूछा, "आप रानी की बेइज्जती कर रहे हैं। रानी के सामने ही शास्त्रीजी ने जब सच्ची-सच्ची घटना बतलाई तो रानी से गवाही दिलाने की क्या जरूरत है ?"

इसपर चेन्नम्मा ने खड़े होकर कहा, "आवश्यकता है, मौलवीसाहब। सदाशिव शास्त्री ने जो कुछ कहा, वह अक्षरशः सत्य है। मैंने ही आज्ञा दी थी कि विष मिली खीर महान्तव्वा को खिलाई जाय। उसने अपना अपराध

स्वीकार किया और बतलाया कि मल्लप्पाशेट्टी की प्रेरणा से उसने इस काम में हाथ डाला था। चूंकि कलावती ने हमको इस षड्यंत्र से सावधान कर दिया था, इसलिए मल्लप्पाशेट्टी ने उसको अपनी तलवार से मार डाला।"

तब नाडगौडा ने अपनी सम्मति प्रकट की, "रानीजी, अब और ज्यादा बहस की बिल्कुल आवश्यकता नहीं। मैं कित्तूर की समस्त जनता की ओर से प्रार्थना करता हूँ कि अपराधियों को मृत्युदंड दिया जाय।"

चेन्नम्मा कुछ देर सोचकर बोली, "हम लोग स्वयं इनसब कामों में भाग ले रहे थे, इसलिए हमारे लिए सत्य का जानना कठिन है। थैकरे के आगमन में उन दोनों का क्या हाथ है, यह स्पष्ट जाने बिना उनको दंड देना अनुचित है। शिवबसप्पाजी का कहना है कि दोनों दीवान बिल्कुल निरपराध हैं। मुझे बड़ी खुशी होगी, यदि यह सिद्ध हो जाय कि वे निरपराध हैं। मेरी इच्छा है कि कित्तर का कोई भी नागरिक देशद्रोही न समझा जाय ; मेरी सम्मति में दीक्षितजी को बुलाकर उनसे अच्छी तरह से छानबीन कराके इस मामले का निर्णय करना उचित है।"

यद्यपि नाडगौडा की धारणा थी कि यह मामला स्वतःसिद्ध है, इस विषय में और विचार की आवश्यकता नहीं है, फिर भी उन्होंने रानी की बात का विरोध नहीं किया।

शिवबसप्पा ने सोचा कि वेंकटराय चिदम्बर दीक्षित का बहनोई है। दीक्षितजी उसे बचाने के लिये प्रयत्न किये बिना न रहेंगे। वेंकटराय को बचाना हो तो मल्लप्पाशेट्टी को भी बचाना पड़ेगा।

रानी ने पूछा, "मेरी बात आप सब लोगों को स्वीकार है ?

"स्वीकार है।"

"शिवबसप्पाजी क्या कहते हैं ?"

शिवबसप्पा ने कहा, "मुझे भी स्वीकार है।"

दीक्षितजी के लिए शीघ्र ही बुलावा भेजा गया। वेंकटराय की पत्नी पद्मावतम्मा ने भी दूत भेजकर बड़े भाई से प्रार्थना की कि वह तुरन्त चले

आएं ।

अगले दिन प्रातः कित्तूर के राजमहल में पुनः सभा हुई। दोनों पक्षों की बातें सुनकर दीक्षितजी ने अत्यन्त दुखित होकर कहा, "रानी, आप कित्तूर की समस्त प्रजा की आराध्य देवी हैं। सब जानते हैं कि आप धर्म विरुद्ध कोई भी बात नहीं करेंगी। आप जो कुछ भी निर्णय करेंगी, उसे मानना हमारा कर्त्तव्य है।"

"दीक्षितजी, मेरा फैसला इकतरफा हो सकता है। इस विषय में आपको ही मेरा मार्ग-दर्शन करना चाहिए।"

"रानीजी, पद्मावती मेरी बहन है। मेरा कर्त्तव्य है कि मैं उसके सुहाग की रक्षा करूं। इसके सिवा इस मामले में अभियुक्त मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय मेरी बराबरी के है। उनके हित की रक्षा करना भी मेरा कर्त्तव्य है।"

दीक्षितजी के ये शब्द सुनकर शिवबसप्पा का चेहरा खिल उठा।

नाडगौडा तथा अन्य दरबारियों ने भौहें टेढ़ी करके दीक्षितजी को क्रोध से देखा। दीक्षितजी बोले, "इन दीवानों के ऊपर अन्य कोई आरोप होता तो मैं आपके पैर पकड़कर क्षमा मांगता, किन्तु उनपर लगे हुए भयंकर अपराधों की अवहेलना नहीं की जा सकती। कित्तूर के साथ दग़ा करनेवाले कदापि क्षमा के पात्र नहीं हैं। मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय ने अंग्रेजों को जो पत्र लिखकर भेजे थे, उनमें से कुछ मैंने देखे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे कित्तूर को अंग्रेजों के हाथ में सौंप देने को तैयार थे।"

शिवबसप्पा ने क्रोध में भरकर पूछा, "झूठ, बिल्कुल झूठ। इसका प्रमाण क्या है?"

दीक्षितजी गंभीरता से बोले, "आपको प्रमाण चाहिए? प्रमाण यह है, देखिए।"

और कागजों का एक पुलिन्दा शिवबसप्पा की तरफ फेंककर ऊंचे स्वर में उन्होंने कहा, "रानीजी, मैं प्रार्थना करता हूं कि दोनों को प्राणदंड दिया जाय।"

शिववसप्पा सभा में नहीं ठहरा और रानी को प्रणाम करके बाहर चला गया।

नाडगौडा ने सुझाव दिया, "रानीजी, दोनों देशद्रोही हाथी के पैरों से बंधवाकर कुचलवा दिये जायं।"

सबने उसका समर्थन किया। चेन्नम्मा रानी ने दुःखपूर्वक कहा, "दीवान जी, आपने जनता की सम्मति सुनी। दोनों अपराधियों को हाथी के पैरों से बंधवाकर कुचलवा दीजिए।"

आज्ञा देकर रानी दरबार से चली गई।

दीक्षितजी छोटी बहन पद्मावती को मुंह दिखाए बिना कित्तूर से अपने गांव लौट गये।

उसी दिन शाम को मल्लप्पाशेट्टी और वेंकटराय के अपराध की सारे नगर में ढिंढोरा पीटकर घोषणा की गई और उनको हाथी के पैरों में बंधवाकर नगर भर में घुमाया गया। लोगों ने देशद्रोहियों के ऊपर मिट्टी फेंकी, गालियां दी और थूका। क्रोध में भरी स्त्रियों ने उनपर गोबर की वर्षा की। नगर के बड़े लोगों ने यह कहकर मुंह फेर लिया कि ऐसे दुष्टों को देखने से पाप लगता है। दोनों अपराधी नगर में घूमते हुए हाथी के पैरों के नीचे कुचल कर मर गए।

: १५ :

कित्तूर का विजयोत्सव बैलहोंगल में समारोहपूर्वक मनाया गया। लोगों ने गायों को खूब नहला-धुलाकर, सजाकर, उनकी गरदन में फूलमाला डालकर जुलूस निकाला। शाम को मारुति-मन्दिर के पहलवानों ने दीक्षित जी के नेतृत्व में व्यायाम के प्रदर्शन किये और तलवार की लड़ाई दिखाई।

नागरकट्टी ने उदास बैठे दीक्षितजी के पास आकर प्रार्थना की कि आप कुछ कहिए।

दीक्षितजी ने खड़े होकर कहा, "इसमें संदेह नहीं कि आज हम जो उत्सव मना रहे हैं, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। हमारी पवित्र मातृभूमि गुलामी की शृंखला में बंधने ही वाली थी कि रानी चेन्नम्मा ने अपने असीम बल और साहस से उसकी रक्षा की। कित्तूर के ऊपर भगवान की कृपादृष्टि होने का इससे बढ़कर दूसरा सबूत नहीं हो सकता। पर हमको अपनी विजय और उससे होनेवाले महान आनन्द के कारण अपने कर्त्तव्य को नहीं भूल जाना चाहिए। कित्तूर का युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। अभी तो आरम्भ ही हुआ है। सत्तालोलुप अंग्रेज भारत में अपनी साम्राज्यशाही कायम करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। आप लोग यह न समझें कि वे अपनी पराजय स्वीकार करके शांत होकर बैठ जायंगे। वे चुपचाप नहीं बैठेंगे। उचित अवसर की प्रतीक्षा में रहेंगे और मौका मिलते ही कित्तूर के ऊपर टूट पड़ेंगे। इस बार वे रानी चेन्नम्मा को पकड़ने के लिए पूरी शक्ति लगा देंगे। आप जानते हैं कि अंग्रेज भारत पर वीरों की भांति आक्रमण करके नहीं आए। वे तलवार-बन्दूक लेकर भारत में नहीं आये, बाट-तराजू लेकर आए हैं। उनके शस्त्र उनके साधन, क्षात्र-धर्म और पौरुष नहीं है। उनका असली रूप इसीसे प्रकट हो गया है कि उन्होंने कित्तूर के दो दीवानों को अपने पक्ष में करके उनके द्वारा रानी चेन्नम्मा की जान लेने की कुचेष्टा की।

"कित्तूर के शूरवीरों, आप लोगों को स्वातंत्र्य-युद्ध के दूसरे दौर के लिए

तैयार रहना चाहिए। अंग्रेजों की चालों का पता लगाने के लिए सावधान रहना चाहिए। हम अंग्रेजों के उपद्रव से मुक्त हो जायं तो फिर सम्पूर्ण भारत को उनकी दासता से मुक्त कराने का प्रयत्न करना है।

जनसमूह ने बड़े उत्साह से जयघोष किया, "रानी चेन्नम्मा की जय हो! कित्तूर की स्वतंत्रता की जय हो!"

× × ×

रानी चेन्नम्मा, गुरुसिद्दप्पा और दीक्षितजी ने जैसा अनुमान किया था, वैसा ही हुआ। अंग्रेजों ने हार नहीं मानी।

दक्षिण भारत के कमिश्नर चैपलिन ने कित्तूर में हुई अंग्रेजों की दुर्गति की बात सुनकर क्रोध से भरकर शपथ ली, "कित्तूर को भस्म करके मैं थैकरेसाहब की आत्मा को शांति पहुँचाऊँगा।"

इसके बाद चैपलिन ने कप्तान जेम्सन की तृतीय बम्बई रेजीमेंट और कप्तान स्पिलर की घुड़सवार सेना के साथ ३० नवम्बर को कित्तूर में आकर पड़ाव डाल दिया।

मल्लप्पाशेट्टी के विश्वासपात्र शिवबसप्पा ने रात को गुप्त रूप से जाकर चैपलिन को कित्तूर की युद्ध की तैयारी तथा अन्य सब समाचार ब्योरेवार देकर कहा, "साहब, आप सीधे आक्रमण करके युद्ध द्वारा कित्तूर लेने का विचार छोड़ दीजिए। आपके सैनिक वेतन के लिए और लूट की आशा से लड़ते हैं, किन्तु यहां के सैनिक कित्तूर के लिए और रानी चेन्नम्मा के लिए लड़ते हैं। इनको प्राणों का मोह बिल्कुल नहीं है। यहांकी स्त्रियां और बच्चे तक युद्ध के लिए तैयार हैं। आप और किसी उपाय से विजय प्राप्त कर सकते हैं, युद्ध द्वारा नहीं।"

"किलेदारजी, कित्तूर जैसे छोटे राज्य में इतना बल कहां से आ गया?"

"रानी चेन्नम्मा के कारण। उसे मानवी न समझिए, वह पिशाची का अवतार है। निरपराधिनी महान्तव्वा को विष खिलाकर मारने में उसे तनिक भी संकोच नहीं हुआ। राज्य के लिए रानी की ममता शब्दों में नहीं

बताई जा सकती। यद्यपि मास्त मरडियगौडा का लड़का नाम के लिए देसाई है, तथापि सारा शासन-सूत्र रानी चेन्नम्मा के हाथ में है ! बड़ी रानी रुद्रम्मा और स्वर्गीय शिवलिंगरुद्रसर्ज की पत्नी वीरव्वा को अलग रखकर वही सब कुछ बनी बैठी है।"

"महल में कहीं असंतोष का धुआं उठता है ?"

"जी हां, उठता है और काफी उठता है। आप सूखी लकड़ी के चार टुकड़े डाल दें तो आग जोर से भड़क उठेगी।"

"रानी के सहायक कौन-कौन हैं ?"

"दीवान गुरुसिद्दप्पा, रामलिंगप्पा, अमटूर सैदनसाहब, बालप्पा और कोनूर मल्लप्पा।"

"मुसलमान भी रानी की मदद करते हैं ?"

"जी हां, रानी ने होशियारी से सबको अपनी मुट्ठी में कर लिया है। पिछले युद्ध में सैदनसाहब के पुत्र बाला ने रानी की प्राण-रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए। रानी को बैलहोंगल से भी बहुत सहायता मिली है।"

"किससे ?"

"वहां एक कूटनीतिज्ञ ब्राह्मण चिदम्बर दीक्षित है। कोई समय था, जब वह कित्तूर का दीवान था। मल्लप्पाशेट्टी ने उसको धीरे-धीरे दीवान के पद से हटाकर घर भेज दिया। मल्लप्पाशेट्टी के विद्वेष के कारण उसने दुष्टों की एक मंडली इकट्ठी कर रखी है और उसकी मदद से उल्टे-सीधे काम करता रहता है। उसके साथी नागरकट्टी, संगोल्ली, रायण्णा, बालण्णा, गजवीर और चन्नसप्पा खून, लूटमार आदि में बेजोड़ हैं।"

"आप किस तरफ रहेंगे, किलेदारजी ?"

"आपके अलावा और मैं किसकी तरफ हो सकता हूँ ! आप चिन्ता क्यों करते हैं ? सारा कित्तूर का किला मेरे हाथों में है। आपका यूनियन जैक मैं अपने हाथों से कितूर के किले पर फहराऊँगा।"

"इसके बदले में आप क्या आशा रखते हैं ?"

"कित्तूर का राज्य।"

"यदि आप धोखा दें तो ?"

"आप मुझको गोली से उड़ा दीजिए।"

"मंजूर; इस समय हम क्या करें ?"

"सन्धि की बात चलाकर रानी की युद्ध की तैयारी बन्द करानी चाहिए। इस बीच आप अपना बल बढ़ाकर चारों ओर से कित्तूर के किले पर घेरा डाल दीजिए। किले का नक्शा मैं आपको दे दूंगा।"

"क्या आप संधि का प्रस्ताव लेकर रानी के पास जायंगे ?"

"नहीं, मैं न जाऊँ, तो अच्छा। रानी को जरा भी संदेह हो गया तो मैं जीता नहीं बचूंगा। इससे आगे चलकर जो सहायता मुझसे आपको मिल सकेगी, वह भी न मिलेगी।"

शिवबसप्पा के चले जाने पर चैपलिन ने कप्तान जेमसन और कप्तान स्पिलर से सलाह करके निम्नलिखित घोषणा की :

"हम कित्तूर से युद्ध करने नहीं आए हैं, बल्कि कित्तूर की रानी के साथ सन्धि करके कित्तूर राज्य उनके लिए ही छोड़ देने को आए हैं। हम उन सबको क्षमा करने को तैयार हैं, जिन्होंने आजतक अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए थे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि रानी कैद किये हुए स्टीवेन्सन, इलियट और अन्य अंग्रेज सैनिकों को तुरन्त छोड़कर हमारे साथ संधि-कर लें।"

सबने यह घोषणा सुनी।

गुरुसिद्दप्पा का विचार था कि चैपलिन की इस घोषणा में धोखा है।

रामलिंगप्पा बोला, "दीवानजी, धोखे का डर नहीं। थैकरे की मृत्यु से अंग्रेजों के हौसले पस्त हो गए हैं। चैपलिन को भय है कि जो दुर्गति थैकरे की हुई, वही कहीं उसकी भी न हो। इसीलिए वह संधि करना चाहता है। इस समय हमें संधि करना ही उचित मालूम होता है।"

शिवबसप्पा ने भी उसकी हां-में-हां मिलाते हुए कहा, "दीवानजी, अनावश्यक रक्तपात को रोकना ही अच्छा है। चैपलिन स्टीवेंसन और इलियट के प्राण बचाने के लिए आतुर है। इस सुअवसर से हमें पूरा-पूरा फायदा

उठाना चाहिए। उनको मुक्त करके उन्हींको मध्यस्थ बनाकर चैपलिन साहब के पास संधि की बातचीत के लिए भेजना अच्छा है।"

कोणूर मलप्पा का विरोध निरर्थक हो गया।

रामलिंगप्पा और शिवबसप्पा की बातों ने गुरुसिद्दप्पा को प्रभावित किया। उन्होंने रानी चेन्नम्मा की स्वीकृति लेकर स्टीवेंसन और इलियट को बंधन मुक्त कर दिया।

कमिश्नर चैपलिन के सहानुभति प्रकट करने पर स्टीवेंसन ने कहा, "कित्तूर के अधिकारियों ने हमें अतिथियों की तरह रक्खा। मुझे मालूम नहीं था कि इन देसी लोगों में भी इतनी धर्मबुद्धि होती है।"

स्टीवेन्सन और इलियट का छुटकारा होते ही चैपलिन की नीयत बदल गई। उसने अपनी निकाली हुई घोषणा को एक तरफ रखकर २ दिसम्बर को कप्तान जेम्सन और कप्तान स्टिलर को कित्तूर पर चढ़ाई करने की आज्ञा दे दी।

रानी चेन्नम्मा और कित्तूर के लोगों की समझ में नहीं आया कि क्या करें। वे क्रोध में भरकर कहने लगे, "कितना धोखा दिया है इन लोगों ने।"

चैपलिन ने कित्तूर को ध्वंस करने का निश्चय करके हुबली, धारवाड़ और शोलापुर से नई-नई पलटनें मंगवाईं।

लेफ्टीनेंट कर्नल वाकर चौथी लाइट कैवेलरी और आठवीं लाइट कैवेलरी ब्रिगेड लेकर आया।

लेफ्टिनेंट कर्नल डीकन के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने कित्तूर के किले को घेर लिया। मेजर पामर ने किले पर बारूद की वर्षा आरम्भ कर दी। लेफ्टिनेंट कर्नल मैकलियड ने पास ही एक पहाड़ी पर चढ़कर कित्तूर पर धावा बोलने की तैयारी की।

कित्तूर की सेना ने सब तरफ से युद्ध किया। पर उसका बारूद का भंडार कम होने लगा तो उसने किले के ऊपरी भाग पर चढ़कर अंग्रेजों के ऊपर तोप और बन्दूकों से बारूद की वर्षा की। मनरो गोली खाकर भूमि पर लुढ़क गया।

पहले दिन के युद्ध में कित्तूर का पलड़ा भारी रहा।

दूसरे दिन ३ दिसम्बर को १८ पौंड और ६ पौंड के गोले फेंकने वाली तोपों के साथ एक सहायक दस्ता कित्तूर पहुंचा।

४ तारीख को प्रातःकाल नौ बजे मेजर मैकलियड और मेजर ट्रूमैन की टुकड़ियों ने किले की दीवार पर तोपों की धुआंधार वर्षा करके दीवार में एक छेद कर दिया।

शत्रु-सेना को किले के फाटक की ओर बढ़ते हुए देखकर रानी की सेना ने अपनी तोपों का मुंह उस ओर फेर कर गोलाबारी करनी शुरू की। किन्तु उसकी तोपों की बारूद ने काम नहीं दिया।

अंग्रेजी सेना किले का फाटक तोड़कर भीतर घुस आई। किले की टूटी हुई दीवार की ओर से मैकलियड और ट्रूमैन की सेना अंदर आ गई।

रानी किले के पिछले फाटक की रक्षा कर रही थी। गुरुसिद्दप्पा दौड़कर उसके पास जाकर बोले, "बड़ा धोखा हुआ, रानीजी। कुछ कमीनों ने हमारी बारूद में गोबर मिला दिया है। उसने काम नहीं दिया।"

मल्लप्पा अपने सैनिकों के साथ धीरज धरकर शत्रु-सेना के ऊपर टूट पड़ा। अंग्रेज सेना मल्लप्पा के तूफानी वेग को न सह सकी। तब ट्रूमैन मल्लप्पा को घेरने के लिए दौड़ा और उसने अपनी बन्दूक से मल्लप्पा को उड़ा दिया।

मल्लप्पा की मृत्यु हो जाने पर कित्तूर की सेना के बचने का कोई आसार ही न रहा। मौत से न डरनेवाले कित्तूर के सैनिक शत्रु-सेना पर उन्मत्त होकर टूट पड़े और उसको मारकर स्वयं भी मौत के मुंह में जाने लगे।

गुरुसिद्दप्पा रानी के पास जाकर बोले, "रानीजी, अब कित्तूर नहीं बच सकता। आप रनिवास की स्त्रियों और बालक देसाई के साथ तुरन्त यहां से बच निकलें।"

पर दीवानजी की बात रानी ने नहीं मानी। वह बोलीं, "मेरी प्रजा बहादुरी से युद्ध करके मरती रहे और मैं कायरों की तरह भाग जाऊं! कित्तूर की रानी कित्तूर के वीरों के रक्त से पवित्र हुई इस भूमि को अपने

रक्त से सींचने को तैयार है।"

"रानीजी, आप मेरी सलाह मानिए। इस युद्ध में किसी तरह भी हमारी विजय नहीं हो सकती। अंग्रेजों की सेना के सामने, उनकी चालों के सामने, हमारी सेना टिकी नहीं रह सकती। आपके अपने प्राणों की बलि देने का कोई अर्थ नहीं। आप जीवित रहेंगी तो आज नहीं तो कल, हम नई सेना खड़ी करके कित्तूर को फिर जीत सकेंगे। रानीजी, कित्तूर के भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि आप गुप्तद्वार से बाहर चली जायं।

"अपने ऊपर पूरा भरोसा रखनेवाली प्रजा को मृत्यु के मुंह में डाल कर मैं अपने प्राण नहीं बचा सकती।"

"जल्दी कीजिए, रानीजी, अब देर करने का समय नहीं है। मैं सफेद झंडा दिखलाकर युद्ध बन्द किये देता हूं।"

× × ×

दीवान गुरुसिद्दप्पा के बहुत कहने पर रानी चेन्नम्मा को अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध रुद्रम्मा, वीरम्मा, नीलव्वा, शिवलिंगव्वा और बालक देसाई के साथ गुप्त मार्ग से होकर भाग जाना पड़ा।

रानी और परिवार के सब लोग गुप्तमार्ग से जा ही रहे थे कि अंग्रेजों की एक टुकड़ी ने उनको आ घेरा और रानी तथा राज-परिवार के बाकी सब लोगों को कैद करके बैलहोंगल के किले में ले गए। अंग्रेज सिपाहियों ने चिदम्बर दीक्षित को मकान में ही कैद कर लिया।

नागरकट्टी, रायण्णा, बालण्णा, गजवीर और चन्नबसप्पा चुपचाप कहीं जा छिपे। उनको ढूंढ़ निकालने की अंग्रेजों ने जी तोड़ कोशिश की पर सब व्यर्थ हुआ।

गुरुसिद्दप्पा, सैदन, शिवकुमार तथा रामलिंगप्पा पकड़ लिये गए और अगले दिन चैपलिन ने उन सबको नगर के चौक में फांसी पर लटका दिया।

अंग्रेज सैनिकों ने कित्तूर में लूट-मार मचा दी।

चौदह लाख रुपया नकद, चार लाख रुपये के हीरे-मोती और आभूषण,

अनेक हाथी, तीन हजार घोड़े, दो हजार ऊंट, छत्तीस लोहे और कांसे की तोपें, छप्पन सौ बन्दूकें, पच्चीस जहरीली तलवारें, भाले और बहुत-सा गोला-बारूद अंग्रेजों के हाथ लगा।

कित्तूर के अधीनस्थ तीन सौ अट्ठावन ग्रामों और बहत्तर किलों पर पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया। कित्तूर के किले पर चमकते हुए राज्य के झंडे की जगह अंग्रेजों का यूनियन जैक फहरा दिया गया।

१८ दिसम्बर को कित्तूर पूर्णरूप से अंग्रेजों के हाथों में आ गया।

: १६ :

मनरो साहब को दफनाने के बाद अंग्रेजों के शिविर में विजयोत्सव आरंभ हुआ।

चैपलिन और अन्य फौजी अफसरों ने कित्तूर की लूट में भाग लेकर कीमती जेवरों को अपने लिए रख लिया।

रणचंडी के तांडव नृत्य की रंगस्थली बना हुआ कित्तूर धू-धू करके ज़ल रहा था। अंग्रेजों की तोपों और किरचों के लक्ष्य बने हुए कित्तूर के शूरों के शव किले के चारों ओर सड़ रहे थे। ऐसा कोई घर न था, जिसपर मृत्यु-देवी की कृपा न हुई हो।

रुद्र की इस लीलास्थली में यदि कोई प्रसन्न-चित्त था तो वह था अकेला शिवबसप्पा। दूल्हे की तरह सजकर आये हुए शिवबसप्पा का कप्तान जेम्सन ने स्वागत किया। चैपलिन ने शिष्टाचार से पूछा, "कहिए क्या हाल है ?"

"आपकी कृपा से सब ठीक है।"

चैपलिन ने उससे और अधिक बातचीत न की। अपने साथियों से गपशप करने लगा।

उसके इस रूखे व्यवहार से शिवबसप्पा को चोट लगी। अपमान का घूंट पीकर उसने कहा, "साहब का काम ूरा हो गया न !"

"हां, पूरा हो गया।"

"अब आगे क्या विचार है।"

"कित्तूर का सब प्रबंध करके हम कल या परसों चले जायंगे।"

"ठीक है, पर मैं आपको आपके वचन की याद दिलाने आया हूं।"

"वचन ! हमने किसको वचन दिया था ?"

"मालूम होता है, आप भूल गये हैं। आपने कहा था कि कित्तूर को जीतकर वह राज्य मुझें सौंप देंगे।"

"ओ हो ? यह बात ? (कर्नल स्पिलर को संबोधित करके) शिवबसप्पा

ने हमारा जो उपकार किया है, उसके लिए कुछ करना चाहिए न ?"

"मैं नहीं जानता कि शिवबसप्पा ने क्या उपकार किया है।"

"उनसे ही पूछिए।"

"शिवबसप्पा ने कहा, "मैंने साहब को किले के विषय में जानकारी दी। आपको यह मुझसे ही मालूम हुआ कि किले के कौन-कौन से भाग कमजोर हैं। मैंने ही किले के बारूद के भंडार में गोबर मिलवा दिया और इस तरह आप की जीत कराई।"

कप्तान ट्रुमैन ने पूछा, "शिवबसप्पाजी, आप कित्तूर के किलेदार हैं न ?"

"जी हां।"

"शत्रुपक्ष की सहायता करनेवाले अंग्रेज किलेदार का जो सम्मान हम करते हैं, वही सम्मान शिवबसप्पा का भी करना चाहिए। इस विषय में में भेदभाव नहीं करना चाहिए।"

ट्रुमैन की बात का अर्थ स्पष्टरूप से शिवबसप्पा की समझ में नहीं आया। उसने कहा, "आपने कहा था कि कित्तूर जीत लेने पर राज्य मुझे सौंप देंगे। मैं उसे लेने आया हूं।"

"ठीक है, ठीक है,। राज्य हम आपको सौंप देंगे।"

यह कहकर चैपलिन ने स्टीवेंसन की ओर देखा। उसके देखते ही स्टीवेंसन और इलियट दोनों ने शिवबसप्पा को पकड़कर उसके हाथों में हथकड़ी पहना दी।

शिवबसप्पा भय से कांपने लगा और बोला, "साहब।"

चैपलिन ने व्यंग से पूछा, "क्यों नये महाराज के जुलूस के लिए तैयारी हो गई ?"

कप्तान ट्रुमैन और वाकर ने शिवबसप्पा को जबरदस्ती खींचकर पीछे की ओर मुंह करके गधे पर बिठाया और सारे नगर में घुमाकर चौक में ले आए।

वहां अंग्रेज सैनिकों के सामने शिवबसप्पा को खड़ा करके उसकी आंखों

पर पट्टी बांधकर कहा, "शिवबसप्पा, तू राज्यद्रोही है, देशद्रोही है। कित्तूर राज्य के लालच से तूने सब भेद शत्रुओं को बतला दिया। कित्तूर के सर्वनाश का कारण तू ही है। स महा अपराध के लिए तुझे गोली से उड़ा दिया जायगा।"

शिवबसप्पा की आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। पश्चात्ताप करते हुए रोते-रोते वह बोला, "अंग्रेजों का विश्वास करके मैंने धोखा खाया। विश्वासघातक बनकर कित्तूर को शत्रुओं के हाथों सौंप दिया। माता चेन्नम्मा, मुझे क्षमा करो। कित्तूर, वीरभूमि कित्तूर, मेरा अपराध क्षमा कर।"

ये शब्द उसके मुंह से निकल ही रहे थे कि अंग्रेज सैनिकों की बंदूकों ने उसकी जीवन-लीला समाप्त कर दी।

चैपलिन दो दिन कित्तूर में ठहरा। राज्य-व्यवस्था अपने प्रतिनिधि ट्रूमैन को सौंपकर, ४०० गाड़ियों में कित्तूर की संपत्ति लादकर वह धारवाड़ को चल दिया।

: १७ :

बैलहोंगल के किले में कैद रानी चेन्नम्मा और उनके परिवार पर सख्त पहरा बिठलाया गया । किलेदार हैरिस की आज्ञा के बिना कोई भीतर प्रवेश नहीं कर सकता था और अन्दर के लोग बाहर नहीं आ सकते थे।

गिरफ्तार होने के दो ही दिन के अन्दर रुद्रव्वा रानी शोक के मारे मर गई।

रुद्रव्वारानी की वृद्ध माता नीलव्वा, पुत्रवधू वीरव्वा, सौत शिवलिंगव्वा, तथा बालक देसाई की देख-भाल का बोझ चेन्नम्मा रानी पर आ पड़ा। चेन्नम्मा कारागार की छोटी खिड़की के कित्तूर की ओर देखकर बार-बार निःश्वास छोड़ती थी—

"कित्तूर, मेरी मातृभूमि कित्तूर! भाग्यहीन कित्तूर! अन्त में दासता ही तेरे भाग्य में बदी थी। तेरी वीरपुत्र-पुत्रियों का रक्त तर्पण निष्फल हुआ। मेरी ओर क्यों इस तरह हीन-भाव से निहार रही है? तेरी रानी आज बंदिनी है। कारागार के लोहे के सींकचों में वह बन्द पड़ी है! पर मुझमें इतना साहस है कि यदि मैं एक बार यहां से बाहर जा सकूं तो अपनी मातृ-भूमि को बन्धनमुक्त कर सकती हूं। पर बाहर जाऊं कैसे?

"कित्तूर के सपूतों ने वीरगति पाई। गुरुसिद्दप्पा भी हंसते-हंसते सदा के लिए सो गये। चिदम्बर दीक्षित कारागार में दिन काट रहे हैं। कित्तूर का अब क्या होगा?

"रायण्णा, नागरकट्टी, बालण्णा, गजवीर, चिन्नबसप्पा ये सब भी वीरगति को प्राप्त हो गए होंगे तो?"

रानी चेन्नम्मा का आहार छुट गया और नींद कोसों दूर हो गई।

वीरव्वा और शिवलिंगव्वा बार-बार आग्रह करती थीं; लेकिन रानी चेन्नम्मा ने अन्न ग्रहण नहीं किया।

रानी चेन्नम्मा के अन्न-त्याग की बात सुनकर कप्तान हैरिस डर गया।

जेल में रानी मर गई तो उसकी मुसीबत हो जायगी, इस बात से भयभीत होकर उसने स्वयं रानी के स्थान पर आकर कहा, "रानीजी, आप भोजन कीजिए।"

"यह तुम्हारी सरकार की आज्ञा है क्या ?"

"नहीं, मेरी प्रार्थना है।"

"कप्तानसाहब, मैंने अन्न-जल त्याग कर प्राण देने का संकल्प कर लिया है। कित्तूर का पतन होने के बाद कित्तूर की रानी को जीवित नहीं रहना चाहिए।"

"आप प्राण दे देंगी तो चैपलिनसाहब मुझपर दोष लगाकर मुझे दंड देंगे। मुझ निरपराधी को आप व्यर्थ झंझट में फंसायेंगी। आपको जो-जो सुविधाएं चाहिएं, मैं उन सबका प्रबंध करने को तैयार हूं। कृपा करके उपवास छोड़ दीजिए।"

हैरिस की बात सुनकर रानी बोली, "कप्तानसाहब, आप लोगों की बात पर कहांतक विश्वास किया जा सकता है, यह मैं भली-भांति जानती हूं। आप ही लोगों ने संधि के लिए हमको बुलाकर धोखा दिया और कित्तूर पर घेरा डाल दिया।"

"रानीसाहब, वह राजनैतिक दांव-पेंच है। उसके लिए मुझे क्यों दोष देती हैं ? व्यक्तिगतरूप से मुझसे आपकी कोई मान-हानि नहीं होगी। इसके लिए मैं शपथ खाता हूं। नौकरी से अवकाश ग्रहण करके इंग्लैंड जाकर मैं आपका जीवन-चरित लिखकर दुनिया के कोने-कोने में फैला ूंगा। आपकी जीवन-कथा फ्रांस के बंधन को समाप्त करनेवाली जान आफ आर्क की जीवन-कथा से भी अद्‌भुत है।"

"वह कौन थी ?" रानी ने पूछा।

" वह ! वह फ्रांस की एक ामीण बालिका थी। फ्रांस को गुलामी में में रखनेवाले इंग्लैंड के विरुद्ध लड़कर उसने फ्रांस को स्वाधीन किया था।"

"अंग्रेजों ने उसका क्या किया ?"

"जादूगरनी कहकर उसे जलाकर खाक कर दिया।"

"मुझे भी जलाओगे क्या ?"

"नहीं, रानी साहिबा !"

"कैद में मुझे कितने दिन रहना पड़ेगा ?"

इस बारे में मुझे कमिश्नरसाहब से कोई आदेश नहीं मिला।"

"मुद्दततक कैद में पड़े रहने से प्राण देकर शांति पा लेना अच्छा नहीं होगा क्या ?"

" द्रव्वा रानी की मौत के लिए मुझे सफाई देनी पड़ी।"

"कप्तानसाहब, छुटपन से ही मेरा यह नियम रहा है कि मैं गुरुजी से पूजा कराके और उनका चरणोदक लिये बिना भोजन नहीं करती हूं। किले के भीतर आप किसीको आने नहीं देते तो मैं पूजा कैसे करूं ?"

"मैं आपके गुरु के आने-जाने की अनुमति देने को तैयार हूं। कौन हैं आपके गुरु ?"

"अपने घर में नजरबन्द चिदम्बर दीक्षित।"

"अच्छा चिदम्बर दीक्षित आपके गुरु हैं ?" कप्तान हैरिस ने कांपते स्वर में कहा।

"जी हां।"

"वह तो क्रांति करने के आरोप में कैद कर लिये गये हैं। किसी दूसरे को मैं भेज सकता हूं। उनके बारे में मुझे अधिकार नहीं है।"

"तो जाने दीजिए, मुझे भी भोजन की दरकार नहीं है।"

"रानीसाहब, आप मुझे बड़े झंझट में फंसा रही हैं।"

"हम अपने गुरु से ही पूजा कराते हैं, दूसरों से कभी नहीं कराते।"

"ठीक है। हमारे यहां भी यही रिवाज है। किन्तु मैं क्या करूं ?"

"दीक्षितजी आपके सिपाहियों के पहरे में आकर यहां पूजा कराकर वापस जा सकते हैं। क्या आपको डर है कि वे भाग जायेंगे ?"

"नहीं, कड़ा पहरा तो रखा जासकता है,किन्तु व्यवस्था बिगड़ जायगी। चैपलिनसाहब को मालूम हो जायगा तो मुझे दंड मिलेगा।"

"ठीक है, मैं समझती थी कि धर्म में अंग्रेजों को श्रद्धा भले ही न हो,

पर उनका दृष्टिकोण मानवीय है। मैंने यह कल्पना भी न की थी कि वे कित्तूर को कुचक्र से जीतने के अलावा एक स्त्री को भी भूखा मारकर बदला लेंगे।"

कप्तान हैरिस ने रानी की बात सुनकर गरदन झुका ली। कमिश्नर के व्यवहार के प्रति उसके मन में घृणा पैदा हुई। मन-ही-मन विचार कर वह बोला, "रानीसाहब, ग्लैंड के महाकवि बाइरन ने अपनी एक कविता में कहा है कि 'स्वतन्त्रता नीच कारागार में प्रकाशित होनेवाली एक दिव्य ज्योति है।'

"आप यह न समझिए कि अंग्रेज लोग स्वतंत्रता की अमर ज्योति को बुझने न देने के लिए आपकी की हुई अनुपम सेवा, शक्ति और शौर्य का मान नहीं करेंगे,उसे गौरव न देंगे। हमारे महाकवि बाइरन ने भी ग्रीस की स्वतंत्रता के लिए युद्ध किया था।"

"कप्तानसाहब, क्या आप कित्तूर की स्वाधीनता के लिए और इसी प्रकार भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ेंगे?"

"रानीसाहब, मैं साम्राज्यशाही का दास हूं। कल मेरे देशवासी ही भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ेंगे--स्वतंत्र भारत को बन्धु समझकर, गले लगाकर, उसे सम्मानित करेंगे।"

"कप्तानसाहब, आप चिरायु हों।" गद्‌गद् होकर रानी ने कहा,

"रानीसाहब मैं आज्ञा दिए देता हूं कि आपके गुरु आकर पूजा करा दें। आप यह वचन दें कि पूजा होने पर आप भोजन कर लेंगी।"

"अवश्य करूंगी।"

किले के पहरेदार दीक्षितजी को बुला लाये। रानी चेन्नम्मा और दीक्षितजी पूजा के लिए बैठे।

जोर-जोर से मंत्रों का पाठ करते हुए बीच में दीक्षितजी ने पूछा,

"रानीजी, किले में मेरे आने की अनुमति आपने कैसे प्राप्त की?"

"किलेदार कप्तान हैरिस बहुत भला है। मेरे उपवास से उसका चित्त

खिन्न हो गया। मैंने उससे कहा कि मैं अपने गुरू दीक्षितजी से पूजा कराये बिना भोजन ग्रहण नहीं करती। दीक्षितजी, जब कित्तूर दूसरों के हाथ में चला गया, तो मेरा जीवन वृथा है।"

रानीजी, आपको हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। रायण्णा सेना एकत्र कर रहा है।. . . ."

"रायण्णा अंग्रेजों के हाथों में नहीं पड़ा ?"

"रायण्णा, बालण्णा, बिच्चुगुती, गजवीर, नागरकट्टी कोई भी अंग्रेजों के कब्जे में नहीं है। उन्होंने संगोल्ली के जंगल में पड़ाव डाल रक्खा है। अंग्रेजों के खजाने को जाता हुआ रुपया वे लोग लूट लेते हैं।

"सच ?"

"जी हां, रायण्णा की सेना शीघ्र ही बैलहोंगल के किले को घेरकर आपको बन्धन मुक्त करेगी और आपके नेतृत्व—कित्तूर में प्रवेश करके हमारी पवित्र भूमि को पुनः मुक्त करायेगी।"

चैन्नम्मा की आंखें डबडबा आई।

"दीक्षितजी, मैं धन्य हुई।"

उस दिन से दैनिक पूजा के बहाने कारागार में जाकर रोज दीक्षितजी चेन्नम्मा को रायण्णा की गति-विधियों से अवगत करा जाया करते थे।

एक दिन चेन्नम्मा ने अपने शरीर पर से सब आभूषण उतारकर दीक्षितजी को देकर कहा, "इन्हें रायण्णा को दे दीजिए। उसका प्रयत्न सफल हो।"

रानी चेन्नम्मा का आशीर्वाद और सहायता मिलने पर सेनापति रायण्णा का उत्साह कई गुना बढ़ गया।

रायण्णा की सेना में सिर्फ सौ वीर थे। इन्हीं शूरों के हृदय में देशाभिमान का बीज बोकर रायण्णा ने उनको महायोद्धा बना दिया था। इन वीरों ने अपनी देह से निकले हुए रक्त को काली माता पर चढ़ा कर शपथ ली थी, "हम कित्तूर के लिए अपने प्राण अर्पण करने को सदा तैयार रहेंगे।"

रायण्णा के शूरों के कार्यों से अंग्रेज सरकार थर्रा गई। रायण्णा अपने दल को साथ लेकर सरकारी दफ्तरों को लूटकर उनमें आग लगा देता था।

पहरेदारों को डराकर खजानों को जाते हुए धन को लूट लेता था।

अंग्रेजों ने रायण्णा और उसके साथियों को पकड़ने के लिए बड़ी जागीर इनाम में देने की घोषणा की।

सम्पगांव का मामलेदार कृष्णराय रायण्णा की लूटमार से बहुत तंग आ गया था। उसने उससे बदला लेने के लिए कमर कसकर सम्पगांव की मसजिद के पास पचास हजार रुपये छिपाकर रख दिए और ऐसा प्रबन्ध किया कि यह खबर रायण्णा के कानों तक पहुंच जाय। पास ही गुप्त पहरा बिठा दिया?

कृष्णराय के जासूसों ने आकर समाचार दिया कि रायण्णा हंदिबडग-नाथ के पहाड़ में छिपा हुआ है। वह सेना लेकर उस पहाड़ की ओर गया। रायण्णा के योद्धाओं ने कृष्णराय की सेना को घेरकर मार-काट आरम्भ कर दी। कृष्णराय किसी तरह अपनी जान बचाकर भाग निकला।

रायण्णा ने सम्पगांव की मसजिद में घुसकर ५० हजार के खजाने हथिया कर सम्पगांव के किले पर कित्तूर का झंडा फहरा दिया।

कित्तूर का झंडा देखकर लोगों की जान-में-जान आगई। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों उनके मृत शरीर पर अमृत छिड़क दिया गया।

× × ×

बैलहोंगल में सब जगह यह समाचार फैल गया कि दीक्षितजी बीमार पड़े हैं। हैरिस ने भी सुना। यदि वह पूजा को न आये तो रानी फिर उपवास करेगी। इस समस्या को कैसे सुलझाया जाय, इस चिंता में डूबा हुआ हैरिस दीक्षितजी के पास गया।

दीक्षितजी बिस्तर पर लेटे थे। उनका मुंह लाल था और उसपर मृत्यु की छाया पड़ रही थी। कप्तान को देखते ही उन्होंने कहा, "कप्तानसाहब, मैं अब बचूंगा नहीं। मुझे इस बात का बड़ा दुःख है कि अपना अन्तिम समय जेल में बिताना पड़ा।"

"दीक्षितजी, मैं सरकार की आज्ञा का उल्लंघन करने में असमर्थ हूं। अब सवाल यह है कि रानी साहब की पूजा का प्रबन्ध कैसे किया जाय? आपके अच्छा होने तक वह भोजन नहीं करेंगी।"

"चिंता मत कीजिए। मैं यह काम अपने एक शिष्य के सिपुर्द कर दूंगा।"

"आपके शिष्य से पूजा कराना रानीसाहब स्वीकार कर लेंगी क्या ?'

"मेरा शिष्य ही मेरा उत्तराधिकारी है। हमारे यहां यह प्रथा है कि गुरु को प्राप्त होने वाली मान-मर्यादा शिष्य को भी प्राप्त होती है।"

हैरिस के ऊपर से मानो भारी बोझ उतर गया।

दीक्षितजी का शिष्य पूजा कराने जाने लगा। एक दिन रानी के हाथ से पूजा कराता हुआ वह बोला, "माता, कल से मैं पूजा कराने नहीं आ सकता।"

"क्यों, क्या दीक्षितजी की हालत चिंताजनक है ?"

शिष्य हंसकर बोला, "दीक्षितजी को कुछ भी नहीं हुआ, माताजी।"

तुम कौन हो ?"

"आपका सेवक रायण्णा।"

"रायण्णा !"

"माता, कित्तूर की मुक्ति का समय निकट आ गया है। सम्पगांव पर हमने कित्तूर का झंडा फहरा दिया है। होड्डकीलिबोम्मण्णा और येडूर येल्लण्णा हमारी ओर आ गए हैं। मैं एक बड़ी सेना तैयार कर रहा हूं। एक साथ अंग्रेजों की सब छावनियों पर धावा बोलकर उनकी सेना का चारों तरफ से सामना किया जायगा।"

"तुम्हारे पास काफी सेना है, रायण्णा ?"

"काफी तो नहीं है, रानीजी। मैं कल ही सुरपुर जाकर वहां के राजा की सहायता लेकर आऊंगा। इस विजयादशमी के भीतर-ही-भीतर कित्तूर को आपके हाथों में सौंप दूंगा।"

आनन्दातिरेक से चेन्नम्मा के मुंह से आगे शब्द नहीं निकला। यह सोच कर कि किसी कठिन समय पर काम आयेंगे, उन्होंने कुछ आभूषण अपने पास रख छोड़े थे। उन आभूषणों में सोने की कर्धनी, बाजूबन्द, मोतियों का हार और हीरे की जंजीरें, आदि थीं। उन्हें उतारकर रायण्णा को देते हुए रानी ने कहा, "भवानी तुम्हारा मंगल करे। जाओ, बेटा। मैं एक बार अपनी आंखों से कित्तूर को स्वतंत्र देख लूं। बस, इतना ही मुझे चाहिए। फिर मैं शांति से

आखिरी सांस ले सकूंगी।"

× × ×

बैलहोंगल में यह खबर फैल गई कि दीक्षितजी का अन्तिम समय निकट आ गया है। इसलिए काशी से गंगाजल लाने उनका पट्ट शिष्य जा रहा है। पर कप्तान हैरिस ने दीक्षितजी और उनके शिष्य पर पूरा भरोसा नहीं किया। उसे यह भी संदेह था कि दीक्षितजी की बीमारी शायद दिखावटी ह।

जासूसों की लाई हुई खबर ने हैरिस के संदेह की पुष्टि की।

उन्होंने बताया कि बैलहोंगल से दीक्षितजी का जो शिष्य गया था, वह संगोल्ली में भेस बदल कर घोड़े पर चढ़कर चला गया।

तीन दिन के अन्दर रायण्णा के आदमियों ने नन्दगढ़, सोमेश्वरगढ़, प्रतापगढ़ और खानापुर के किलों को अपने अधीन करके कित्तूर का झंडा उनपर फहरा दिया।

कप्तान हैरिस ने दीक्षितजी के ऊपर और भी कड़ा पहरा बैठाकर बैलहोंगल के समाचारों की सूचना कमिश्नर चैपलिन को भेजी।

कमिश्नर की भेजी हुई आज्ञा को देखकर कप्तान हैरिस का सैनिक हृदय भी कांप उठा और बैलहोंगल के लोग अंग्रेजों की असीम क्रूरता देखकर गुस्से से पागल हो गए। चैपलिन की आज्ञा यह थी--

"दीक्षितजी और उनकी पत्नी को रानी चेन्नम्मा और उसके परिवार के सामने फांसी पर लटका दो। सिर्फ चेन्नम्मा को बैलहोंगल के किले में रक्खो। बाकी लोगों को कुसुगल भेज दो।

आज्ञा का पालन किया गया।

दीक्षितजी ने प्राणदंड निश्चल भक्ति के साथ स्वीकार किया। रोती तुलजाबाई को अपने पास बुलाकर वह बोले, "सुख-दुख में तुमने मेरा हाथ नहीं छोड़ा। अब मेरे अन्तिम समय तुमको विचलित होना नहीं सोहता।"

"हम निरपराध हैं।" तुलजाबाई ने अवरुद्ध कण्ठ से कहा।

"हां, कित्तूर की दृष्टि में, परन्तु अंग्रेजों की दृष्टि में हम भयंकर विद्रोही हैं। दुखी मत होओ। कित्तूर के स्वतंत्र होने तक हमारी आत्मा शांत

नहीं होगी। हमें बार-बार जन्म लेकर कित्तूर के लिए लड़ना है और स्वतंत्रता प्राप्त करनी है।"

अगले दिन प्रातःकाल किले के भीतर के मैदान में दीक्षितजी और तुलजाबाई के लिए फांसी की टिकटियां तैयार की गईं। रानी चेन्नम्मा, रानी शिवलिंगव्वा और नीलव्वा को बुलाकर किले के जंगलों के पास खड़ा कर दिया गया।

सैनिक दीक्षितजी की आंखों पर पट्टी बांधने आए तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "इसकी क्या जरूरत है?"

दीक्षितजी ने रानी चेन्नम्मा की ओर देखकर कहा, "रानीजी, आप दुखी न हों। मैं आज मरकर कल फिर जन्म लूंगा। कित्तूर के स्वतंत्र होने पर ही मुझे अन्तिम शांति प्राप्त होगी।"

इतना कहकर उन्होंने जोर से नारा लगाया . . "कित्तूर की जय हो!"

रानी चेन्नम्मा उस दृश्य को नहीं देख सकी। उन्होंने अपना मुंह ढक लिया।

पलभर में दीक्षितजी और तुलजाबाई के शव जमीन पर लोट गये।

हैरिस गंभीर मुद्रा में खड़ा रहा और उसने अपना टोप उतारकर सलामी देते हुए कहा, "अलविदा।"

उसकी आंखों में आसूं थे।

उसी दिन शाम को हैरिस ने वीरव्वा, बालक देसाई, शिवलिंगव्वा और नीलव्वा को कुसुगल ले जाने के लिए डोलियां तैयार कराईं। रानी चेन्नम्मा ने वीरव्वा और छोटे देसाई को गले लगाकर कहा, "वीरों पर जो बीतती है, उसे वे सकर सहते हैं। हम लोग अब स्वतंत्र कित्तूर में ही मिलेंगे।"

बालक देसाई चेन्नम्मा के गले से लिपट गया। बोला, "मैं नहीं जाऊंगा।"

उसे गोद में उठाकर रानी बोलीं, "तू कित्तूर का स्वामी है। वीरव्वा, शिवलिंगव्वा और नीलव्वा माता की रक्षा की जिम्मेदारी तुझ पर है। बेटा, जाओ।"

"मुझे जाना ही पड़ेगा, मां?"

"हां, बेटा।"

"मां तुम कब जाओगी ?"

"जल्दी ही। तुझे कित्तूर ले जाकर, सिंहासन पर बिठाकर तेरा तिलक करूंगी।"

वीरव्वा, शिवलिंगव्वा और बालक देसाई डोलियों में बैठकर चल दिए। रानी चेन्नमा अकेली रह गईं। वह खड़ी कारागार के वातायन से दूर दिगंत को देखती रही।

: १८ :

रायण्णा ने थैकरे साहब के कित्तूर में प्रवेश के दिन से लेकर पांच वर्षों में सन् १८२४ से १८२९ तक हुई घटनाएं सुरपुर के राजा को सुनाकर प्रार्थना की, "मैं आज आपके पास पांच सौ शिकरी धनुर्धरों तथा सेना और धन की सहायता मांगने आया हूं। कित्तूर की स्वतंत्रता का प्रश्न हम कित्तूर की प्रजा के लिए जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही आपके लिए भी है। कित्तूर अंग्रेजों के अधीन रहा तो सारा दक्षिण भारत अंग्रेजों की दासता के बंधन में जकड़ जायगा। स संकट-काल में आप हमारी सहायता करके भारत की कीर्ति को बचाइए।"

"नायकजी, क्या आपके प्रयत्न में सफलता मिलने की संभावना है?"

"सम्पगांव, खानापुर, नन्दगढ़, सोमेश्वरगढ़ और प्रतापगढ़ हमारे हाथों में आ गए हैं। आपकी सहायता मिलते ही हम हलियाल के किले को जीतकर धारवाड़ पर घेरा डाल देंगे।"

सुरपुर के राजासाहब ने तत्क्षण कहा, "नायकजी, आप ठीक कहते हैं। यह युद्ध जैसे आपका है, वैसे ही हमारा भी है। आपकी सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।"

अपने अद्वितीय शूर धनुर्धर, धन तथा तलवार-बंदूक देकर वह बोले, "शिवगुत्ती के राजासाहब से मिलकर उनकी सहायता भी प्राप्त कर लीजिए। मैं भी आपकी तरफ से उनसे प्रार्थना करूंगा।"

रायण्णा अपने यत्न में आशातीत सफलता प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुआ और शिवगुत्ती के राजासाहब से मिलने चल दिया।

शिवगुत्ती में भी रायण्णा का वैसा ही हार्दिक स्वागत हुआ। रायण्णा की बातें सुनकर शिवगुत्ती के राजासाहब बोले, "नायकजी, मैं अपनी सारी सेना और संपत्ति आपके हाथों में सौंपने को तैयार हूं, किन्तु मैं एक परेशानी में पड़ा हुआ हूं। कंकर भरमनायक जंगली सरदार पास के पहाड़

में घुसा हुआ है। वह समय समय पर यहां आकर हमारे राज्य पर टूट पड़ता है और लूटमार करके चला जाता है। हमारी रक्षक सेना यहां से हटते ही भरम फौरन शिवगुत्ती पर टूट पड़ेगा और उसपर कब्जा कर लेगा।"

"यह कंकर भरम रहता कहां है?"

"वह और उसके परिवार के लोग यहां से कोई चार मील पर कुमारगिरि पर रहते हैं।

रायण्णा अपने साथियों में से केवल जयवीर को अपने साथ लेकर घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ कुमारगिरि पहुंचा।

रायण्णा और जयवीर पहाड़ के नीचे एक नीम से अपने घोड़ों को बांधकर पहाड़ पर चढ़ने लगे। बीच के पहाड़ पर उन्हें भरम का एक अनुयायी मिला। उसने उन्हें रोककर पूछा, "तुम कौन हो? यहां क्या काम है?"

"हम भरम से मिलने आए हैं। नायकजी से कहो कि कित्तूर से कोई आये हैं।"

"मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें सरदार के पास ले चलूंगा।"

वह आदमी उन्हें नायक के पास ले गया।

भरमनायक शराब की बोतलों में घिरा बैठा था। वह नशे में था और बीच-बीच में कच्चे मांस के टुकड़े चबाता जाता था। अपनी राक्षसी आंखों से रायण्णा और जयवीर को देखकर गरजकर बोला, "तुम कौन हो?"

"मेरा नाम रायण्णा है, इसका जयवीर। हम कित्तूर में रहते हैं। अंग्रेजों ने कित्तूर को अपने अधीन कर लिया है। हम उनकी गुलामी से कित्तूर को छुड़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम यह प्रार्थना करने आए हैं कि आप और आप के साथी हमारी मदद करें।"

"रायण्णा! जयवीर!—मेरी मदद चाहिए? मैं कभी किसीकी मदद नहीं करता। जाओ, यहां से भाग जाओ।"

"भरमनायकजी, इस समय हमारा देश अग्नि-परीक्षा में से गुजर रहा है। अब हम सबको एक होकर अंग्रेजों को बाहर भगाना चाहिए, नहीं तो

सारा देश अंग्रेजों के पैरों के नीचे कुचल जायगा।"

"भरमनायक कर्कश स्वर से चिल्लाया, "इनको बाहर निकाल दो।"

रायण्णा उद्विग्न होकर बोला, "सरदार, मैंने सुना था कि आप बड़े वीर हो और आपके समान वीर भारत में पैदा नहीं हुआ। पर देखता कि आप वीर नहीं हो, निरपराधियों को लूटकर पेट भरनेवाले डाकू हो।"

भरमनायक क्रोध से आग-बबूला हो गया। अचानक उठकर बोला, "भरमनायक को डाकू कहने वाला कोई जीता नहीं बचा, रायण्णा।"

"रायण्णा ने जो कुछ मांगा, उसे नहीं कहनेवाला भी कभी जीता नहीं बचा, भरमनायक।"

"तू झगड़ा करने आया है ?"

"नहीं नायकजी, मैं झगड़ा करने नहीं आया, पर तुम नहीं मानते हो तो मैं तुम्हारे साथ लड़ने को तैयार हूं। पर एक शर्त है—तुम जीतो तो मुझे मार डालना। मैं जीता तो तुम और तुम्हारे साथी मेरे अधीन होकर मेरे कहे पर चलें।"

"मंजूर।"

रायण्णा की तरफ से जयवीर और भरमनायक की तरफ से जातरनायक जय-पराजय के निर्णायक पंच नियुक्त हुए।

रायण्णा की तलवार भरमनायक की तलवार से टकराई। एक घंटे तक दोनों में भीषण द्वन्द्व हुआ।

पर रायण्णा नहीं हारा; भरमनायक भी नहीं हारा। भरमनायक के दैत्याकार शरीर के सामने रायण्णा वामन के समान मालूम पड़ता था।

युद्ध चलता रहा। अचानक भरमनायक ने अपनी तलवार से रायण्णा की छाती पर प्रहार किया। रायण्णा ने उस चोट से बचने का प्रयत्न किया तो उसके बांये हाथ में जोर का घाव हो गया और उससे रक्त बहने लगा।

जयवीर को लगा कि रायण्णा की जीत होने की संभावना नहीं है। उसने रायण्णा को उत्साहित करते हुए धीरे-से कहा, "रायण्णा, तू मर गया तो रानी चेन्नम्मा जेल में ही सड़ती रहेंगी। कित्तूर अंग्रेजों

की गुलामी में जकड़ा रहेगा।"

इतना सुनना था कि रायण्णा ने जोर से हुंकार की, "रानी चेन्नम्मा की जय! .... जय भवानी ! जय भवानी!" और जयघोष करते हुए भरमनायक के ऊपर वह ऐसा ूटा कि उसको तलवार उठाने का भी मौका न दिया। प्रहार-पर-प्रहार किये। भरमनायक के होश संभालने से पहले ही रायण्णा की तलवार उसकी गरदन के आरपार हो गई।

भरमनायक की देह जड़ से कटे पेड़ की तरह धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ी।

खोने को समय नहीं था। रायण्णा फौरन भरमनायक की पलटन को साथ लेकर शिवगुत्ति और सुरपुर आया और वहां के राजाओं के धनुर्धरों तथा सिपाहियों को भी साथ लेकर सीधा हलियाल पहुंचा।

इतनी बड़ी सेना के साथ उसे आया देखकर नागरकट्टी, चेन्नबसप्पा, गजवीर और बालण्णा बहुत प्रसन्न हुए।

नागरकट्टी धीरे-से आकर रायण्णा की पीठ पर हाथ रखकर बोला, "रायण्णा, तुमको एक बुरा समाचार सुनाना है। तुम अधीर न हो, इसलिए पहले से ही यह खबर दे रहा हूं।"

"रानीजी तो अच्छी तरह हैं?"

"भवानी के अनुग्रह से रानीजी ठीक हैं। पर दीक्षितजी...गुरुजी..."

"उनको क्या हुआ?"

नागरकटी ने दीक्षितजी पर लगाया हुआ आरोप और उनको दिये गए मृत्युदंड का हाल सुना दिया। सुनकर रायण्णा गंभीरता से बोला, "वीरव्वा और छोटे देसाई को कुसुगल भेज दिया?"

"जी हां?"

रायण्णा कुछ सोचकर बोला, "तो अब हमें पहले कुसुगल पर घेरा डाल कर वीरव्वा माता को छुड़ाना चाहिए।"

"रायण्णा, हलियाल पर घेरा डालने के लिए हमारी सारी सेना की आवश्यकता है।"

"गुरुजी हमको छोड़कर चले गए ! पापियों ने तुलजाबाई को भी गोली से उड़ा दिया !"

इतना कहकर रायण्णा बच्चों की तरह बिलखने लगा। बच्चों की तरह सुबकते हुए बोला, "एक दिन हम सब गुरुजी के आंगन में कुश्ती लड़ रहे थे। माता तुलजाबाई भी खड़ी देख रही थीं। गुरुजी मेरी एक पकड़ में आकर गिर पड़े। माताजी की तरफ मुड़कर बोले, 'देखा ?' तुलजाबाई बोलीं, 'अपने बच्चों का खेल देखकर मुझे बड़ा आनन्द हो रहा है।' किसी दिन उनके घर की ओर चक्कर न लगाता तो माता आंसू गिरातीं। मेरी गोद में नारियल-चिउड़ा भरकर कहतीं, 'खूब खाओ और बलवान् बनो। हमारे शूरों को देखते ही शत्रुओं की छाती दहल जानी चाहिए।' हमारी वह माता अब कहां हैं ? हमारे गुरुजी, पिता, देवता समान दीक्षितजी अब कहां हैं !"

"रायण्णा, अब यों दुःखी होने का समय नहीं है। रानीजी तुम्हारी विजय पर भरोसा रखकर कारागार में समय बिता रही हैं।"

रायण्णा ने उत्तेजित होकर कहा, "नागरकट्टी, मैं गुरुजी को गोली से मारने वाले कप्तान हैरिस और चैपलिन को पकड़कर उनकी छाती चीर कर गुरुजी और गुरुपत्नी का बदला लूंगा।"

"कप्तान हैरिस बेचारा सरकार का नौकर है। उसका कुछ भी अपराध नहीं है, रायण्णा ! गुरुजी के गोली खाकर भूमि पर गिर पड़ने पर हैरिस ने तो अपना टोप उतार लिया था, आंसू गिराए थे और पूरे सम्मान के साथ गुरुजी का अंतिम संस्कार कराया था।"

यह सुनकर रायण्णा कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "नागरकट्टी, अंग्रेजों में भी सब बुरे नहीं हैं।"

नागरकट्टी ने उत्तर दिया, "नहीं, भले सब जगह मिलते हैं।"

: १८ :

रायण्णा और उसके साथियों ने हलियाल के किले को जा घेरा। अंग्रेजों और रायण्णा के दलों में जो भयंकर युद्ध हुआ, उसमें अंग्रेजों पर गाज गिरी। हलियाल के चारों ओर पांच मील तक रायण्णा के लोग फैले हुए थे। उन्होंने अंग्रेजों को बाहर से किसी कार की सहायता नहीं पहुंचने दी।

चैपलिन ने यह सोचकर कि हलियाल हाथ में आते ही रायण्णा कुसुगल पर धावा बोलेगा और वीरव्वा तथा छोटे देसाई को छुड़ा लेगा, उनको धारवाड़ भेज दिया।

रायण्णा ने यह निश्चय कर लिया था कि हलियाल के युद्ध में अंग्रेजों का नामोनिशान मिटा देगा।

किले के अन्दर की अंग्रेजी सेना बाहर आने में डरती थी। खाने की चीजें, पीने का पानी और कुछ भी, बाहर से किले के भीतर नहीं जा सकता था। नतीजा यह हुआ कि किले के भीतर के अंग्रेज सिपाही आपस में लड़ने लगे। थोड़े-थोड़े पानी और एक-एक प्याला दूध के लिए आपस में मार-पीट होने लगी। सैनिकों का नैतिक बल कम होता देखकर अंग्रेज सैनिक अफसर डर गए।

हलियाल के किले का पतन निकट ही जान पड़ता था। हलियाल के हाथ आते ही कित्तूर की स्वतं ता निश्चित थी।

किन्तु कित्तूर में विभी णों की अब भी कमी न थी। मल्लप्पाशेट्टी, वेंकटराय, शिवबसप्पा और महान्तव्वा के समाप्त हो जाने पर भी उनकी विषैली जड़ों से समय-समय पर अंकुर निकलते रहते थे।

सम्पगांव के मामलेदार कृष्णाराय के अनुयायी वेंकण्णागौडा, लिंगनगौडा और लक्कप्पा, ये तीनों रायण्णा की सेना में सम्मिलित होकर अवसर की ताक में थे।

हलियाल के घेरे के चौथे दिन जब रायण्णा कुछ दूरी पर एक

तालाब में स्नान कर रहा था, इन तीनों ने उसको धोखे से पकड़ लिया और उसके मुंह में कपड़ा ूंस कर हाथ-पैर बांधकर उसे धारवाड़ भेज दिया। फिर उन्होंने चेन्नबसप्पा से कहा, "रायण्णा येत्तिगुड्डा गया है। उसने कहा है कि तुम मुगुद जाकर उसकी राह देखो। इसी तरह गजवीर हुब्बल्ली जाकर वहां उसकी बाट जोहे। सेना हमारे पीछे-पीछे येत्तिगुड्डा जाय।"

इस प्रकार उन्होंने सेना के तीन भाग कर दिए।

येत्तिगुड्डा, मुगुद और हुब्बल्ली में अंग्रेजी सेना अनुकूल स्थानों पर व्यूह बांधकर रायण्णा की सेना का सामना करने को तैयार खड़ी थी।

तीनों स्थानों में अंधेरे में अंग्रेजी सेना रायण्णा की सेनापर अचानक टूट पड़ी। चन्नबसप्पा, गजवीर और बालण्णा को अब पता चला कि उनके साथ धोखा हुआ, पर अब हो क्या सकता था।

कित्तूर की सेना पराजित हो गई। कित्तूर के वीरों के रक्त से पृथ्वी भीग गई थी।

अंग्रेजों ने गजवीर, नागरकट्टी, चेन्नबसप्पा और बालण्णा को गिरफ्तार करके धारवाड़ भेज दिया।

अगले दिन धारवाड़ के बीच के चौक में पांच फांसी की टिकटियां रक्खी गईं। शाम को पांच बजे कित्तूर-वीरों को टिकटियों के पास लाकर बांध दिया।

महावीर रायण्णा निडर खड़ा था। उसके मुखपर परेशानी का चिह्न भी दिखाई नहीं देता था। उसने चारों ओर सिर घुमाकर देखा। उसके सामने अंग्रेज सिपाहियों के पहरे में वीरव्वा और छोटे देसाई खड़े थे।

रायण्णा ने फांसी के खंभे को धक्का देकर उसे गिराने का प्रयत्न किया। अंग्रेज सिपाहियों ने उसकी गरदन में फांसी का रस्सी डाल दी।

रायण्णा दोनों हाथ उठाकर वीरव्वा और छोटे देसाई को नमस्कार करके बोला, "चेन्नम्मा माता, मैं तुम्हारे दर्शन किये बिना ही जा रहा हूं। मुझे क्षमा करना। द्रोहियों ने धोखा दिया, नहीं तो इस समय कित्तूर की जंजीरें टूट गई होतीं। गुरुदेव, तुलजाबाई, दीवान गुरुसिद्दप्पा, मित्र नागर-

कट्टी, चेन्नबसप्पा, गजवीर, बालण्णा, सबको प्रणाम !"

कुछ रुककर उसने पूरी शक्ति से कहा, "कित्तूर की जय हो ! रानी चेन्नम्मा की जय हो !"

इसके बाद कित्तूर के पांचों वीर फांसी पर लटका दिए गए।

वीरव्वा ने इस भयंकर दृश्य को देखकर अपनी कमर से कटार निकाली और छोटे देसाई की कमर में भोंककर अपनी छाती में भी भोक ली। बोली "गुलामी के बन्धन में जकड़े कित्तूर में जीना ठीक नहीं है।"

: २० :

कप्तान हैरिस ने रानी चेन्नम्मा से कारागार में जाकर सब हाल कह सुनाया। सुनकर रानी अविचलित रही। हैरिस को सिर झुकाये, आंखों में आंसू भरे खड़ा देखकर उन्होंने पूछा, "क्यों कप्तानसाहब, अब और क्या कहना है ? जो कहना हो, कह दीजिए। मेरा दिल तो पत्थर का हो गया है। सबकुछ सुन सकता है।"

"रानी साहब, मैंने नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया है। मैंने चैपलिन साहब को लिख दिया है कि तुरन्त दूसरे आदमी को भेजकर मुझे छुट्टी दे दें।"

"क्यों ?"

"हमारे लोगो ने कित्तूर के सब वीरों को धोखे से गिरफ्तार . . . ."

"आगे कहो। रुक क्यों गए ?"

"फाँसी दे दी।"

"फांसी दे दी ? रायण्णा . . . . . "

"हां, रायण्णा और उसके साथियों को धारवाड़ में फांसी दे दी। वीर रानी उस दृश्य को नही देख सकीं। उन्होंने छोटे देसाई के छुरी भोंककर स्वयं आत्महत्या करली।"

रानी चेन्नम्मा, जो अबतक अविचल बनी हुई थीं, भूमि पर गिर पड़ीं। उनकी चेतना लुप्त हो गई।

हैरिस ने फौरन किले के डाक्टर को बुलवाया। डाक्टर ने रानी को देखकर कहा, "इनके जीने की आशा नही है।"

रानी चेन्नम्मा ने थोड़ी देर बाद आंखें खोलीं। बोलीं, "सब चले गए। मैं अकेली जी रही हूं। रायण्णा--रायण्णा ! . . . . . मेरा दीपक ! वह भी बुझ गया। सब चले गए। हां, सब चले गए ! . . . . . कित्तूर को प्राणों से अधिक प्यार करनेवाले सब गुलामी को लात मारकर चले गए। चेन्नम्मा अब किस सौभाग्य के लिए जी रही है ? . . . . . कित्तूर के लिए ! भारतवर्ष

के लिए ! ..... आज चेन्नम्मा अपने जीवन का भरतवाक्य[1] पढ़ रही है उससे कल की ध्रुपद शुरू होगी। एक रायण्णा के स्थान में सैकड़ों रायण्णा पैदा होंगे। ..... एक चेन्नम्मा की जगह सैकड़ों चेन्नम्मा पैदा होंगी। कित्तूर ब त काल तक गुलामी में जकड़ा नही रह सकता। यह लड़ाई निरन्तर चलती रहेगी। जबतक भारत आजाद नहीं होगा, दुनिया को शांति नहीं मिलेगी। कित्तूर की—भारत की—जंजीरों को तोड़ने के लिए चेन्नम्मा आज यह देह छोड़कर फिर जन्म लेगी। कित्तूर की जय हो ! कित्तूर के वीर अमर हों !"

कहते-कहते चेन्नम्मा की सांस मंद पड़ गई। उसकी आंखें बंद हो गई। कित्तूर की स्वतंत्रता-देवी बैलहोंगल के कारागार में सदा के लिए सो गई।

उस दिन शनिवार ।।

सोमवार को उनके शरीर को कल्मठ में समाधिस्थ कर दिया।

कप्तान हैरिस ने रानी चेन्नम्मा के ५१ वर्ष के जीवन के सम्मानार्थ ५१ तोपें छुड़वाई।

उसके अगले दिन हैरिस ने धारवाड़ जाकर कमिश्नर को अपना त्याग-पत्र दे दिया और इंग्लैंड चला गया।

---

१ नाटक के अन्तिम श्लोक को 'भरतवाक्य' कहते हैं।

: २१ :

कित्तूर की राज्यलक्ष्मी की मत्यु-शैया पर की गई भविष्यवाणी झूठ नहीं निकली।

सन् १८५७ में रानी चेन्नम्मा ने झांसी में वीर रानी लक्ष्मीबाई के रूप में देशको स्वतंत्र करने के लिए युद्ध किया; लेकिन गुलामी की बेड़ियां नहीं कट सकीं।

फिर आया उन्नीसवीं शताब्दी की दूसरी दशाब्दी में गांधी-युग। गांधीजी ने राष्ट्रके हृदय में अभूतपूर्व प्रेम भर दिया। सोता देश जाग उठा। अनेक उथल-पुथल हुए। अंत में सन् १९४२ में एक स्वर से सार्वभौम ब्रिटिश सरकार को 'भारत छोड़ो' कहकर देश ने ललकारा। एक सौ अ ारह वर्ष पहले कित्तूर जैसे छोटे राज्यमें उत्पन्न हुई चिनगारी १९४२ में सारे भारत में व्याप्त हो गई। उसने बल ज्वाला का रूप धारण कर लिया और सन् १९४७ के अगस्त की १५वीं तारीख के शुभ दिन भारत ने अंग्रेजों की दासता से मुक्ति प्राप्त की।

लालकिले पर भारत का तिरंगा झंडा फहराने लगा और उसपर स्वर्ग में से मानो चेन्नम्मा, दीक्षितजी, गुरुसिद्दप्पा और रायण्णा ने पुष्पवर्षा की।